Chapter-4

—'चतुर्थ परिच्छेद'—

—आध्यात्म पक्ष—

अ::— सुरत—शब्द योग::—

संतों ने शब्द में आत्मा को लीन करके परमात्मा से मिलाप करने की साधना को सुरत —शब्द योग कहा है :

सुरति मिलै शब्द में जाई,
ये सब संतन पंथ काई ।। 1—

तुलसी साहिब का कथन है कि बाहरी नेत्रों से उत्पन्न हुई चर्म—दृष्टि को हर और अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है । जब तक सुरत अंदर शब्द से नहीं जुड़ जाती है , इसको आंतरिक प्रकाश का अनुभव नहीं होता और न ही इसका कार्य पूर्ण होता है ।

सुरति सब्द के भेद बिन, होय न पूरन काम।
चरम चाम की दृष्टि में , तन तत तिमिर समान।। 2

कबीर साहिब के अनुसार करोड़ों ग्रंथो व शास्त्रों का सार इस एक कथन में आ जाता है कि जगत नाशवान है , नाम अविनाशी है तथा सुरत को अंतर शब्द के साथ जुड़ कर अपनी पहिचान द्वारा परमात्मा की पहचान करनी चाहिये । इसलिये वे कहते हैं :

नाम रटत इस्थिर भया , ज्ञान कथन भया लीन।
सुरत सबद एकै भया, जल ही ह्वेगया मीन।। 3—

1:— घट रा. , तु. सा., भाग 2, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

2:—रत्नसागर, पृ. 72, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

3:— कबीर साखी संग्रह, भाग—1, पृ. 92

दादू– शब्द सुई सुरति धागा, काया काया कन्था लाई ।
दादू जोगी जुग जुग पहरैं , कबहूँ फाटि न जाई ।। 1

*   *   *

अखा– सुरत्य मेलावत सांईसु, निरत भया निरधार।
पण अंग मेलावा जे अखा , सो गुणन का व्यापार।। 2

*   *   *

आदि ग्रंथ में आता है कि गुरु नानक साहिब नाम निरंजन का रुप से परे थे , जिन्होंने स्वयं प्रेम पूर्वक नाम की साधना की और सुरत शब्द की कमाई की युक्ति गुरु अंगद साहिब को सिखाई । उन्होंने गुरु–घर में परम पद को पाया और सुरत–शब्द की सच्ची विधि प्रचलित की :

नानकि नामु निरंजनु जानउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई।
ताते अंगहु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई। 3

*   *   *

स्वामी जी महाराज भी सावधान करते है :

सुर्त शब्द कमाई करना। सब जतन दूर अब धरना।
निश्चय दृढ़ इस पर धरना। आलस कर कभी न फिरना ।
यह सार सार सब गया। संतन मत भाख सुनाया।। 4

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, 14–भेष को अंग, साखी–46, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, पृ. 148, संस्करण , सन् 1984 ई.

2:– अक्षयरस साखियाँ, 7– प्रत्यक्ष अंग, साखी–8, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. , बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, संस्करण 1963 ई.

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 1406

4:– सार वचन, 20 : 10, पृ. 161

विद्वानों में सुरत शब्द योग के संबंध में पर्याप्त मत भेद है ।

डॉ. वडथ्वाल के अनुसार "वह योग जिसके द्वारा सुरति एवं शब्द का संयोग सिद्ध होता है और उक्त सीमायें शब्द में लीन हो जाती है , शब्द –योग अथवा सुरत–शब्द योग कहा जाता है । 1–

आचार्य क्षिति मोहन सेन के अनुसार 'सुरति' यानि की प्रेम । 2–

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार 'सुरति 'मूल रुप में स्मरण या स्मृति ही है पर यह स्मृति अन्तरतम में बैठे हुये किसी परम् प्रियतम की है । 3–

डॉ. पारसनाथ तिवारी के अनुसार 'सुरति' वस्तुतः चेतन आत्मा के ज्ञान की धारा है , सुरति का 'अधोमुखी' होना उसका पतन है और उर्ध्वमुखी होना ही उसका उत्थान है । सुरति का उत्थान शब्द डोर के ही आश्रय से हो सकता है । 4–

डॉ. रामनाथ धुरेलाल शर्मा ने 'सुरति' का अर्थ असाधारण दृष्टि से किया है । 5–

श्री शिवशंकर शर्मा ने 'कबीर गंथावली' पृ. 102 के 42 वे पद के आधार पर सुरति का यह अर्थ सिद्ध किया है –सुरति इतनी विलक्षण है कि इनकी

1:– हिन्दी कविता में निर्गुण संप्रदाय, परिशिष्ट–3, पृ. 418

2:– विद्यापीठ, त्रैमासिक पत्रिका, भाग–2, पृ. 135

3:– हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ. 52–93, राज कमल प्रकाशन, पटना

4:– कबीर वाणी, राका प्रकाशन , इलाहाबाद, संस्करण सन् 1991, पृ. 92

5:– श्रेयसाधक : कबीर, पृ. 367, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सं. 1991 ई.

तुलना न आत्मा से की जा सकती है ,न प्राण मन, बुद्धि, चित्त, आदि किसी अन्य तत्व से ही । 1

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के मतानुसार 'सुरत' शब्द योग साधना में अपनी 'सुरति' को अपने भीतर निरंतर उठते रहने'अनाहत नाद' के साथ सदगुरु की बतलाई युक्ति के द्वारा जोड़ना पड़ता है । वह अनाहत नाम ही वस्तुतः भगवन्नाम है और अपने मन का ही एक सूक्ष्म रुप वह सुरति भी है जिसे उसके साथ जोड़ना आवश्यक होता है । 2–

सुरत शब्द से तात्पर्य –

संतो ने 'सुरत' का अर्थ आत्मा से लिया है । यानि की सब जीव सुरत ही है । पंजाबी में सुरत'होश' को कहते है । 'होश ' चेतन पुरुष जीव या आत्मा को होता है । इस प्रकार 'सुरत' रुह या आत्मा का नाम पड़ गया है ।

कबीर जी के निम्न पद में सुरति' का तात्पर्य जीव से ही है :

मानुष जन्म अमोल , सुकृत कौ धाइये ।
सुरति कुँवारी कन्या, हंसा सँग ब्याहिये ।। 3–

1:– कबीर, सं. विजयेन्द्र स्नातक, श्री शिवशंकर शर्मा का लेख, ' कबीर और योगमाया' , पृ. 197, राम कृष्ण प्रकाशन, पॉचवीं आवृत्ति, 1990 ई.

2:–वही, परशुराम चतुर्वेदी का लेख, कबीर साहब, सिद्धांत और साधना, पृ. 113

3:– कबीर साहब की शब्दावली , भाग 4, राग मंगल, शब्द–7, पद–1, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सं. सन् 1990 ई.

अधर भूमि जहँ महल पिया का, हम पै चढ़ो न जाय।
धन भइ बारी पुरुष भये भोला, सुरत झकोला खाय।। 1—

*　　　*　　　*

दादू दयाल जी का भी कथन है :

जहाँ सुरति तहँ जीव है , जहँ नाहीं तहँ नाहिं।
गुण निर्गुण जहँ राखिये, दादू घर बन माहि।।2—

*　　　*　　　*

जहाँ सुरति तहाँ जीव है , जहँ जाणै तहँ जाइ।
गम्म अगम जैह राखिये, दादू तहाँ समाइ।। 3

*　　　*　　　*

अखा जी के निम्न पद में सुरति का तत्पर्य जीव ही है :

अदबद की अगाधता रसना कही न जाय।
सुरत अखा तामे समे ,तो रसना केसे गाय।। 4—

1:— कबीर साहब की शब्दावली, भाग—1 विरह और प्रेम, शब्द—13,पद—3 वही प्रकाशन,सन् 741 ई.

2:— दादू दयाल की बानी , भाग—1, मन—109, वही सं. सन् 1963—74

3:— वही, साखी—112

4:— अक्षयरस, साखियाँ , 5—अनबद अंग, साखी—12, सं. कुँवर चँद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. , बडौदा द्वारा प्रकाशित , सन् 1963 ई.

—::शब्द से तात्पर्य::—

'शब्द' सुरत का स्रोत है । संस्कृत में शब्द एक धातु है । अन्य अक्षरों (पदों) की भाँति इसकी व्युत्पत्ति (मूल रुप) मालूम नहीं होता । इसके अर्थ है —आवाज़, अक्षर, कलाम, वचन, इस्म, सराहत्त, तकरीर, इत्यादि । जो बोला जाय ,सुनने में आए , जिससे सब चीजों की असलियत प्रकट होती हों जो किसी गुप्त भेद को प्रकट करने का सामर्थ्य रखता हो, वह शब्द है ।

लेकिन वेद, उपनिषद , गीता, संतों की बानियों एवं दूसरे धर्मग्रंथ —कुरान , बाइबिल आदि में शब्द के अर्थ बड़े गूढ़ और गहरे है । उनके अनुसार शब्द परमात्मा की चेतन ध्वनि —मय धारा है ,जो परमात्मा का ही रुप है और जो सम्पूर्ण सृष्टि को बनाकर चला रही है ।

वेद में 'वाक्' या —वाच्' को नाम या शब्द के समानार्थक रुप में प्रयोग किया है । ऋगवेद 1— में इसको लोक व परलोक का कर्ता तथा जल, थल, व आकाश और इसके जीव —जन्तुओं में व्याप्त माना गया है । ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र में वेद —वाणी या वर्णात्मक नाम और रुहानी मंडल में स्थित , सच्चे नाम का स्पष्ट वर्णन करते हुए ऋषि कहता है , 'शब्द का वह परम आकाश,जिसमें सारे देवता टिके हुए हैं , वेद — वाणी (ऋचाओं) का आधार है। जो इसको नहीं जानता , वह इस वेद —वाणी में से भी क्या प्राप्त करेगा? जो उसको जानते हैं , वे ही वहाँ शान्ति में विश्राम करते हैं :

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् ,
यस्मिन देवाः अधि विश्वे निषेदुः ।
यस्तन्नवेद किम् ऋचा करिष्यति,
ये इत् तद् विदुस्त इमे समास्ते । 2—

1:— ऋग्वेद, 10—125:7

2:— वही, 1.164 : 39

अन्य स्थान पर ऋग्वेद में कहा गया है कि जिस व्यक्ति को 'वाक' (शब्द या नाम) प्यार करता है , वह उसको अत्यन्त शक्तिवान , महात्मा ,ऋषि और ब्रह्मज्ञानी बना देता है । 1–

इसी वेद के अनुसार वाक् (शब्द) ऋषियों के हृदय में प्रकट होता है , जहाँ से जिज्ञासुओं को उसका ज्ञान प्राप्त हो सकता है । 2– यहाँ स्पष्टतः आत्म –ज्ञान के लिये शब्द स्वरुपी , शब्द अभ्यासी महात्मा की आवश्यकता की और संकेत किया गया है । ऋग्वेद में केवल वाक् (शब्द) के अनुभव की प्राप्ति को ही आत्मा का सच्चा लक्ष्य माना गया है । 3– इसमें कहा गया है कि वाक् (शब्द) ही सबसे पहला और सबसे उत्तम इष्ट –देव 4– है अर्थात केवल नाम या शब्द की पूजा और भक्ति का पात्र है ।

'नाद्–बिंदु उपनिषद' में कहा गया है कि आत्मा और ब्रह्म की एकता होने के पर कल्याणकारी ,ज्योति–स्वरुप परमात्मा का नाद रुप में साक्षात्कार होता है । 5–

शतपथ ब्राह्मण में वाक् के द्वारा ही ब्रह्म का साक्षात्कार होना कहा है , वाक् अमृत है : अजन्मा है । 6 –

अथर्ववेद में भी शब्द की अनुपम महिमा है । 7–

1:– वही, 10, 125 : 5

2:– ऋग्वेद, 10, 71:3

3:– वही, 10, 114:9

4:– वही, 10, 125:3

5:– नादबिंदु उपनिषद, श्लोक 30

6:– शतपथ ब्रह्माण्ड, अ. 75–2–21

7:– अथर्ववेद, सूक्त–30

छन्दोग्य उपनिषद में ब्रह्मरुपी सूर्य से नाद के प्रकट होने का जिक्र है और यह कहा गया है कि यह भेद अंगिरस ऋषि ने देवकी के पुत्र कृष्ण जी को बतलाया था । 1–

गीता में कृष्ण ने यही उपदेश दिया है –

पूर्वाभ्यासेन तेनैव हृियतेह्मवशोऽपिसः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।। 2–

*　　　*　　　*

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोवाद्भवकारो विसर्गः कर्म संक्षितः।। 3–

*　　　*　　　*

नादबिंदु उपनिषद में लिखा है :

सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां संधाय वैष्णवीम्।
श्रुणुयाद्दक्षिणे कर्णे नादमन्तर्गतं सदा।। 4–

*　　　*　　　*

अर्थात सिद्धासन में स्थिर होकर योगी वैष्णवी मुद्रा धारण करे और अपने अंदर दाहिनी ओर के नाद आवाज को सुने।
इसी उपनिषद के तीसवें श्लोक में कहा गया है कि आत्मा और ब्रह्म की एकता होने पर कल्याणकारी , ज्योति–स्वरुप, परमात्मा का नाद रुप में साक्षात्कार होता है । 5–

1:– तीसरे प्रपाठक, 17वें (छठा श्लोक) और 19वीं (तीसरा श्लोक)

2:– गीता, अध्याय–6, श्लोक 44

3:– गीता अध्याय 8, श्लोक–3

4:– श्लोक–31,

5:– श्लोक–30

हठयोग प्रदीपिका के श्लोकों में अनेक प्रकार से शब्द की महिमा गाई है। 1– योग चूड़ामणि उपनिषद , में प्रणव या ओंकार की ध्वनि को घण्टे की दीर्ध आवाज़ जैसी और तेल की धार की भाँति निरंतर और एक–रस कहा गया है। 2–

यूनान में प्राचीन काल से ही लोगास और नाऊस अर्थात शब्द या नाम का सिद्धांत प्रचलित है । लोगास सिद्धांत का मूल हजरत ईसा से पाँच सौ वर्ष पूर्व हुए महात्मा हेराकलीटस से माना जाता है और नाऊस सिद्धांत का आरम्भ हज़रन ईसा से चार सौ वर्ष पहले हुए महात्मा अनैक्सागोरस से जोड़ा जाता है।

हेराकलीटस के अनुसार लोगास (शब्द) एक है ,सर्वव्यापक है , अटल व अविनाशी है और सदा एक रस रहने वाला है । लोगास अपनी समूह शक्तियों सहित प्रत्येक जीव के अंदर विराजमान है प्रत्येक जीव अन्दर से ही इसको प्राप्त कर सकता है और प्रत्येक जीव बिना किसी मतभेद के इसको अंतर में प्राप्त करने का अधिकारी है । महात्मा हेराकलीटस अपनी पुस्तक के प्रारंभ में खेद प्रकट करते हुये कहते है :

"दुःख की बात है कि लोगास सब का कर्ता है , जिसके हुक्म से सारी सृष्टि चल रही है , जो मनुष्य के निकट से निकट है , किन्तु अज्ञानी जीव उसको अपने अंदर पकड़ने का प्रयत्न नही करता।" 3

हेराकलीटस के अनुसार लोगास सबसे बड़ा है और जितना बड़ा वह चाहे बन सकता है । 4–

1:– देखें श्लोक, 80,81,83, 84, 90, 91, 92, 94 से 98, 102, 105,

2:– श्लोक 80,6.1

3:– The cosmic Fragments, edt. G.S. Kirk, Cambridge, 1954, page 33

4:– Ibid

गुरु नानक साहिब ने फरमाया है :

'जे बड भावे तेवड होइ।' 1–

*   *   *

पारसी महात्माओं ने परमात्मा के नाम या शब्द (The Holy word) को मंथर कहा है , जो मंत्र का बिगड़ा हुआ रुप है । पारसी ग्रंथ 'यासना' में आता है "मंथर (शब्द) नाशवान मनुष्यों को सुनने के लिये सबसे महान है । जो लोग इसको आदर और मान देंगे , वे पूर्णता और अवनिाशी पद की ओर आगे बढ़ेंगे और अन्त में अहुरमज़द (परमात्मा) को जा मिलेंगे। 2–

चीन की धर्म पुस्तको में शब्द को 'टाओ' कहकर वर्णन किया गया है । 'टाओ' कहने व सुनने से न्यारा है और सब गातियों का आधार व सब तत्वों का सृजनहार है । 3– टाओ सृष्टि की रचना से पहले भी था और इसमें सृष्टि की रचना करने की पूर्ण सामर्थ्य थी । 4– ईसाई लोग इसे वर्ड या कलाम कहते है " आदि में शब्द था, शब्द परमात्मा के साथ था और शब्द परमात्मा था । शुरु में यह परमात्मा के साथ था । इसी शब्द से सब चीजें प्रकट हुई और इसके बगैर कोई ऐसी चीज नहीं जो बनी। " 5:–

हज़रत मुहम्मद साहिब के बारे में जिक्र आया है कि वे पंद्रह साल तक आवाज़े मुस्तकीम या अनहद शब्द को सुनते रहते थे :

1:– आदि ग्रंथ, पृ.4

2:– यासना 45:5; D.F.A Bode & Piloo Nanavathy, Zoroustrianism, London, 1952, P. 81

3:– Ernest wood, zen Dictionary, New Yark, 1951, P. 108

4:– Lin Yutang, wisdome of laotse, P. 143

5:– सेंट जॉन, 1:1, 2,3

"चूँ आँ हज़रत (मुहम्मद साहिब) ब सन्ने चहल सालगी रसीद। आसारे वही बरवे ज़ाहर गाश्त। बरवायते आँ कि पांज़दह साल पेश अज़ वही आवाजे–मुस्तकीम में शुनीद। व ख्वाबहाए रास्त मंदीद। व हफ़्त साल पेश अज़ वही अनवारे तजल्लियात मेदीद। व दो साल यक मर्तबा बग़ारे हरा मरीफत व यक माह इबादत मशगूल मीशूद।। 1

कुरान शरीफ़ में आया है कि खुदा ने कहा 'कुन फियुकुन' 2– अर्थात उससे आवाज़ प्रकट हुई और सारा आलम पैदा हो गया।

गोरख नाथ शब्द को इस ब्रह्मसृष्टि का मूल–मंत्र मानते है –

"सबदहिं ताला, सबदहिं कूँजी, सबदहिं सबद जगाया।
सबदहिं सबद सूँ परचा भया, सबदहिं सब समाया।। 3–

* * *

साई बुल्ले शाह कहते हैं कि वह मन मोहन प्रियतम आन्तरिक रुहानी मण्डलों में अद्‌भुद बाँसूरी बजा रहा है । इस बाँसूरी की धुन सारी सृष्टि का आधार है । जो इसके पीछे चलता है , वह भी उस मुकाम पर पहुँच जाता है जहाँ से बाँसूरी की धुन आ रही है –

बंसी अचरज कान्ह बजाई ।
इस बंसी दा लंमा लेखा , जिसने ढूंडा तिसने देखा ।
सादी इस बंसी दी रेखा, एस वजूदों सिफ़त उठाई ।। 4–

1:– सफा 36, इक्तबास–उल–अनवार, ले. हज़रत मौलाना शेख़ मुहम्मद अक्रम साबरी

2:– कुरान शरीफ़, 3/47

3:– गोरख वाणी, पृ.9

4:– सॉई बुल्लेशाह, पृ. 102

भक्त रामानन्द जी कहते है कि सतगुरु के शब्द या नाम में करोड़ों जन्मों के कर्मो को काटने की शक्ति है :

'गुर का सबहु काटै कोटि करम' 1–

वे यहाँ तक कहते हैं कि जो लेग हृदय में शब्द या नाम को धारण करते है , उनकी कर्मो से बनी काल और धर्मराय का फॉसी सदा के लिये कट जाती है :

सतिगुरु सेवि तुटै जमकालु। हिरदै साचा सबदु सम्हालु।। 2

कबीर साहेब , दरिया साहिब , दादू साहिब ,अखा जी, सिक्खों की दसों पादशाहियों , पलटु साहिब , स्वामी जी महाराज आदि अनेक संत 'शब्द की शिक्षा देते रहे हैं । उन्होंने स्पष्ट रुप से कहा हैं कि सम्पूर्ण रचना शब्द से ही चल रही है और वह सारी सृष्टि का कर्ता है , धरती और आकाश सब उस शब्द से बने है , जो घट–घट के अंदर है तथा संपूर्ण जगत को लेकर खड़ा है । केवल उत्पत्ति ही नहीं बल्कि प्रलय भी उसी से होती है , तथा पुनः सृष्टि का निर्माण भी उसी से होता है :

उतपति परलउ सबदे होवें।।
सबदे ही फिरि ओपति होवे।। 3–

कबीर साहिब का कथन है :

साधौ शब्द साधना कीजै।
जें ही शब्द ते प्रकट भये सब, सोई शब्द गहिं लीजै ।।
शब्द गुरु शब्द सुन सिख भये ,शब्द सो बिरला बूझै।।

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 1195

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 1276

3:– आदि ग्रंथ, माझ, महल्ला–3, पृ. 117

शब्द वेद पुरान कहत है , शब्दै सब ठहरावै ।
शब्दै सुर मुनि संत कहत है , शब्दै कहै वैरागी ।
शब्दै काया जग उतपानी, शब्द केरि पसारा ।। 1—

*　　　　*　　　　*

सब्द हि ते भयो सुनत अकारा ।
सब्द ते लोक दीप विस्तारा ।। 2—

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि एक ही सार वस्तु नाम है । शेष हर प्रकार का ज्ञान झूठा है , परंतु नाम का ज्ञान हर प्रकार के भ्रमों को नाश कर देता है ।

सार सबद इक साच है , और झूठ सब ज्ञान ।। 3—

संत दादू दयाल जी भी कहते हैं :

दादू सबदै बंध्या सब रहै, सबदै सबही जाइ ।
सबदैं ही सब ऊपजै , सबदै सबै समाइ ।। 4—

गुरु नानक देव जी यही फ़रमाते हैं —

सबदे धरती सबदे आकाश । सबदे सबद भया परगास ।।
सगली सृसटि सबद के पीछे । नानक सबद घटे घट आछे ।। 5

1:— ह. प्र. द्विवेदी, कबीर वाणी, पद—157, पृ. 225, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पटना, सन् 1985

2:— अनुराग सागर, पृ. 10

3:— साखी संग्रह, पृ. 95

4:— दादू दयाल की बानी , भाग—1, मन—24, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963—74

5:— आदि ग्रंथ, प्राण संगली, 19

दरिया साहिब भी इसी की पुष्टि करते हुये कहते हैं :

सब्दें धरती सब्द अकासा। सब्दे भगति प्रेम परकासा ।।
सब्दे रचा सकल संसारा। सब्दे बंधन लोक विस्तारा।। 1–

अखा जी भी दूसरे शब्दों में यह फ़रमाते हैं :–

शब्द पहोंचावे वस्त कूं और शब्द तें पाहिये जाल।
शब्द घर निःशब्द में , अखा सो धाम विशाल।।
आपे साहब आप में आधा रच्या संसार।
मन मानें खेले अखा, तांहां कोन शिखावनहार।।2–

धर्म और सदाचार के विश्व कोश ' में विचार प्रकट किया गया है कि संत चरन दास जी ने शब्द को अनंत ,अथाह, और कर्ता पुरुष कहा है । जो कुछ किया है शब्द ने किया है और जो कुछ कर रहा है शब्द कर रहा है । शब्द ही कर्ता शब्द ही मुक्ति दाता है । सतगुरु में भी शब्द ही कार्यशील है । सतगुरु शब्द का बाण है , शब्द की तलवार है । दूसरे शब्दों में शब्द गुरु है और गुरु शब्द है । शब्द पारब्रह्म परमेश्वर है , इसलिये कोई शब्द का ध्यान करता है , शब्द परमात्मा का रुप हो जाता है । इस विश्वकोश में संत चरन दास जी के विचारों की समानता एक और कबीर साहिब और दूसरी ओर बाइबिल के विचारों से दिखाई गई है। 3–

उर्पयुक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि सभी धर्मों में शब्द को संसार का कर्ता, धर्ता, और हरता माना गया है । सभी संत महात्माओं ने माना है कि

1:– दरिया सागर, चौपाई, 935–936

2:– अक्षयरस, साखियाँ, 89–अथ माया को अंग, साखी–45 सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, 1963 ई.

3:– इन्साक्लोपीड़िया ऑफ रिलीजन एण्ड इथिक्स, भाग–3, पृ. 367

सृष्टि की रचना शब्द या नाम के द्वारा हुई है और सृष्टि शब्द या नाम के सहारे चल रही है ।

शब्द महाचेतन और अपार है । बाहर के कानों द्वारा नहीं सुना सकता, न जबान द्वारा बोला जा सकता है और नही लिखने में आ सकता है । केवल सुरत (आत्मा) इसका अनुभव कर सकती है ।

कबीर जी एक पद में इस अवस्था का वर्णन करते है :

बिन मुख स्वाद चरन बिन चालै, बिन जिभ्या गुण गावै।
आछे रहै ठौर नहीं छोडै, दह दिसि ही फिरि आवै ।।
बिन ही तालां ताल बजावै, बिन मंदल पर ताला।
बिन ही सबद अनाहद बाजै , तहां निरतत है गोपाला।। 1–

यही भाव गुरु अंगद देव जी, संत दादू दयाल , तुलसीदास, एवं मौलाना रुम प्रकट करते है :

अखी बाझहु वेखणा, विणु कंना सुनणां।।
पैरा बाझहु बोलणा, बिणु हथा करणां।।
जीभै बाझहु बोलणा, इउ जीवतु मरणा।।
नानक हुकुम पछाणि कै तउ खसमै मिलणा।। 2–

* * *

बिन स्रवनों सब कुछ सुनैं , बिन नैनों सब देखै।
बिन रसना मुख सब कुछ बोलै , यहु दादू अचिरज पेखे। 3–

1:– कबीर ग्रंथावली, पद 159, पृ. 140, सं. बाबू श्यामसुंदर दास

2:– आदि ग्रंथ, महल्ला–2, पृ. 139

3:– दादू वाणी, ' मंगल दास' , परचे को अंग–4, 29, पृ. 125

आदि अंत कोउ जासु पावा, मति अनुमान निगम अस गावा।।
बिन पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर विनु करम करइ विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ै जोगी।।
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु असेषा।।
असि सब भाँति अलौकिक करती। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी।। 1

अखा जी का भी कथन है :

बीन नेनुका देखना बीन श्रवनु की धुन्य।
बीन रसना का बोलना एकु नहीं अखा चेहेन।।2—

शब्द परमात्मा की चेतन ध्वनि धारा है ,जो उसका रुप है और जो संपूर्ण सृष्टि को बनाकर चला रही है । शब्द संपूर्ण सृष्टि का बीज है । जो कुछ बीज के अंदर है वही उससे उत्पन्न हुए वृक्ष के फैलाव में भी है , जो कुछ भी है वह शाखा के अंदर है , जो कुछ भी काल (समय) या देश के अंदर प्रकट होता है या उसमें समाता है , उस सबका अस्तित्व शब्द के अंदर ही है ।

कार्य कारण का रुप है । शब्द सबका कारण है , संपूर्ण रचना उसका कार्य है । जो कुछ कारण में न हो वह कार्य में नहीं हो सकता । सूर्य की किरण सूर्य से निकलती है , वह उससे भिन्न नहीं । कारण सदैव कार्य के अंदर रहता है , इसी प्रकार परमात्मा के गुण इस आत्मा से अलग नहीं होते ।

धर्मो—ग्रंथों एवं सब संत —महात्माओं के मनुष्य के अंतर में सुनाई देने वाले इसी शब्द को मुक्ति का साधन माना है ।

1:— गोस्वामी तुलसीदास, मानस, 1.117, 2—4

2:— अक्षयरस, साखियाँ, पित्रेक वेत्ता अंग—13, साखी—8, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

संत कबीर जी बताते हैं कि यह शब्द उस ओर से आ रहा है जिस ओर आत्मा को जाना है । इसके बगैर सुरत अंधेरे में भटकती रहती है ।

शबद बिना सुरत आंधरी कहो कहाँ को जाइ ।।
दुआर न पाए शबद का , फिर फिर भटका खाइ ।। 1–

*   *   *

यो जिव सतगुरु साब्द बिबेकै, तौ मन होवै चेरा।
जुक्ति जतन से मन को जीतै, जियते करै निबेरा।। 2–

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि शब्द के बिना सारा जगत बावरा हो रहा है और मनुष्य –जन्म निष्फल जा रहा है । केवल शब्द ही अमृत है जो गुरु से प्राप्त होता है :

बिन सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइया।।
अमृतु एको सबहु है नानक गुरु मुखि पाइया।। 3–

*   *   *

दादू सबद बिचारि करि ,लागि रहै मन लाइ।
ज्ञान गहै गुरुदेव का ,दादू सहजि समाइ।। 4–

1:– कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पद 57, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना

2:– कबीर साहिब की शब्दावली, भाग 4, ककहरा, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1990 ई.

3:– आदि ग्रंथ, सोरठी, वार, महल्ला–3, पृ. 644

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव को अंग, अनाहत शब्द–23, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

अखा जी भी इसी बात की पुष्टि करते है :–

अखा शब्द कूं खेज ले शब्द ब्रह्म शब्द गाल।
जा धरतें ए उपजे ताकि करो संभाल।। 1–

*   *   *

शब्द का वास हमारे शरीर के अंदर है , वह अलख है , और सर्वत्र व्याप्त भी है लेकिन इसकी प्राप्ति हमें इस काया के अंदर होती है । यह शरीर शब्द को सुनने के लिये रेडियो की भॉंति है । रेडियो सेट को जब जोड़ते है तो उसमें आवाज सुनाई देने लग जाती है । इसी प्रकार जब सदगुरु हमको जब अंर्तमुख जोड़ देते है तो हम उस शब्द को सुनने के लिये तैयार हो जाते हैं । फिर इस सेट को नियम पुर्वक रखकर हम शब्द की अनेक धुनें सुन सकते हैं :

काइया नगरी सबदे खोजे नामु नवनिधि पाई।। 2–

जिस भॉंति नेत्रों में पुतली का बास है उसी प्रकार परमात्मा उस घट में निवास करता है :

ज्यूं नैनूं मैं पूतली, त्यूं खालिक घट मांहिं।
मूरखि लोग न जांणही, बाहरि ढूंढ़ण जांहिं ।। 3–

*   *   *

तेरा साहेब है घट माहीं , बाहर नैना क्यों खोले।
कहैं कबीर सुनौ भाई साधो, साहेब मिले तिल ओले।। 4–

1:– अक्षयरस, साखियॉं, 89–अथ माया को अंग, साखी–3, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

2:– आदि ग्रंथ, महल्ला–3, पृ. 910

3:– क. ग्रं.कस्तूरिया मृग को अंग, साखी 9, सं. श्यामसुंदर दास

4:– कबीर साहब की शब्दावली, भाग–1, विरह और प्रेम, शब्द–2, पृ. 7, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

कबीर कहै घट को जो मथै, तब पावै शब्द प्रकास है जी । 1—

इस विषय में दादू दयाल भी कहते हैं :

दादू जीव न जाणै राम कौं, राम जीव के पास ।
गुर के सबदौं बाहिरा, ताथैं फिरै उदास।। 2—

*   *   *

(दादू) जा कारणि जग ढूँढ़िया सो तो घट ही माहिं ।
मैं तैं पड़दा भरम का , ता थै जाणत नांही।। 3—

*   *   *

सब घट में गोविंद है , संगि रहै हरि पास।
कस्तूरी मृग में बसै, सूँघत डोलै घास।। 4—

इसी तरह गुरु अमर दास जी महाराज भी परमात्मा को हमारे शरीर में निवास करने वाला और हमारा प्रतिपालन करने वाला कहते है :

काइआ अंदरि जग जीवन दाता वसै सभना करै प्रतिपाला।। 5—

संत बेनी साहब कहते हैं कि मस्तक में अनेक मणियों से सुशोभित कमल है जिसके अंदर तीनों भवनों का स्वामी है । यहाँ निर्मल शब्द हो रहा है :

1:— ज्ञान गुदड़ी, झूलना—8

2:— दादू दयाल, कस्तूरिया मृग को अंग, साखी—3, सं. परशुराम चतुर्वेदी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित, संवत 2023 वि.

3:— दादू दयाल की बानी, भा—1, कस्तूरिया मृग को अंग, साखी—5, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित,

4:— वही, साखी—3   5:— आदि ग्रंथ, पृ. 754

मसतिक पदमु दुआलै मणि। माहि निरंजनु त्रिभुवण धणी।
पंच सबद निरमाइल बाजे। ढुलके चवर संख धन गाजै ।। 1—

अखा भी पुष्टि करते हुये कहते है कि पिंड की खोज (देह में) करने से परमात्मा की प्रप्ति हो सकती है :

पिंड शोध्ये प्राणेश्वर जड़े ,बीजु ते द्वेतने रुपक चढ़े।
प्रत्यक्ष सिद्ध सेवक बहु स्वाद, परोक्ष उमेद करे बहु वाद।
गळी चोपड़ी सधळी वात, लूखो राम अखा—साक्षात। 2—

ईसा मसीह समझाते है "खुदा की बादशाहत न यहाँ है , न वहाँ है तुम्हारे अंदर है ।" 3—

1:— आदि ग्रंथ, पृ. 974

2:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 1, 48—शोधन अंग, छप्पा'581, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988 ई,

3:— बाइबिल, ल्यूक, 70:21

—::सुरत शब्द योग::—

योग 'युज' धातु से निकला है जिसका अर्थ 'जुड़ना' अर्थात सुरत (आत्मा) का शब्द (परमात्मा) के साथ जुड़ना अथवा मिलाप करना । इसे सुरत– शब्द योग कहते हैं ।

योग अनेक प्रकार के है , इन योगो का मन्तव्य कुंडलिनी को जाग्रत करना है । ये सब पिंड के चक्रों से संबंधित है । संतों ने इनको स्वीकार नहीं किया है । हठयोग द्वारा शारीरिक स्वास्थ की प्राप्ति होती है , प्राणयोग (प्राणायाम आदि) द्वारा प्राणों पर नियंत्रण होता है मानसिक योग द्वारा मन पर काबू करके मनुष्य विचारवान हो जाता है तथा ज्ञान योग बुद्धि को सूक्ष्म करके जीव और ब्रह्म की एकता को समझाता है । ब्रह्माण्ड के छः चक्रों का प्रतिबिम्ब पिण्ड में है । संतों ने निचले चक्रों को (जो प्रतिबिम्ब के प्रतिबिम्ब है) छोड़ दिया है और आज्ञा चक्र से शब्द का अभ्यास कराया है । उन्होंने सुरत शब्द योग को ही मुख्य माना है । यह शिक्षा प्रचीन काल से चली आ रही है तथा स्वाभाविक है। इसमें कोई न्यूनाधिक नहीं कर सकता । इसका काम सुरत को शब्द में जोड़ना तथा 'अशब्द' 'अकह' और निराले' में जहॉ से यह शब्द प्रकट हुआ है ,समाना है ।

नाम या सुरत शब्द का मार्ग सबसे प्राचीन है । यह सब धर्म सबसे सनातन है । सुरत को शब्द से जोड़ने का मार्ग स्वयं प्रभु ने हर मनुष्य के अंदर रचा है , यह न किसी विशेष समय अस्तित्व में आया है ,न किसी विशेष मनुष्य , संत महात्मा, गुरु –पीर, वली , पैगम्बर या अवतार आदि का बनाया हुआ है । इसका न किसी विशेष धर्म, देश, कौम, या नसल से संबंध है और न इसका जाति–पाँति , रंग–रुप, आयु–बुद्धि, धनी–निर्धन से कोई रिश्ता है । यह एक अनादि अटल और सर्व–सामान्य मार्ग है । जो भी व्यक्ति आज तक किसी भी समय और किसी भी स्थान पर परमात्मा का मिलाप करने के योग्य बना है ,

सुरत को अंतरमें शब्द से जोड़ कर बना है , भविष्य में भी जो कोई , जब कभी, जहाँ कहीं, इस प्रकार करने में सफल होगा , सुरत शब्द की कमाई के द्वारा ही होगा ।

हज़रत मुहम्मद साहिब के बारे में उल्लेख आया है कि वे गारे–हारा में छः साल और हज़रज –अब्दुल कादिर जिलानी उसी गार (गुफा)में बारह वर्ष सुल्तानुलअज़कार का शुगल या सुरत –शब्द योग का अभ्यास करते रहें ।

"हज़रत शाह मीर लौहरी कुदस सिरह रवायत करदह ऑ हजरन अब्दुल कादर जिलानी करमूद कि पैगम्बर शत साल दर गारे हिरा मशगूल ब सुल्तान–उल–अज़कार बूंद अंद। व मन दर ऑ गारे मुतवर्का दवाज़हद साल ई शुगल इस्तग़ाल नमूदा अम।" 1:–

शब्द के द्वारा जीव एक नया जीवन धारण करता है । हज़रत ईसा मसीह भी शब्द से एक नव–जीवन प्राप्ति का वर्णन करते रहे , इसी बारे में सेंट जोन' फरमाते है :–

वह जो मॉस से पैदा होता है (जिस प्रकार शरीर से शरीर पैदा होता है) पर यह मनुष्य की सुरत है जो शब्द से (नया) जन्म लेती है ।" 2–

आगे चलकर इसी प्रकरण में शब्द को सुनने से नये जन्म की प्रप्ति का बड़ा स्पष्ट वर्णन करते है :

" वह हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसकी आवाज़ को सुनता है , पर तू कह नही सकता की वह कहाँ से आई और कहाँ जाती है । इस प्रकार हर एक इंसान को जिसे शब्द द्वारा एक नया जन्म मिलता है (शब्द सुनाई देता है) " फिर आगे बताते है :

1:– सफा 36, इक्तबास–उल–अनवार, ले. हज़रत मौलाना शेख, मुहम्मद अक्रम साबरी, पृ. 106

2:– सेंट जॉन, 3

"मै सच–सच कहता हूँ कि जब तक मनुष्य फिर (दुबारा) जन्म नहीं लेता ,वह परमात्मा की बादशाहत को नहीं देख सकता ।। 1–

हज़रत ईसा नें जोर देकर कहा है कि 'होली' घोस्ट' या शब्द के प्रति किया गया अपराध क्षमा नहीं किया जाएगा। 2– यानि आपको शब्द के अभ्यास से मुख नहीं मोड़ना चाहिये ।

अन्य स्थान पर वे कहते हैं :

लेकिन वह घड़ी आयेगी और आ ही गई है जब सच्चे भक्त और सच के द्वारा परम पिता की भक्ति करेंगे : क्योंकि परमपिता ऐसे ही भक्तों को ढूँढ़ता है ।

परमात्मा शब्द है , जो उसकी पूजा करते हैं उनको शब्द और सच के द्वारा ही उसकी भक्ति करनीं चाहिये । 3–

मैत्री उपनिषद में आया है कि ध्यान करने के लिये दो ब्रह्म है , शब्द और अशब्द ब्रह्म । शब्द ब्रह्म के ध्यान द्वारा अशब्द ब्रह्म प्रकट होता है ।

फिर बताया है कि कानों को अँगुठों के द्वारा बन्द करो और सात प्रकार की आवाजों को अपने अंदर सुनो" इन आवाजों के परे अभ्यासी अशब्द पारब्रह्म अथवा गुप्त ब्रह्म में लीन हो जाता है । जो शहद (मिठास की स्थिति) तक पहुँच गये , वे वर्गो और भेद भाव की श्रेणी से ऊपर पहुँच गये। 4–

छांदोग्य –उपनिषद 5– में नाद को ब्रह्म रुपी सूर्य में से निकला हुआ माना गया है ।

1:– वही, 3

2:– मेथ्यू, 12:31–32

3:– जॉन, 4:23–24

4:– मैत्री उपनिषद, छठे प्रपाठक

5:– 3:17:6

" अनहद नाद के अंदर ध्वनि है और ध्वनि के अंदर ज्योति है ।" 1 – अंदर उस निर्मल ज्योति के दर्शन करने 2– और अनहद की ध्वनि में सुरत' आत्मा' जोड़ने से साधक के सब मायावी पर्दे उतर जाते है , उसके सब दोष समाप्त हो जाते है और वह मोक्ष–पद प्राप्त कर लेता है । 3–

डॉ गोविंद त्रिगुणायत ने विचार प्रकट किया है कि वेदों ,उपनिषदों , ब्राह्मण– ग्रंथों, नाथ–पंथों , योगियों, और निर्गुण धारा के संतों–भक्तों की वाणी में मूल समानता यही है कि इन सब शब्द ब्रह्म में विश्वास प्रकट किया गया है । 4–

अमीर खुसरो ने भी विभिन्न आवाजों का वर्णन किया है और इसके बाद खुसरो ने परमात्मा में लीन होने का वर्णन किया है :

एक भँवर गुँजार सी दूजे घुंगरु होइ ।।
तीजी शबद संख का चउथे घंटा होइ ।।
पांचवे टाल जो बाजे । छटे सो मुरली नाथ ।।
सातवें भीर जो गाजे । अठवें शब्द भदरंग का,
नवें नफीरी टाल ।।
दसवें गरजे सिंध सास खुसरो यह ताल ।
दस प्रकार अनहद बाजे , जित जोगी हो लीन ।।
इंदरी थकी मनुआ थे खुसरो ने कहि दीन ।
अनहद बाजा बाजन लागे ।
चोर नगरिआ तज–तज भागे ।।

1:– मण्डल, ब्राह्मण उपनिषद, 4:1,2

2:– योगराज उपनिषद, 15

3:– मुण्डकोपनिषद, 3:1:5

4:– गोविंद त्रिगुणायत, 'हिन्दी की निर्गुण काव्य धारा', पृ. 418

गुरु निजाम की भी दुहाई।
खुसरो नें अंतर लिव लाई।। 1–

कबीर, गुरु नानक की दशों पादशाहियों, संत दादू दयाल ,दरिया साहब ,रविदास ,स्वामीजी महाराज आदि सभी संतों के अनुसार परमात्मा शब्द स्वरुप है और शब्द के द्वारा ही यह सुरत (आत्मा) उतर कर आई है । और शब्द के द्वारा ही चढ़ेगी । अतः सुरत शब्द से जुड़ना और सुरत द्वारा एकाग्रभाव से आन्तरिक शब्द – धुन को सुनना ही वह कीर्तन है जो निराकार से मिलाप करा देता है ।

कबीर जी एक स्थान पर कहते है :

कबीर सहजे ही धुन होत है ,हर दम घट के माहि।
सुरत सबद मेला भया , मुख की हाजत नाहिं।।2–

अन्य स्थान पर वे कहते हैं :

एकहि सब सुख देख दिखलावै,सब्द में सुरत समावै।
कहै कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद परसावै।। 3–

*   *   *

साचा सहजै ले मिलै,सबद गुरु का ज्ञान।
दादू हम कूँ ले चल्या,जहँ प्रीतम (का) अस्थान ।। 4–

1:– तज़करा गीसिया नामक पुस्तक, पृ. 332

2:– कबीर साखी संग्रह, प1. 89–24

3:– कबीर हजारी प्रसाद द्विवेदी, सं. कबीर–वाणी, पद–22, पृ.212 , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, सन् 1987 ई.

4:– दादू दयाल की बानी, भा–1, गुरुदेव को अंग, साखी–22, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

(दादू) बाहर सारा देखिये, भीतर कीया चूर ।
सदगुरु सबदौं मारिया ,जाण न पावै दूर ।। 1—

रविदास जी भी कहते हैं कि एकाग्र मन से ध्यान मग्न होकर परमात्मा की आराधना करनी चाहिये । ऐसा करने से सच्चे नाम से प्रवर्तित होने वाला अजपा जाप स्वयं चलाने लगता है —

सुरत शब्द जई एक हो तउ पाइहिं परम अनंद ।
'रविदास' अंतर दीपक जरई, घट उपजई ब्रह्मम अनन्द ।। 2

गुरु वाणी में लिखा है कि सुरत और शब्द में जो संबंध है ,वह व्यक्तिगत रिश्ता है । वह ऐसा है जैसा कि दो हस्तियों में स्नेह होता है । शब्द में व्यक्तित्व है ,अपना निजीपन है । वह गुरु का रुप है , वह गुरु है । सुरत जीव है । दोनों का स्नेह है ,संबंध है । यह व्यक्तिगत स्तर पर निजी रिश्तेदारी है । यही निजी प्रेम, शब्द सुरत संयोग है :

प्रीति प्रेम तनु खचि रहिया बीचु न राई होत ।।
चरन कमल मनु बेधिओ गूझनु सुरति संजोग ।। 3—

अखा भी इसी बात की पुष्टि करते हुये कहते हैं —

मर्म मोटो परब्रह्मनो ,ते तो रसनाए ना'वे,
शब्दवेधी सुरता—खरा,तेहेने लक्ष आवे ।।4—

1:— वही, साखी—25

2:— दर्शन

3:— आदिग्रंथ, पृ. 1363

4:— अखानी काव्यकृतिओं, खण्ड—2, आत्मविचार, ब्रह्मविचार, पद, राग केदारो, पद137, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रे. अह. द्वारा प्रकाशित, सन् 1988

गुरु नानक साहिब का भी का कथन है कि मृग की भाँति अस्थिर या चंचल मन को वश में करने का और परमात्मा के सच्चे प्रेम द्वारा सच्चा आनन्द प्राप्त करने का एक मात्र साधन सुरत –शब्द का अभ्यास है ,दूसरे किसी साधन के विषय में विचार करने की आवश्यकता नहीं –

राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ।।
सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रावउ सुख सारु ।। 1–

जब इस प्रकार सुरत अथवा आत्मा शब्द में समा जाती है और वह काल की सीमा से परे हो जाती है :

जाप मरै ,अजपा मरै, अनहद भी मरि जाय ।
सुरत समानी सबद में ,ताहि काल नहि खाया ।। 2–
*   *   *
सुरति सब्द एक सम राखो ,मन का अदल उठाई ।
काम क्रोध की पूँजी तौलो, सहज काल टरि जाई ।। 3–

संत दादू दयाल का भी कथन हैः–

(दादू)जीव न जाणै राम को,राम जीव के पास ।
गुर के सब्दौं बाहिरा, ता थै फिरै उदास ।। 4–

1:– आदि ग्रंथ, पृ.–62

2:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 89–27

3:– कबीर साहिब की शब्दावली, भाग–3, शब्द–5, पद–2, बे. प्रेस द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, 31–कस्तूरिया मृग को अंग, बे. प्रेस द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

(दादू) सबदे ही मुक्ता भया, सबदै समझै प्राण।
सबदै ही सूझै सबै, सबदैं सुरझे जाण।। 1—

*　　　　　*　　　　　*

एक सबद सबकुछ किया ,ऐसा समरथ सोइ।
आगैं पीछै तौ करै, जे बल हीणा होइ।। 2—

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि शब्द की ध्वनि में लीन होकर सुरत उस दयालु प्रभु की शरण में पहुँच जाती है । वह प्रेम रुप बन जाती है और सदा शब्द के स्वर में लीन रहती है :—

दादू गावै सुरति सौं, बाणी बाजै ताल।
यहु मन नाचै प्रेम सौं, आगैं दीन दयाल।। 3—

गुरु नानक देव का भी कथन है :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसाणे।।
सुरत सबद भवसागरु तरिये नानक नामु बखाणे।। 4—

गुरु अमरदास जी भी कहते हैं शब्द के बिना अंतर में अंधेरा रहता है ,न तो सार—वस्तु (प्रभु) मिलती है और न आवागमन का फेरा मिटता है :

बिनु सबदै अंतरि अनेरा। व वसतु लहै न चुकै फेरा।। 5::—

1:— वही, सबद को अंग, साखी—5,

2:— वही, साखी—10

3:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, लय कौ अंग, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित,

4:— आद ग्रंथ, पृ. 938

5::— वही, पृ. 124

अखा जी का भी कथन है कि गुरु से प्राप्त शब्द ही हमें परमात्मा के धाम में ले जा सकता है ।

बिरह की आग, और प्रम का सोहागा,
गुरु शबद ले, धम वहेला।। 1–

हजरत ईसा का कथन है कि शब्द के विरुद्ध किया पाप कभी क्षमा नही हो सकता । 2– आपका अभिप्राय है कि सब पापों को नष्ट करके परमात्मा से मिलने का साधन शब्द है। शब्द को पीठ दिखाने वाले प्राणी न पापों से मुक्त हो सकते है और न परमात्मा से मिलाप प्राप्त कर सकते है ।

शब्द के साथ सुरत के जुड़ने और शब्द को सुनने से साधक शब्द में लीन हो जाता है । ऐसे साधक को वह अद्‌भुद अवस्था प्राप्त हो जाती है जिसका शब्दो से वर्णन करना कठिन है ।

शब्द में लीन होने वाले अभ्यासी की चेतना इतनी विशाल हो जाती है कि सारा ब्रह्माण्ड उसको साक्षात् दिखाई देता है । सारी सृष्टि उसकी दृष्टि में आ जाती है । शब्द की अद्‌भुत शक्ति के सहारे वह एक से दूसरी रुहानी मंजिल तय करता हुआ आगे ही आगे बढ़ता जाता है , जो सबका आदि और अन्त है । जैसे–जैसे वह ऊँचे मंडलों में जाता है , उसकी दृष्टि विशाल होती जाती है । उसकी आत्मा से पूर्व जन्मों के हर प्रकार के पापों के संस्कार धुल जाते हैं और वह जन्म–मरण के दुःखों और आवागमन के बंधनों से मुक्त हो जाता है यह सरल योग है ,इसमें और यागों की भाँति कष्ट नहीं उठाने पड़ते हैं। इसलिये इसे सहज योग भी कहा है । इसमें किसी प्रकार का परिश्रम नहीं

1:– अक्षयरस, झूलणा, पद–97, सं. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित, सन् 1963 ई.

2:–**Sin against the holy Ghost can never be forgiven**
(Math : 12:31)

करना पड़ता , केवल ध्यान द्वारा शब्द को सुनना है। इसके अभ्यास में हठयोग आदि के कष्ट नहीं सहने पड़ते। मनुष्य घर में रहकर संसार के काम–काज करते हुये सहजता से इसका अभ्यास कर सकता है । सुरत शब्द योग को सिखने के लिये गुरु अनिवार्य है । इनकी सहायता के बिना शिष्य एक कदम भी आगे नहीं बढ़ नहीं सकता है ।

गुरु मम गहो सब्द की करनी, छाडो मति बहुतेसा।
हंसा सहज जाइ तहँ पहुँचे ,गहि कबीर उपदेसा।। 1

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि संत शब्द का रुप होते हैं , इसलिये वे साधकों को भी अपने अंदर ही गुप्त शब्द प्रकट करने की युक्ति सिखा देते हैं :

सब तत्तन मां संत बड़े है , शब्द रुप जिन देहियाँ । 2

* * *

साधो सो सद्‌गुरु मोहि भावै ।

परदा दूरि करै आँखन को ,निज दरसन दिखलावै।
जा के दरसन साहिब दरसै ,अनहद सबद सुनावै। 3–

* * *

सब्द सरुप सतगुरु अहैं, जाका आदि न अंत। 4–

1:– कबीर साहब की शब्दावली, भाग–3, शब्द–7, पद–4, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.

2:– वही, भाग–1, पृ. 92

3:– वही, भाग–2, पृ. 18

4:– अमरावती, पृ.–3

(दादू) सबद बाण गुर साध के, दूरि दिसता जाइ।
जेहिं लागे सो ऊबरे, सूते लिये जगाइ।। 1–

*　　　　*　　　　*

(दादू) साध सबद सौं मिलि रहै, मन राखै बिलमाइ।
साध सबद बिन क्यूँ रहै ,तबहीं बीखरि जाइ।। 2–

*　　　　*　　　　*

गुरु देह के कारण नहीं , शब्द के कारण ही पारब्रह्म का रुप होता है । वह शब्द के कारण ही सर्व–व्यापक ,अटल व अविनाशी होता है । इस प्रकार आन्तरिक रुहानी मंडलों में भी न शिष्य का शरीर जाता है , न गुरु का। सचखण्ड आत्मा को पहुँचना है और पहुँचाना अन्तर में प्रकट शब्द गुरु को ही है । अन्त समय सहायता शब्द करता है ,गुरु की देह नही और सहायता सुरत की होती है ,शिष्य की देह की नहीं । गुरु और शिष्य दोनों की देह उसी मृत–मंडल में रह जाती है ,परंतु जो जीव शब्द स्वरुपी , शब्द अभ्यासी गुरु द्वारा अपनी सुरत अंदर शब्द (रुपी गुरु) से जोड़ लेता है , तो शब्द उसी आत्मा का साथ नहीं छोड़ता और मंजिल –दर–मंजिल उसका नेतृत्व करता हुआ, उसको परमात्मा से मिला देता है । गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि अनादि काल से परमात्मा से मिलने का यही क्रम चला आ रहा है :

जुगि–जुगि साचा एको दाता।। पूरै भागि गुर सबदु पछाता।।
सबदि मिले से बिछुड़े नाहीं नदरी सहजी मिलाई है ।। 2–

दादू साहिब ने सतगुरु के शब्द को रुहानी करनी का सार माना है और सद्‌गुरु उसी को माना है जो शब्द के रंग में रंगा होता है –

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, सबद को अंग, साखी–21, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई,

2:– वही, साखी–17

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 1046

दादू हम कूँ सुख भया ,साध शब्द गुरु ज्ञाण।
सुधि बुधि सोधो समझ करि ,पाया पद निरबाण।।1–

अखा जी भी इस बात की पुष्टि करते हुये कहते हैं :

स्वांत बुंद सतगुरु शब्द जिज्ञसु जन सीप।
तॉहा आपा जल सुन नीपजे अखा शब्द कुँ जीत।। 2–
* * *
साधो परचा शब्द का सांईया होये हजूर।
शब्द सोहागा वस्त का अखा गेहेन करे दूर।। 3–
* * *
गुरु की आग, और प्रेम का सोहागा,
गुरु शबद ले, धम बहेला।। 4–

हजूर स्वामी जी महाराज का कथन है कि केवल शब्द मार्गी महात्मा ही सच्चा संत सदगुरु हो सकता है । ऐसे महात्मा केवल शब्द की साधना को परमात्मा की वास्तविक भक्ति मानते है । यह शब्द लिखने,पढ़ने और बोलने का विषय नहीं । यह अगम व अगोचर शब्द है जिसकी अखंड ध्वनि सीधी सचखंड से आ रही है :

1:– दादू दयाल की बानी, भा–1, गुरु देव को अंग, पृ. 3, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

2:– अक्षयरस, साखियां, 11–शब्द परिक्षा अंग, साखी–2, सुं कुँवर चंद्रप्रकाश सिह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित , सन् 1983 ई.

3:– वही, साखी–1

4:– वही, झूलणा, पद–96

शब्द मारगी गुरु न होवे। तो झूठी गुरुवाइ लेवे।।
गुरु सोइ जो शब्द सनेही। शब्द बिना दूसर नहिं सेई।।
शब्द कहा मैं गगन शिखर का । शब्द कहा मैं सुन्न शहर का।। 1

संत ईशरसिंह राड़े वाले भी यहीं उपदेश करते हैं । आप फरमाते हैं :"फकीर और आरिफ़ लोगों में उस प्रकार संगति करे जो कि शब्द सुरत योग का अभ्यासी और अनहद के मार्ग को जानने वाला हो। "2–

बाइबल में एक शब्द को सृष्टि का कर्ता कहा गया है 3, तो दूसरी ओर हज़रत ईसा मसीह को ऐसा देहधारी शब्द कहा गया है जो मनुष्य बनकर संसार में प्रकट हुआ । वह परमात्मा के नूर, दया और सत्य से परिपूर्ण था। 4

1:– सारवचन, पृ. 127

2:–ईश्वरात्मक अमुल्य लाल, 260

3:– In the begining was the word, and the word was with God and the word was God. the same was in begining with God. All this were made by him and without him was not any thing made that was made.
(John 1:1-3)

4:–And the word was made flesh, and dwelt among us, (and we beheld his glory, the glory as of the only begotten of his Father) Full of grace and truth.
(Jhon 1:14)

सुरत–शब्द के तीन रुप है –

सुमिरन, ध्यान और धुन (विस्तार से आगे दिया गया है)। किसी खयाल को बार–बार याद करने का नाम सुमिरन है । इसकी युक्ति सदगुरु के द्वारा प्राप्त होती है ।

किसी स्थान पर मन को ठहराने को ध्यान कहते है । सुमिरन संपूर्ण होने पर ध्यान स्थिर हो जाता है ,ध्यान के परिपक्व होने पर धुन अपने आप जाग उठती है । सिमरन और ध्यान की पूर्णता पर सुरत'आत्मा' शब्द'परमात्मा' के सीधे संपर्क में आती है ।

सुमिरन,ध्यान और धुन सच्ची अंतर्मुखता की प्राप्ति के लिये आवश्यक है । ध्यान का उल्लेख गीता में भी आया है कि साधक बाहर से हट कर दृष्टि को दोनों भृकुटियों के मध्य स्थिर करे। यह नासिका के अग्र भाग पर भी किया जाता है इस प्रकार अभ्यास करने पर ये सब सांसारिक विचार दूर हो जाते हैं ,मन की चंचलता हटती है और उच्च कोटि की एकाग्रता प्राप्त होती है । 1–

सुरत –शब्द योग की कमाइ के लिये सबसे पहले किसी सदगुरु से दीक्षा लेना आवश्यक है । इस योग की कमाई सत्संग में प्रफुल्लित होती है । सदगुरु अपनी मेहर द्वारा शिष्य को सुरत–शब्द की सेवा में लगाते है :

करमु होवै सतिगुरु मिलाए।।
सेवा सुरति सबदि चितु लाए।। 2–

कबीर जी भी शब्द गुरु की सहायता से विषय विकार दूर करने की सीख देते है।

1:– गीता, अध्याय–5, श्लोक–27

2:– आदि ग्रंथ, माझ , महल्ला–3, 10

सब्द गुरु को दृढ करि बाँधो ,सुरति की खींच कमाना।
कड़ाबीन करु मन को बस करि, मारो मोह निदाना।। 1–

* * *

(दादू) भुरकी राम है ,सबद कहै गुरु ज्ञान।
तिन सबदौं मन मोहिया, उनमन लागा ध्यान।। 2–

* * *

सबदौं माहे राम रस ,साधौं भरि दीया।
आदि अंत सब संत मिलि, यौं दादू पीया।। 3–

अखा जी भी इस बात की पुष्टि करते हुए कहते हैं :

शब्द वेधी शूरा को संत, शंख सकळ नहिं दक्षणावंत। 4–

गुरु ग्रंथ साहिब में भी इसी तथ्य को देख पाते हैं –

सबदि मरै सोई जनु पूरा, सतिगुरु आखि सुणाए सूरा।। 5–

* * *

सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई।। 6–

1:– कबीर साहब की शब्दावली, भाग–1, चितावनी और उपदेश, शब्द–86, पद–1 बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.

2:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, सबद को अंग, साखी–25, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

3:– वही, साखी–30

4:– छप्पा'363

5:– आदि ग्रंथ, पृ.1046

6:– आदि ग्रंथ, पृ. 910

आगरा के प्रसिद्ध संत स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सारी आध्यात्मिक करनी का सार यह है कि हर प्रकार के प्रयत्न तज कर प्रीति व प्रतीति से अंतर में शब्द कीध्वनि से लगन लगाओ। सुरत शब्द की कमाई से मन वश में आ जायेगा और सुरत आंतरिक आकाश को चीरकर अपने निज धाम पहुँचने में समर्थ होगी –

गुरु की प्रीत कर पहिले। बहुरि शब्द घट को सुनना।।
मान दो यह बात मेरी । करे मत और कुछ जताना।।
हार जब जाय मन तुझसे। चढ़ा दे सुर्त को गगना।। 1–

*　　　　*　　　　*

गुरु कहें खोल कर भाई। लग शब्द अनहद जाई।।
बिना शब्द उपाव न दूजा। काया का छूटे न कूजा ।। 2–

गुरु अमरदास जी भी कहते है कि सारे संसार का रचनाकार और पालक भी एक है ,उसका हुक्म'अमर' विधान या कानून भी एक है ओर वह हुक्म या नियम यह है कि जब भी उसकी प्राप्ति होती है ,गुरु के शब्द या नाम की कमाई द्वारा होती है :

जग जीवनु साचा एको दाता।। गुरु सेवा ते सबदि पछाता।।
ऐको अमरु एका पतिसाही जुगु सिरि कार बणाई है ।। 3–

परमात्मा ने स्वयं अपने से मिलने का यह नियम बनाया है ,कि पूर्ण संतो के बिना शब्द या नाम का ज्ञान नहीं हो सकता है और शब्द या नाम के बिना परमात्मा से मिलाप नहीं हो सकता :

1:– सारवचन, पृ. 144

2:– स्वामीजी महाराज, सारवचन, पृ. 161

3:– आदि ग्रंथ , पृ. 1045

सचै सबदि सची पति होई। बिनु नावै मुकति न पावै कोई ।।
बिनु सतिगुरु को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई है ।। 1—

ब—सुमिरन::—

सुमिरन संस्कृत पद 'स्मरण' का अप्रभंश है और 'स्मृ' धातु से बना है । इसके कई अर्थ है ,'याद करना', रक्षा करना', मानसिक रुप से अपने ईष्ट की छवि को अपने हृदय में स्थापित करके उसको याद करना,सॉस—सॉस में उसकी याद को न भूलना, उसको अपने जीवन का अंग बना लेना और 'उसी में जाग उठना' ,' उसी में ही जीना' —यह सुमिरन है । संक्षेप में कहे तो मंत्र या परमात्मा के किसी नाम का बार बार दुहराना सुमिरन है ।

सुमिरन अनेकता में से एकता ,बहिर्मुखता से अंतर्मुखता और फैलाव से सिमटाव में पहुँचने की युक्ति है । वेदो में ऋषियों ने इस नाम को ही सृष्टि का कर्ता माना है । ऋग्वेद में कहा गया है ''वह गुप्त नाम महान से महान है और उसका विस्तार दूर—दूर तक है । जिसके द्वारा तू वर्तमान और भविष्य की सब वस्तुएँ पैदा करता है । 2 परमात्मा के अविनाशी और मंगल कारी नाम के संबंधी भी कई मंत्र ऋग्वेद में मिलते है ऋषि कहते है कि यह नाम मनुष्य जाति के जन्म के पहले भी और पीछे भी कायम रहेगा। 3

1:— वही, पृ. 1046

2:— महत्त तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग्,
येन भूतं जनयो येन भव्यम्।
(ऋग्वेद 10, 55:2)

3:— वही, 5.18:7

परमात्मा की ओर संकेत करते हुए उनके अविनाशी नाम के विषय में ऋषि कहते है 'जिसका नाम सागर की भाँति फैला हुआ है और प्रकाशमान है ,जिसमें सब आनन्द मनाते है और जीवन–शक्ति प्राप्त करते हैं –जैसे उत्तराधिकार में मिली शक्ति हो ।" 1– श्वेताश्वर उपनिषद में आता है कि नाम का प्रताप सबसे ऊँचा है ।और इसकी तुलना असंभव है ।2–

सुमिरन जप या योग का एक आवश्यक अंग है । इसके बारे में गीता में आया है ,'यज्ञाना जप यज्ञोस्मि'– अर्थात यज्ञों में मैं जप यज्ञ हूँ अर्थात् जप सबसे उत्तम यज्ञ है ।

पतंजलि के सूक्त की व्याख्या करते हुये व्यास जी कहते हैं ,"इस नाम(ओम्) के साथ परमात्मा का नित्य संबंध है ।3–

नाम की अपार महिमा की श्रेष्ठता को नारद जी ने सनत्कुमार को समझाते हुये कहा है "आत्मवित् बनने के लिये नाम ज्ञान का प्रथम सोपान है । तू नाम की उपासना कर ,नाम से शुरु कर परंतु यही तक मत बन जा।"4–

योगियों का कथन है कि कुछ शब्दो की मुर्हमुहः ,पुनरावृत्ति से एक बहुत बड़ी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है इसलिये 'ओंकार' को सर्वशक्तिमान कहा गया है ।5–

1:– वही 8.20:13

2:– श्वेताश्वर उपनिषद, 4.19

3:– समाधि प्रद, 27वें सुक्त

4:– छनद, 7,1,4

5:– केशवप्रसाद चौरसिया, मध्यकालीन हिन्दीः संत विचार और साधना, पृ. 425

हजरत मुहम्मद साहिब फ़रमाते हैं कि जो लोग खुदा का जिक्र (सिमरन) करने बैठते हैं ,उनको फरिश्ते चारों ओर से घेर लेते हैं और खुदा की रहमत उसको छिपा लेती है उन पर चैन और आराम उतरता है और खुदा उनका जिक्र करता है । फिर फरमाते हैं 'हमेशा तर रहे जबान तेरी खुदा के जिक्र से " ।

ईसा मसीह का भी यही उपदेश है । 'वे कहते हैं लेकिन वह घड़ी आ रही है , और आ भी गई है जब सच्चे भक्त शब्द और नाम के द्वारा परमात्मा की भक्ति करेंगे क्योंकि परमपिता परमात्मा को ऐसे ही भक्तों की तलाश है । 1–

यहूदी मंदिरो में (Synago gues) में पूजा के समय गाये जाने वाले बहुत से शब्द ,भजन (Psalms) नाम की महिमा का वर्णन करते है । पुरानी बाइबिल में इन शब्दो(Psalms) का एक अलग अध्याय है ,जिसमें 150 से अधिक भजन नाम की महिमा का वर्णन करते है । इनमें कहा गया है कि कुछ लोग धन–ऐश्वर्य, रथों ओर घोड़ों पर मान और विश्वास करते हैं परंतु परमात्मा के प्रियजनों के लिये नाम का सुमिरन ही सबसे बड़ा धन है । 2–

यहूदी पैगम्बरों के अनुसार मुक्ति केवल उनको मिलती है जो परमात्मा का नाम जपते है । 3–

1:– जॉन 4:23–24

2:– **Sume furst in cheriots, and some is horses, but we will remember the name of the Lord, our God**
(Psalms 20:7)

3:– **Whoseven shall call on the name of the Lord, shall be delivered.**
(Joel, 2:32)

भक्त कहता है, "हे परमात्मा हमारे मालिक सारे संसार में तेरे नाम की शान निराली है । 1– यह नाम ही ऐसा अविनाशी तत्व है जो सदा के लिये कायम–दायम रहता है और जिसके द्वारा तेरी कीर्ति युग–युगान्तर में फैलती है। 2– यह अमर नाम ही सदा प्यार और सत्कार का पात्र रहता है क्योंकि वही सच्चे ज्ञान और शक्ति का भंडार है । 3– " हे प्रभु तू अपने नाम के प्रताप से मुझ पर दया कर ।" 4–

नाम की अपार महिमा और असीम प्रभाव का वर्णन करते हुए कबीर, दादू दयाल एवं अखा आदि संत कभी नहीं थकते । उनके अनुसार नाम का सुमिरन करना ही वेद, पुराण, उपनिषद आदि ग्रंथों का निचोड़ और सार है । नाम के सुमिरन द्वारा ही चारों युगों ,तीनों कालों और तीनों लोकों में जीव दुःखों से मुक्त होते हैं । संत तप की कठोर साधना की अपेक्षा नाम के सुमिरन को ही श्रेयकर समझते हैं । संतों का विचार है कि नाम ही उत्पत्ति, पालन ,और प्रलय करने वाला है, सभी स्थितियों और सभी सृष्टि व्यापारो में नाम ही

1:– O Lord, our Lord how execellent is thy name in all the earth

(Psalms 8:1)

2:– They name, O Lord, enderth for ever:

(Ibid 135:13)

3:– Blessed be the name of God for ever and ever for wisdom and might and his.

(Daniel 2:20)

4:–Save me, O God, by Thy name

(Psalms 5:1)

उपादान रुप में देखा जा सकता है । इसी कारण राम–नाम की महिमा अनंत और अपार है ।

कबीर दासजी के लिये नाम सुमिरन ही सब कुछ है क्योंकि इसके बिना मुक्ति नहीं हो सकती।

जिह सिमरनि होइ दुआरु।।
जाहि वैकुंठि नही संसारि ।।
निरभउ कै घरि बजावहि तूर।।
अनहद बजहि सदा भरपूर।।
ऐसा सुमिरनु करि मन माहि।।
बिनु सिमरन मुकति कत नाहिं।। 1–

अन्य स्थान पर कबीर जी कहते हैं कि नाम के सुमिरन के सहारे संत और भक्त ही नहीं पापी जन भी मुक्ति प्राप्त करते हैं –

मन रे राम सुमिरि,राम सुमिरि ,राम सुमिरि भाई।
राम नाम सुमिरन बिनै ,बूडत है अधिकाई ।।
दारा सुत ग्रेह नेह, संपति अधिकाई।
यामै कछु नाहिं तेरौ, काल अवधि आई।
अजमेल गज गनिका ,पतित कर कीन्हां।
तेऊ उतरि पारि गये, राम नाम लीन्हौं।।
स्वान सूकट काग कीन्हौं ,तऊ लाज न आई ।
राम नाम अमृत छोडि, काहे विष खाई ।।
तजि भरम करम विधि नखेद राम नाम लेहीं।
जन कबीर गुर प्रसादि ,राम करि सनेही।। 2–

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 771

2:– क. ग्रं. राग मारु, पद 320, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

कबीर जी फिर कहते है –

कबीर मतवाला नाम का ,मद मतवाला नाहिं।
नाम पियाला जो पियै .सो मतवाला आहि। 1
*　　　　　*　　　　　*
जबही नाम हिरदै धरा, भया पाप का नास।
जैसे चिंगी आग की परी पुरानी घास।। 2

कबीर जी नाम सुमिरन का महत्व दिखाते हुये कहते हैं कि मेरा काम–काज, धन'–संपत्ति, मित्र–संबंधी सब नाम है ,मैंने नाम की शरण दृढ़ कर ली है क्योंकि लोक–परलोक दोनों में केवल नाम ही जीव का सच्चा साथी है :

नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी।। भगति करउ जनू सरनि तुम्हारी।।
नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी।। तुमहि छोडि जानउ नहीं दूजी।।
नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई।। नाउ मेरे संगि अति होई सखाई ।। 3–

नाम की पूँजी इकट्ठी करने वाले प्राणी भवसागर से तिर जाते है और जन्म –मरण के बंधन तोड़ लेते है । चार प्रकार की मुक्ति सामीप्य, सालोक्य, सारुप्य, व सायुज्य और चार पदार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष आदि ही नही ,उनको परम पद की प्राप्ति भी हो जाती है ।–

1:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 163–8

2:– वही, पृ. 84

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 1157

कबीर महिमा नाम की ,कहता कही न जाय।
चार मुक्ति औ चार फल, और परम पद पाय।। 1–

* * *

कहि कबीर ते अंते मुकते जिन हिरदै राम रसाइनु।। 2–

* * *

कहि कबीर निरधुन है सोई।। जाके हिरदै नामु न होई।। 3–

संसार की प्रत्येक वस्तु झूठी और नाशवान है, केवल नाम ही एक मात्र सच्चा और स्थाई पदार्थ है । यह नाम अनादि है और मौत व दुःख से परे है । यह अमर जीवन और अमर आनन्द का अथाह सागर है ।

नाम सत्त संसार में ,और सकल है पोच।
कहना सुनना देखना ,करना सोच असोच।। 4–

दादू साहिब कहते हैं कि नाम की महिमा अपरंपार है । बड़े–बड़े विद्वान और ऋषि मुनि भी नाम की गहनता को नहीं पा सके । नाम सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का सिरमौर है । नाम नरकों के दुःख काटने और भवसागर से पार उतारने में समर्थ है । यह सर्व सुखों और अमर जीवन का दाता है । नाम जीव के हृदय में परमात्मा का प्रकाश पैदा करके उसको प्रकाश का रुप बना देता है:

1:– क. सा. की श., भाग 2, बे. प्रे., इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, पृ. 107

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 1104

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 1159

4:– क. सा. की श., भाग 2, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, पृ. 107

पढ़ि–पढ़ि थाके पंडिता, किनहुँ न पाया पार।
कथि–कथ थाके मुनि जनौं,दादू नाँऊ अधार।। 1–

*   *   *

नाँउ रे नाँउ रे, सकल सिरोमणि नाँउ रे मैं बलिहारी जाउँ रे।।
दुतर तारै पार उतारै, नरक निवारै नाउँ रे।।
तारणहारा भौजल पारा, निर्मल सारा नाउँ रे।।
नूर दिखावै तेज मिलावै ,जोति जगावै नाउँ रे।।
सब सुख दाता अमृत राता दादू माता नाउँ रे।। 2:–

नाम प्रत्येक वस्तु का तत्व और जीवन है । यह सच्चा धन है ,भक्ति का मूल और कर्म ,भ्रम और भय का नाश करता है । नौ विधियाँ और अठ्ठारह सिद्धियाँ नाम में शामिल है । नाम सब इच्छाएँ पूरी करने वाली चिन्तामणि है । वास्तव में नाम से अधिक उत्तम अद्भुद और अनुपम पदार्थ है , क्योंकि नाम ही परमात्मा का निज रुप है :

कर विचार तत सार, पूरण धन पाया।
अखिल नाँउ अगम ठाँउ, भाग हमारे आया।।
भगति मूल मुकति मूल, भौजल निसतरणा।
भरम करम भंजना भै ,कलिविष सब हरणा।।
सकल सिधि नवै विधि ,पूरण सब कामा।।
राम रुप तत अनूप ,दादू निज नामा।। 3:–

1:– दादू दयाल की बानी, भा–1, बेलबीडियर प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, पृ. 23

2:– वही, भाग–2, पृ. 93

3:– वही, पृ. 26

संगहिं लागा सब फिरै ,राम नाम के साथ।
चिंतामणी हिरदै बसै ,तौं सकल पदारथ हाथ।। 1–

नाम के बिना आशा –तृष्णा की अग्नि का शान्त होना और पूर्ण शांति और सच्चे सुख का मिलना असंभव है । नाम को भुलाना सबसे बड़े पाप का भागी बनना है , परंतु नाम से लगन लगाना सब पापों से मुक्त हो जाना है । इसलिये नाम –भक्ति में लगे लोग ऊँचे से ऊँचे है और नाम –भक्ति से खाली प्राणी नीच से नीच है :

एक राम के नाम बिन, जिव की जलण न जाई।
दादू केते पचि मुये, करि करि बहुत उपाई।। 2–

*   *   *

जेता पाप सब जग करै ,तेता नॉव बिसारें होइ।
दादू राम सँभालिये, तौ एता डारै धोइ।। 3–

नाम की भक्ति एकमात्र सच्ची भक्ति है । जिस जीव की रात दिन राम में वृत्ति लगी हुई है ,उसको माला तिलक की आवश्यकता नहीं है । 4– इसके लिये सच्चा प्रभु भक्त हर प्रकार के बारह मुखी साधनों को त्याग करके केवल नाम की अराधना में लगता है :

1:–वही, , भाग–1, पृ. 24

2:– वही, पृ.–93

3:–वही, पृ. 26

4:– (दादू) माला तिलक सूं कुछ नहीं, काहू सेती काम।
अंतरि मेरे एक है, अहि निसि उसका नाम।।
(वही, भाग–1, पृ. 146)

तुम्हारे नॉइ लागी हरि जीवनि मेरा।
मेरे साधन सकल नौंव निज तेरा।।
दान पुन्न तप तीरथ मेरे, केवल नॉव तुम्हारा।
ये सब मेरे सेवा पूजा ऐसा बरंत हमारा।। 1—

नाम के सुमिरन से परमात्मा की सुखमय अखंड ज्योति अंदर प्रकट हो जाती है और जीव नूर का रुप हो जाता है :

अखंड जोति जहँ जाणै, तहां राम नाम ल्यौ लागै।
तहँ राम रहै भरपूरा, हरि संगी रहै नहिं दूरा।। 2—

* * *

दादू नीका नॉव है ,तीन लोक तत सार।
राति दिवस रटिबो करी, रे मन इहै विचार।। 3—

* * *

राम कहत रामहि रहया, आप विर्सजन होइ।
मन पवना पंचौ बिलै, दादू सुमिरण सोइ।। 4—

* * *

नॉव लिया तब जाणिये, जे जन मन रहै समाइ।
आदि अंत मध एक रस ,कबहूँ भूलि न जाइ।। 5—

1:— वही, भाग—2, पृ. 74
3:— वही, भाग—2, पृ. 26
3:— वही, भाग—1, पृ. 15
4:— वही, भाग—1, पृ. 57
5:— वही भाग—1, पृ. 23

दादू दयाल भी नाम स्मरण को सब–कुछ मानते है :

दादू दुखिया तब लागै जब लग नॉव न लेहि।
तब ही पावन परम सुख ,मेरी जीवन येहिं।। 1–

*   *   *

जे चित्त चिहुटै राम सूँ सुमिरण मन लागे।
दादू आतम जीव का संसा सब भागै ।। 2–

गोस्वामी तुलसी दास जी भी नाम की महिमा गाते है :–

पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं।
अति अपार भवसागर तरहीं।। 3–

*   *   *

जासु नाम सुमिरत एक बारा।
उतरहिं नर भव सिंधु अपारा।। 4–

गुरु गोविंद सिंह जी भी कहते है कि एक पल के लिये एकाग्रता पूर्वक वर्णात्मक नाम का अभ्यास करने से जीव काल के जाल में लौट कर नहीं आता।

एक चित जिन इक छिन धिआइयो।।
काल फास के बीच न आइओ।। 5:–

1:– कबीर साखी संग्रह, , पृ. 84

2:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, सुमिरन कौ अंग, साखी–32, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

3:– मानस, 4.28.2

4:– मानस, 2.100.2

5:– दशम ग्रंथ, अकाल–उस्तति, पृ. 111 : 9:10

अखा जी का भी कथन है :–

कहे अखा ल्यो गोबिंद गाई ,

तो मुक्त थइने महालीओ रे।। 1–

सुमिरन ही सच्चे आध्यात्मिक अभ्यास का मूल है । देह धारी सदगुरु द्वारा बताये गये पवित्र नामों का आंतरिक सुमिरन अबाध रुप से प्रतिदिन प्रेम,भक्ति और चिंतन की एकाग्रता से करने से मनुष्य अपने शरीर के नौ द्वारों से ऊपर उठकर प्रकाश मंडल में चला जाता है । मनुष्य परमात्मा का साक्षात्कार करता है । इसलिये संतों ने इस बात पर जोर दिया है कि अभ्यासी प्रतिदिन नियम पूर्वक सुमिरन करें क्योंकि यह नाम अभ्यासी के अंतर में हर संकट से रक्षा करता है ,यमराज और यमदूतों का साहस नहीं कि इस सिमरन के आगे ठहर सके ।

कबीर जी का कथन है :

कबीर हमरे नाम बल ,सात दीप नौखंड।

जम डरपै सब भय करैं, गाजि रहा ब्रह्मंड।। 2–

अन्य स्थान पर वे कहते है –

हरि को नांव अभय पददाता, कहै कबीरा कोरी। 3–

राम नाम निज अमृत सार ,सुमिरि सुमिरि जन उतरे पार।। 4

1:– अखा वाणी, , पद 141

2:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 84–14

3:– कबीर ग्रंथावली, पद–346, राग भैरुँ, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी,

4:– वही, राग कल्याण, पद 393

संत दादू जी नाम के महत्व को प्रतिपादित करते हुये कहते हैं कि नाम के सुमिरन से करोड़ों पापी पावन हो गये।

(दादू) निमिषि न न्यारा कीजिये, अंतर थैं उरि नाम।
कोटि पतित पावन भये केवल कहतँ राम।। 1

*　　　　*　　　　*

सर्गुण निर्गुण है रहे ,जैसा तैसा लीन।
हरि सुमिरण ल्यौं लाइयें, का जाणों का कीन्ह।। 2—

*　　　　*　　　　*

(दादू) जे तैं अब जाण्या नहीं ,राम नाम निज सार।
फिरि पीछै पछिताहिगा, रे मन मूढ गँवार।। 3

अखा जी का भी कथन है :

राम ही राम जपे सो ही राम है ,नाम जपे सो श्याम सुंदर।। 4

सुमिरन में कई प्रकार के जप और विरद आ जाते है। कई हाथों की अंगुलियों का आधार लेकर ,कई जबान के द्वारा ,कई कण्ठ से ,कई हृदय से और कई योगी जन नाभि—चक्र पर प्राणों की हिलोर द्वारा सुमिरन करते हैं । यदि सुमिरन करते समय सुरत शब्द साथ रहे जो यह सुमिरन लाभप्रद होता है । यदि माला हाथ में है जिह्वा मुँह में फिरती है और मन दौड़ता फिरता रहता

1:— दा. द. की बानी, भाग—1, सुमिरन कौ अंग, चितावनी, साखी 26, बे. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

2:— वही, नाम—महिमा, साखी 22,

3:— वही , चितावनी, साखी—27

4:— एजन, संत प्रिया, 93

है या सुमिरन कंण्ठ अथवा हृदय में होता रहता है और साथ ही साथ मन भी दौड़ता रहता है तो ऐसे साधन भी पूर्ण फलदायक नहीं होते ।

सुमिरन की एकाग्रता का उल्लेख करते हुये कबीर कई उदाहरण देकर समझाते है :

सुमिरन की सुधि यौं करौ, जैसे कामी काम।
एक पलक बिसरै नहीं , निसु दिन आठो जाम।।
सुमिरन की सुधि यौं करै, ज्यौं गागर पनिहार।
हालै डोलै सुरति में कहै कबीर बिचार।।
सुमिरन की सुधि यौ करौ, जैसे दाम कंगाल।
कह कबीर बिसरै नहीं पल पल लेहि सम्हाल।।
सुमिरन सुरति लगाई के मुख ते कछु ना बोल।
बाहर के पट देइ के , अंतर के पट खोल।। 1—

दादू का विचार है :—

जियरा मेरे सुमरि सार ,काम कोध मद तजि बिकार।।
तूँ जिनि भूलै मन गँवार, सिर भार न लीजै मानि हार।।
सुणि समझायौ बार—बार, अबहुँ न चेते हो हुसियार।
करि तैसैं भव तिरिये पार, दादू इब थै यहिं विचार। 2'

अखा— ये ही समज मिल्ये तुम ही ज्यूँ ,नाम धरे कोइ वाको ?3

1:— कबीर साखी संग्रह, , पृ. 88

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—2, राग गौडी, शब्द—25, बे. प्रे इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

3:— अक्षयरस, भजन, 27—सुमिरन कौन करे? सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा प्रकाशित

लगातार सुमिरन करने वाले के अंतः करण के सब ख्याल निकल जाते है और उसकी जगह उसका प्रीतम समा जाता है । सब और वहीं प्रीतम होता है और सुमिरन के द्वारा मनुष्य प्रभु में समा जाता है ।

कबीर जी फरमाते है :–

पंच संगी पिव पिव करै ,छठा जु सुमिरे मंन।
आई सुति कबीर की , पाया राम रतंन।। 1–

इस तरह प्रभु का सुमिरन करते करते अहभाव निकल जाता है और जिधर देखे उधर तू अर्थात् परमात्मा ही परमात्मा नज़र आता है :

तूं तूं करता तूं भया, मुझ मैं रहीं न हूँ।
बारी फेरी बलि गई जित देखौं तित तूँ।। 2:–

दादू दयाल जी भी फरमाते हैं –

पर आतम सौं आतमा , ज्यौ पाणीं में लूँण।
दादू तन मन एक रसे , तब दूजा कहिये कूँण।। 3–

सुमिरन के द्वारा जीव की स्थित का वर्णन करते हुये अखा जी कहते हैं :

जब तुँहि मिल्या मुज मॉहॉं रे ।
अब तुहिं है ! हूँ नाहाँ रे। 4–

1:– क. ग्रं. सुमिरन कौ अंग, साखी 7, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का, ना, प्र, स,

2:– वही, साखी–9

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, परचा–166 बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74

4:– अक्षयरस, जकड़ी, 'घन ! घन ! मेरा आजु रे !, सं. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, म. स. वि. बड़ौदा द्वारा सन् 1965 ई.

गोस्वामी तुलसी दास जी भी सुमिरन का महत्व बताते हुये कहते है :

करेहु कल्प भरि राज तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।
पुनि मम धाम पाइहहु जहँ संत सब जाहिं ।। 1–

कबीर जी यही बात कहते हैं –

हरि को नाम तत त्रिलोक सार ,लौलीन भये जे उतरे पार । 2

दादू— सब घट मुख रसना करै ,रटै राम का नाँव ।
दादू पीवै राम रस ,अगम अगोचर ठाँव ।। 3–

सहजो बाई भी कहती है कि नाम रुपी नाव पर बैठ कर नाम का आश्रय ग्रहण करके पल मात्र में जीव भव सागर पार हो जाता है :–

सहजो नौका नाम है चढि के उतरो पार ।
राम सुमिरि जान्यो नहीं ,ते डूबैं मझधार ।। 4–

सुमिरन से जागृत समाधि का कुछ संकेत इग्लैंड के राज–कवि टेनीसन ने दिए है –

1:– मानस., 6–116 (घ)

2:– क. ग्रं. पद–380, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा

3:– दादू दयाल की बानी, भा–1, परचा–177, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74

4:– सं. वां. सं. , पृ. 41

"बचपन में जब कभी भी एकान्त में होता था ,मेरी एक प्रकार की जागृति समाधि लग जाती थी । यह अपने नाम के दो तीन बार चुप चाप सुमिरन करने से लग जाती थी । अपने नाम का सुमिरन करते हुये एकाएक अपने आप की चेतना की गहराई में अहंभाव का अभाव होने पर एक अथाव अस्तित्व में जाग उठता था । यह अवस्था बिल्कुल स्पष्ट थी ,स्पष्ट ,संदेह रहित, निश्चित और बुद्धि से भरपूर थी जिसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता , जहॉं पर मृत्यु असंभव प्रतीत होती थी और एक सचमुच के अमर जीवन की प्राप्ति होती थी । मैं अपने वर्णन की असंपूर्णता के लिये लज्जित हूँ । मैंने कहा है न कि यह अवस्था शब्दों वर्णन में आ सकने वाली नहीं थी ?"1–

सुमिरन एक बड़ा अनमोल साधन है । लेकिन उसकी प्राप्ति केवल पूर्ण गुरु के द्वारा ही हो सकती है और जो नाम सतगुरु देते है उसमें उनकी अपार शक्ति होती है । बन्दूक से निकली गोली

1:– कवि टेनीसनके संस्मरण

असर कारक होती है उसी प्रकार पूर्ण गुरु द्वारा दिया हुआ सुमिरन ही मुक्ति दिला सकता है । कबीर साहब बार–बार कहते है वही नाम लाभप्रद और जीव को अपनाना है जो सदगुरु देते है ।

सत नाम निज सोय, जो सदगुरु दाया करै ।
और झूठ सब होय ,काहे को भरमत फिरै ।।1–

कबीर जी फिर फरमाते हैं :–

सिमरि सिमरि हरिं हरि मन गाइये ।
इहु सिमरानि सतिगुरु ते पाइये ।। 2–
*　　*　　*
राम नाम लै पटंतरे देवे को कुछ नांहि ।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन मांहि ।। 3–

बिन गुरु ज्ञान नाम ना पैहो, बिरथा जनम गँवाई हो ।। 4–

परमात्मा की प्राप्ति का सहज मार्ग नाम का सुमिरन है । जो प्राणी सद्गुरु की समझाई युक्ति के अनुसार नाम का सुमिरन करता है ,वह एक दिन उसी नामी में समा जाता है ,जिसके नाम का वह सुमिरन करता है –

सुमिरन मारग सहज का ,सतगुरु दिया बताय ।
स्वासो स्वास जो सुमिरता, इक दिन मिलसी आय ।। 5–

1:– कबीर साखी संग्रंहख पृ. 11–129

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 971

3:– कबीर ग्रंथावली, गुरुदेव कौ अंग, साखी–4, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा

4:– कबीर साहब की शब्दावली भाग –3 ,बेलबीडियर प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पृ–20

5:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 90

दादू जी भी यही भाव प्रकट करते हैं :—

सॉस सॉस सँभालतॉं इक दिन मिलिहै आइ ।
सुमिरण पैंडा सहज का ,सतगुरु दिया बताइ ।। 1—

गोस्वामी तुससीदास भी यही भाव प्रकट करते हैं ।

भेद जाहि विधि नाम महँ, बिन गुरु जान न कोय ।
तुलसी कहहिं विनीत बर जौं बिरंचि शिव होय ।। 2—

स्वामी जी महाराज भी बड़े ही स्पष्ट शब्दो में इसकी पुष्टि करते हैं :

भेद नाम का जब तू पावै ।
सतसंग मे स्वामी के आवे ।। 3—

अखा जी का भी कथन है :—

प्रथम गुरु की पूजा करे पछे राम नाम हदे धरे ।। 4—

सुमिरन ही आध्यात्मिक साधना की नींव या आधार है । इसलिये संतों ने इसके महत्व पर विशेष जोर दिया है । गोस्वामी तुलसीदास अनेक पौराणिक घटनाओं का उल्लेख करके सुमिरन की अद्‌भुद महिमा और नाम के अमिट प्रभाव की ओर हमारा ध्यान दिलाते हैं ।

1:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, सुमिरन—6, बे. प्रेस. इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1863—74

2:— तुलसी सतसई 6,100

3:— सारवचन, पृ. 102

4:— छप्पा, फूटकल अंग—51, छप्पा 749

उलटा नामु जपत जगु जाना।
बालमीकि भए ब्रह्म समाना।। 1—
*   *   *
राम नाम नरकेसरी कनक कसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल।। 2—
*   *   *
नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदास।। 3—

संत दादू दयाल भी कहते हैं कि राम नाम के कहते ही करोड़ों पापी पावन हो गये हैं :

(दादू)निमिष न न्यारा कीजिये अंतर थैं उरि नाम।
कोटि पतित पावन भये ,केवल कहताँ राम ।। 4—

कबीर साहिब भी जीव को सावधान करते हुये कहते हैं :

कबीर निरभै राम जपि, जब लग दीवै बाति।
तेल घट्या बाती बूझी'तब' सोवैगा दिन राति।। 5—

1:— मानस, 2.193.4

2:— मानस, 1.27

3:— मानस, 1.26

4:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, सुमिरन—26, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963—74

5:— कबीर ग्रंथावली, सुमिरन—10, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा

कबीर सूता क्या करै ,जागि न जपै मुरारि।
एक दिनां भी सोवणां, लंबे पांव पसारि। 1—

अखा— कहे अखो ल्यो गोविंद गाई,तो मुक्त थइने महालीओ रे।। 2—

कबीर ,दादू एवं अखा आदि संतों ने सदगुरु द्वारा प्रदान किये गये नाम सुमिरन प्रेम और सच्चाई के साथ करने का जोर दिया है । मालिक के नामों के सुमिरन की बड़ी महिमा है । भाव—सहित सुमिरन करने से आत्मा को एक नशा—सा प्राप्त होता है जिसके द्वारा जीव शरीर और शारीरिकता को भूल जाता है ,हरि के नाम का सुमिरन कितना रसदायक और प्रभावशाली है । उसका सुमिरन करने वाले के अंदर आनन्द , शांति और आत्मिक शक्ति का प्रवाह आ जाता है और वह निहाल हो जाता है । ऐसे सुमिरन का प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता । सतगुरु द्वारा दिया गया सिमरन हमेंशा फलप्रद होता है । कबीर कहते हैं कि —

सुमिरन का हल जोतिये ,बीजा नाम जमाय।
खंड ब्रह्मंड सूखां पड़ै तहूँ न निस्फल जाय।। 3—

पुनः कबीर कहते हैं कि नाम का सुमिरन जब तक देह है तब तक कर ले वरना अंत में पछतायेगा—

लूटि सकै तौ लूटियौ राम नाम है लूटि।
पीछै ही पछिताहुगे ,यहु तन जैहे छूटि । 4—

1:— वही, साखी—12

2:— अखावाणी, पद—141

3:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 92—60

4:— क. ग्र. सुमिरण 25, सं. श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. स.

लूटि सकै तौ लूटियौ, राम नाम भंडार।
काल कण्ठ तै गहैमा ,रुँधे दसूं दुवार।। 1—

* * *

नाम लिया जिन सब लिया ,सकल वेद का भेद।
बिना नाम नरकै परा, पढ़ता चारों वेद।। 2—

दादू— (दादू) सब ही वेद पुरान पढ़ि, मेटि नाँव निरधार।
सब कुछ इन ही माहिं है ,क्या करिये विस्तार।।3—

* * *

निगम हिं अगम बिचारिये,तऊ पार न आवै।
ता थैं सेवक क्या करै ,सुमिरन ल्यौं लावैं।। 4—

* * *

दादू यहु तन पींजरा, माहीं मन सूवा।
एकै नॉव अलाह का ,पढ़ि हाकिज़ हूवा।। 5—

अखा जी भी दूसरे शब्दों में नाम का महत्व बताते हैं —

राम रत्न का पारखु एके बेर नीहाल।
ज्युं लुहां परसत पारसु हुआ सो हुआ लाल।। 6—

1:— वही, , साखी—26

2:— कबीर साखी संग्रह ,पृ, 86

3:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, सुमिरन—86, बे. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई

4:— वही, साखी—88

5:— वही, साखी—90

6:— साखियॉ, 48—राम परिक्षा अंग, साखी—6

स–ध्यान::–

ध्यान संस्कृत धातु 'ध्यै' से निकला है ,जिसका अर्थ है किसी के स्वरुप का चिंतन करना,स्मरण करना, जाप करना, ख्याल करना, सोचना और आत्मा को एक केंद्र पर एकाग्र करना । अतएव ध्यान से तात्पर्य देखने और सोचने का है। किसी स्थान पर मन को ठहराने को ध्यान कहते है ।

जब सिमरन के द्वारा चेतना शरीर से सिमट कर आँखों के केंद्र पर आती है तो वह स्वाभाविक रुप से वापस नीचे की ओर गिरने लगती है , क्योंकि इस केंद्र पर उसे कोई ऐसा आधार नहीं मिलता जिसके द्वारा वह यहाँ ठहरी जा सके । चेतनता को अंदर ठहराने के लिये संत ध्यान की विधि बतलाते हैं । सिमरन के समान ध्यान भी मन का स्वभाव है और जिस प्रकार मन को नौ द्वारों से हटा कर ऊपर लाया जाता है उसी प्रकार ध्यान भी मन को संसार के मोह और प्यार से छुड़ाकर अंदर प्रभु के प्यार की ओर ले जाता है ।

'आदि पुराण' में ध्यान को कर्मो का नाश करने वाला सबसे उत्तम साधन और सबसे श्रेष्ठ तप माना गया है । 1– इसमें कहा गया है कि जिस प्रकार वायु बादलों को उड़ाकर ले जाती है उसी प्रकार ध्यान से टकराकर कर्मो के बादल भी छूट जाते है । जिस प्रकार मंत्र की शक्ति शरीर के रोम रोम में फैले विष को बाहर खींच लेती है इसी प्रकार ध्यान कर्मो के विष को बाहर निकाल देता है । अतः मुक्ति के इच्छुक साधकों को सदा ध्यान का अभ्यास करना चाहिये। 2–

जन्म जत्मान्तरों से मन को संसार के पदार्थों और शक्लों के ध्यान की आदत पड़ी हुई है । संत कहते हैं कि जहाँ मन का ध्यान और प्यार होगा वही जाकर

1:– आदि पुराण, पर्व 21, श्लोक–7

2:– वही, श्लोक 213–15

जीव को जन्म लेना पड़ेगा । इसलिये संसार का प्यार बार–बार संसार में जन्म लेने का कारण बनता है ।

ध्यान चाहे किसी देवता की मुर्ति का हो या किसी महात्मा के चित्र का , जड़ का ही ध्यान है ,जो किसी जीव को जड़ जगत के बंधनों से नहीं छुड़ा सकता।

कबीर जी कहते हैं :

जहँ आसा तहँ बासा होई।
मन वच कर्म सुमिरे जो कोई ।।
देह धरे कीन्हेउ जिमि आसा।
अन्त आय लीन्हेउ तउँ वासा।। 1–

दादू– जिसकी सुरति जहाँ रहे , तिस का तहँ विस्राम।
भावै माया मोह में ,भावै आतम राम।। 2–

अखा जी भी दूसरे शब्दों में इसी बात की पुष्टि करते हैं :–

ध्यान दीसे ते जाग्ये जाय, तो खोटानो शो करे उपाय?
इन्द्र जाल विद्या कां मोहाय ? ए कर्तव्य छोकरडा जोय।। 3–

कबीर जी कहते हैं कि अनमोल मनुष्य जन्म पाकर साधक को चाहिये कि वह ऐसा ध्यान धरे कि उसे दुबारा जन्म लेकर किसी प्रकार का ध्यान न करना पड़े–

1:– अनुराग सागर, पृ. 41–38

2:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, मन कौ अंग, साखी–107, बे. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74

3:– छप्पा, विचार अंग, छप्पा 410

सो गुरु करहु जि बहुरि करना ।।
सो पदु रवहु जि बहुरि न रबना ।।
सो धिआनु धरहुँ जि बहुरि न धरना ।
ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ।। 1–

*   *   *

(दादू) साध सबै करि देखणां, असाध न दीसै कोइ ।
जिहि के हिरदै हरि नहीं, तिहि तन टोटा होइं ।। 2–

*   *   *

अखा एम धरिजे ध्यान ,आफणीये नीकळशे मान ।
बीजी ते मननी रोचना, अंतर जाइय न टळे शोचना ।।
परापार प्राणेश्वर नाथ,नहीं समझते ते घसशे हाथ । 3–

वास्तव में नाम के अभ्यास की दूसरी सीढ़ी ध्यान है जो सुमिरन से उत्पन्न होता है । अर्थात सुमिरन की गूढ़ अवस्था का नाम ध्यान है पर जब तक परमेश्वर को नहीं देखा मनुष्य किसका ध्यान करे ? वैसे संसार के समस्त ध्यानों में सर्वश्रेष्ठ ध्यान केवल परमात्मा का ध्यान है ? लेकिन परमात्मा का ध्यान असंभव है क्योंकिः–

बिनु पेखे कहु कैसे धिआनु ।। 4–

मनुष्य में वह मनुष्य जिसने अंदर परदा खोलकर अपना तार परमात्मा के साथ जोड़ लिया है ,वे ही हमारी पूजा और ध्यान के योग्य है ।

1:– आदि ग्रंथ, गउड़ी, कबीर जी, पृ. 327
2:– धारा, वही, सारग्रही कौ अंग, साखी–17
3:–छप्पा, 48–शोधन अंग, छप्पा–580
4:– आदि ग्रंथ,भैरव महल्ला–5, पृ. 1140

इसलिये संतों की वाणियों में पहले गुरु का—जो परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ मनुष्य है —बाहरी ध्यान करना सफलता का साधन कहा गया है :

सकल मुरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना।। 1—

* * *

अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ। 2—

कबीर जी कहते है कि देह स्वरुप सतगुरु वह दर्पण है जिसमें निराकार प्रभु का प्रतिबिम्ब मौजूद है , अगर उस प्रभु को देखना है तो उसे संतो में ही देख :

निराकार की आरसी ,साधो ही की देहि।
लखा जो चाहे अलख को ,इनही में लखि लेहि।। 3—

* * *

सुखु पाइआ सतिगुरु मनाइ।
सभ फल पाए गुरु धिआइ। 4—

दादू— पर उपगारी संत सब ,आये यहिं कलि माहिं ।
पिवै पिलावैं राम रस , आप सवारथ नाहिं।। 5—

1:— आदि ग्रंथ , देवंगधारी, महल्ला'5, पृ. 531

2:— आदि ग्रंथ सारंग, महल्ला—5, 1208

3:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 119—31

4:— आदि ग्रंथ्र, पृ. 1141

5:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, साध कौ अंग, साखी—51, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

जलती बलती आतमा, साध सरोवर जाइ।
दादू पीवै राम रस ,सुख में रहै समाइ।। 1–

*　　　*　　　*

(दादू) लीला राजा राम की, खेलैं सब ही संत।
आपा पर एकै भया ,छूटि सबै भरंत।। 2–

अन्य स्थान पर कबीर जी कहते हैं सच्ची भक्ति और पूजा गुरु की पूजा है ,सच्चा नाम गुरु के द्वारा दिया हुआ नाम है ,सच्चा ध्यान गुरु के स्वरुप का ध्यान है ,तथा सच्चा प्रेम ही अन्तिम सत्य है ।

कबीर मूल ध्यान गुरु रुप है ,मूल पूजा गुरु पाँव।
मूल नाम गुरु वचन है ,मूल सत्य सतभाव।। 3–

स्वामी जी महाराज गुरु के ध्यान को मुक्ति का साधन मानते हैं ।

गुरु का ध्यान कर प्यारे ,बिना इसके नही छूटना । 4–

अखा–　　प्रभु पमेवा मारग एक :सइगुरु शरणे ज्ञान विवेक।। 5–

केवल संतों ने ही गुरु के ध्यान को महत्व नही दिया है बल्कि वेद, उपनिषद गीता एवं अन्य धर्मो में ही गुरु के ध्यान को स्वीकारा है :

1:– वही, साखी–66

2:– वही, साखी–77

3:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 4–43

4:– सारवचन, पृ. 143

5:– साखियाँ, सामदृष्टि अंग, साखी–15

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है –

"जो जिस प्रकार मुझे भजता है मैं उसी प्रकार उसे भजता हूँ ।"

ये यथा मा प्रपद्यन्ते तास्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वार्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ।। 1–

फिर गीता में बताया गया है कि जो श्रद्धा पूर्वक किसी का ध्यान और उपासना करता है वह उस जैसा ही हो जाता है –

सत्वानुरुपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारतः ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ।। 2–

इस प्रकार गीता में लिखा है "मेरी याचना करने वाले मुझमें ही आ मिलते है ।"

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानियान्ति भूतेज्यायान्ति मद्याजिनोऽपिमाम् ।। 3–

कठोपनिषद में मनुष्य के शरीर की रथ से उपमा दी गई है । इस शरीर रुपी रथ में इन्द्रियाँ रुपी घोड़े जुते हुए है ,जो अडियल टट्टू के समान विषय–भोगों की ओर दौड़ने का प्रयत्न करते हैं । मन लगाम है ,जिसको खींचे रखने में ही भलाई है । पर चंचल मन को वश में करना कोई सरल कार्य नहीं । गीता इसका इलाज गुरु का ध्यान बतलाती है ।

1:– गीता, 4–11

2:– गीता, 17–3

3:– गीता, 9–25

प्रशांतात्मा विगतभीर्बहमचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चिन्तो युक्तः आसीत् मत्परः।।1

* * *

यतो यतो निश्चरति मन श्चांचलम्स्थिरम्।
ततस्ततो नियम्येतदात्मन्वेव वशं नयेत्।।2–

श्वेताश्वर उपनिषद तथा भग्वद्गीता में शुचिता और पवित्रता को ध्यान आसन आदि के लिये प्रधान माना गया है ।

त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरं,
हृददीन्द्रियाणि मानसा संनिवेश्य।
ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत विद्वान्,
स्रोतांसि सर्वाणि भयावहानि।।3–

* * *

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्।।4–

पतांजलि भी योगसुत्रों में बताते हैं कि सांसारिक मोह से रहित पुरुषों का ध्यान करने से मन को स्थिरता प्राप्त होती है ।

वीतराग विषयं वाचिन्त।
यथाभिमत ध्यानां विधा।।

1:– गीता, 6–14

2::– गीता, 6–26

3:– श्वेताश्वतरोपनिषद, 2–8

4:– गीता–6–11

महात्मा ईसा मसीह ने भी सतगुरु के ध्यान को ही महत्व दिया है ।
"जिसने मुझे देखा है ,उसने परमपिता को देख लिया है ।" 1–

थियोसाफी (ब्रह्म विद्या) वाले भी कहते हैं कि रुहानी पुरुषों (पूर्णता प्राप्त आत्माओं) का नूर आंतरिक रुहानी सूक्ष्म देशों में दूर दूर तक जाता है । इस स्वरुप के प्रकट होने पर शिष्य की आधी भक्ति हो जाती है ।

सूफी फ़कीरों ने भी मुर्शिद या गुरु का ध्यान करने पर जोर दिया है । ख्वाजा हाफ़िज ध्यान की पूर्णता का वर्णन करते है ।
"जब मुर्शिद का रुप मेरे हृदय में स्थिर हो गया तो आदि और अंत सब भेद मुझ पर प्रकट होगया। —ऐ प्रियतम्, जब अभ्यास में मैंने तेरी सुरत के अंतर को धारण कर लिया तो मेहराब * तेरी पुकार से गूंज उठी।"

गुरु का धन केवल आध्यात्मिक दृष्टि से ही उत्तम नहीं है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से देखे तो भी वह मनुष्य के लिये उत्तम है ।

पश्चिम में एक नवीन यन्त्र का आविष्कार हुआ ,जिसके द्वारा किसी महात्मा का फोटो ग्राफ देखकर यह पता लग सकता है कि यह महात्मा जीवित है या नहीं । ब्रिटेन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ई. एस. श्रेप्नेल स्मिथ,जो रसायन शास्त्र के विद्वान है उन्होंने कहा है ,

" जिन्दगी से रेडियो स्टेशन की भाँति एक विशेष प्रकार की तरंगे या धारायें निकलती है । ये मनुष्य जीवन की तरंगे चलकर फोटो ग्राफ की प्लेट पर जम जाती है । जब तक कि वह मनुष्य जिसका फोटो ग्राफ है ,जीवित रहता है तब तक वे तरंगे (उसके फोटो से) सजीव होकर निकलती प्रतीत होती है । जब वह मर जाता है ,चाहे वह मनुष्य कितनी ही दूर क्यों न हो

1:– जॉन, 14:9

* :– गुम्बदः मुस्लिम संतों ने मस्तक को शरीर रुपी मेहराब कहा है ।

फोटोग्राफ की प्लेट से वे तरंगे निकलना बंद हो जाती हैं । मैं इस समय यह नहीं कह सकता कि इस यंत्रों में क्या है , पर इतना अवश्य है कि यह यंत्र रेडिएशन ,मेगनेटिज़म, स्टेटिक, इलेक्ट्रिसिटी तथा करंट इलेक्ट्रिसिटी के सिद्धातों पर बना है । इसमें कोई आत्मिक अथवा अजीब बात नहीं है । यह विज्ञान के नियमों के प्रयोग का फल है ।" 1–

इसलिये गुरु का ध्यान सबसे पहले होता है क्योंकि हम उनको देखते है।

हिन्दुओं में त्राटक क्रिया भी ध्यान का साधन है । कई लोग प्राचीन अवतारों के चित्रों का या उनकी मुर्ति का ध्यान करते है । यह जड़ एवं निर्जीव ध्यान है । मूर्ति निर्जीव है वह सजीव को नहीं खींच सकती । अतएव चित्र भी हमें नही खींच सकता। चेतन का ही ध्यान चेतन को खींच सकता है । जो स्वयं आत्मिक मण्डलो पर जाता है, वही हमको भी खींच कर ले जा सकता है, प्राचीन अवतारों के चित्र या उनकी मूर्ति उनकी याद ताजा करा सकते है ,पर वे हमको वह वस्तु नहीं दे सकते हैं जो हमें जीवित महात्मा प्रदान कर सकते है। कबीर जी ने यह बात विविध उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट की है :

राम के कहे जगत तरि जाई, खाँड कहे मुख मीठा।
पावक कहे पाँव जो जरई, जल कहे त्रिषा बुझाई।
भोजन कहै भूख जो भागै ,तब दुनिया तरि जाई।।
बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई ।
धन के कहे धनी जो होई , निरधन रहै न कोई।।
साँची हेत विषै माया से, सतगुरु सबद की हाँसी।
कहै कबीर गुरु के बेमुख ,बाँधे जमपुर जाही।। 2–

1:– न्यूयार्क अमेरिकन अखबार 30 मार्च, 1933 का अंक

2:–कबीर साहब की शब्दावली, भाग–3, शब्द–21, बे. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1989 ई.

दादू— मिसरी —मिसरी कीजिये,मुख मीठा नाहीं।
मीठा तबही होइगा,छिटकावै मांहीं।। 1—

निर्जीव की पूजा का तो गुरुवाणी में भी निषेध है :

भरमि भूले अगियानी अंघुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै।
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि, सब बिरथी घाल गवावै।। 2—

अखा जी भी कहते हैं कि पिछले अवतारों की पूजा तो सब करते है लेकिन वास्तविकता कोई नही जानता :

पहिली पिछली सबे बखाने ।
पण ! ज्यूँ का त्यूँ मीतम नहीं जाने ! 3—

इसलिये कबीर आदि संतों ने गुरु के ध्यान को बहुत महत्व दिया है । गुरु का मन निश्चल है उनका ध्यान करने से शिष्य का मन भी निश्चल होता है। गुरु के अंतर में परमात्मा की याद बसती है । गुरु के बाहरी सुमिरन और ध्यान से शिष्य में भी अपने आप परमात्मा की याद बसती है । इसके अलावा देह स्वरुप सतगुरु मनुष्य के ही स्तर पर है मनुष्य उन्हें देख सकता है ,उनसे बात—चीत कर सकता है ,उनकी भक्ति करके उनकी प्रेमपूर्ण कृपा पा सकता है। परमात्मा अलख और अगोचर है तथा जब तक मनुष्य के देह में बैठा है उससे किसी प्रकार संपर्क नहीं कर सकता । इसलिये कबीर "हरि ,हरिजन दोउ एक है" ही नही कहते है बल्कि घोषणा करते हैं कि हरिजन अथवा संत प्रभु से भी बड़े हैं —

1:— दा. द. की बा. भाग 1, माया को अंग, साखी 89, बे. प्रे. , इला. द्वारा प्र. 1989

2:— आदि ग्रंथ, मलार, महल्ला—4, पृ. 1264

3:— जकड़ी, 36— पहली पिछली सबे बखानै

हरि सेती हरिजन बड़े, समझि देखु मन माहिं।
कह कबीर जग हरि बिखे, सो हरि हरिजन माहिं।। 1—

दादू— (दादू) मन फकीर सतगुरु किया ,कहि समझाया ज्ञान।
निहचल आसणि बैसि करि, अकल पुरुष का ध्यान।। 2—

*   *   *

जहां राम तहँ संत जन, जहँ साधू तहँ राम।
दादू दुन्यूँ एकठे ,अरस परस विसराम।। 3—

*   *   *

साध समाणा राम में ,राम रह्या भरपूरि।
दादू दून्यूँ एक रस ,क्यों करि कीजै दूरि।। 4—

*   *   *

साधजन जन उस देस का ,को आया यहि संसार।
दादू उस कूँ पूछिये, प्रीतम के समचार।। 5—

अखा— मोटम दीधी हरिजन खमे,हरि—शुं बोले हरि—शुं रमे,
जनने दीठे हरि सांभरे तो जो हरिजन केडे फरे।
ज्यम दीवे समरस उजास, त्यम अखा हरि ने हरिदास।। 6

*   *   *

सादगुरु मारग सदा अलग,ज्यम पंखीनै गत्य सळंग।
पंग न पड़े ने पंथ कपाय, सदगुरु —मार्ग उपरछलो जाय।। 7

1:— कबीर साखी संगह, पृ. 124—90

2:— दा. द. की बा. भाग 1, गुरुदेव 71, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रकाशित सन् 1984 ई.

3:— वही, परचा 181, 4:— वही, साखी 184, 5:— वही साध्य का अंग,साखी 94

6:— छप्पा, 23, जीव ईश्वर अंग, छप्पा 202, 7:—वही, 26 आदोष अंग छप्पा 225

द– धुन::–

सुरत –शब्द योग के प्रथम दो साधनों (सुमिरन और ध्यान) के पूर्ण हो जाने पर धुन का तीसरा साधन उत्पन्न होता है । मन और आत्मा जब सिमरन के द्वारा सिमट कर आखों के केंद्र पर आते है तथा ध्यान द्वारा यहाँ ठहरते है तब वे इस स्थान पर शब्द के संपर्क में आते हैं । इसको संतों की भाषा में भजन कहा जाता है । भजन और कुछ नहीं केवल शब्द–ध्वनि को सुनना ही है ,अधिकांश संतों के अनुसार भजन केवल शब्द योग का अभ्यास ही है यह सुरत द्वारा किया जाता है । इसे सुरत शब्द योग का मार्ग कहा जाता है यह सुमिरन योग और ध्यान–योग दोनों से ऊपर है । सुमिरन में परमात्मा की याद करनी पड़ती है और ध्यान परमात्मा के नर– रुप गुरु के स्थूल, नूरी तथा शब्द स्वरुप को स्थिर कर लेना पड़ता है । इन दोनों साधनों को करके सुरत द्वारा शब्द में जुड़ना पड़ता है । तथा शब्द से जुड़ कर आंतरिक मंडलों में होते हुये शब्द के स्रोत परमात्मा तक पहुँचा जाता है।

यद्यपि शब्द की पूरी शक्ति और मिठास का अनुभव अंदर जाने पर ही होता है ,सद्‌गुरु से दीक्षित शिष्य अपने अभ्यास की शुरुआत में शब्द को सुनना शुरु कर देता है । पूरे गुरु जो शब्द के ही रुप होते हैं ,शिष्य की आत्मा को दीक्षा देते समय शब्द के साथ जोड़ देते हैं ।

कबीर कहते हैं कि सदगुरु ने मुझ पर अपार कृपा करके ऐसा अमर शब्द प्रदान किया है ,जिसके फलस्वरुप मैं अन्तर के शीतल और सुखमय लोकों में पवित्र आत्म–रुप में आनन्द ले रहा हूँ –

सदगुरु मोहिं निवाजिया,दीन्हा अम्मर बोल।
सीतल छाया सुगम फल ,हंसा करै कलोल।। 1–

1:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 10 111

सतगुरु सांचा सूरिवाँ, सबद जु बाह्या एक।
लागत ही मै मिल गया ,पड्या कलेजे छेक।। 1—

दादू— साचा सहजैं ले मिलै सबद गुरु का ज्ञान ।
दादू हम कूँ ले चल्या, जहँ प्रीतम (का) अस्थान ।। 2—

* * *

(दादू) सबद बान गुर साधि के दूरि दिसंतरि जाई।
जेहि लागे सो ऊबरे ,सूते लिये जगाय।। 3—

संतों के द्वारा बताये गये रुहानी अभ्यास का खास उद्देश्य शिष्य को अन्तर में शब्द की आवाज और रोशनी के साथ जोड़ना है । सदगुरु द्वारा दी गई दीक्षा का यह सबसे जरुरी अंग है ।

कबीर कहते हैं :—

गुरु तो ऐसा चाहिये, देवै सबद लखाय।। 4—

अखा जी भी कहते हैं ।

साधो परचा शब्द का सांईयां होये हजूर।
शब्द सोहागा वस्तका अखा गेहेन करे दूर।। 5—

1:— कबीर ग्रंथावली, गुरुदेव कौ अंग, साखी—17, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, गुरु देव—22, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई

3:— वही, साखी—24

4:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 13—9

5:— साखियाँ, 11—शब्द परिक्षा अंग, साखी—1

अखा सागर ब्रह्म का मथे संत के साध्य।
शब्द रतन तांहॉ प्रकटे सो चढ़े पारयष के हाथ्य। 1—

धुन में आवाज और प्रकाश है । धुन में अनहद का गर्जन हो रहा है ,यह अनहद का रुन—झुन है जो निरंतर सुनाई देता है जिसके रस को पाकर मन स्थिर होता है :—

धुनि बाजे अनहद घोरा।।
मनु मानिया हरि रसि मोरा।। 2—

सिमरन और ध्यान की पूर्णता पर आत्मा शब्द के सीधे संपर्क में आती है। शब्द के मिठास और प्रकाश का आनन्द केवल अनुभव की चीज है ।

भीखा साहिब के शब्दो में :—

सब्द प्रकास दियो गुरु दान। देखत सुनत नैन बिनु कान।।
जा के सुख सोइ जानत जान। हरि रस मधुर कियो जिन पान।। 3—

*   *   *

कबीर सहजेही धुन होत है हर दम घट के माहिं।
सुरत सबद मेला भया, मुख की हाजत नाहिं।। 4—

1:— साखियाँ, 40 उपदेश अंग, साखी—17

2:— आदि ग्रंथ, रामकली, महल्ला—1, 879

3:— भीखा साहिब की शब्दावली, पृ. 55—3,4

4:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 89—24

दादू— अंतरगति हरि हरि करै, तब मुख की हाजत नाहिं।
सहजै धुनि लगी रहै, दादू मन ही माहिं।। 1—

* * *

स्वात बुंद सतगरु शब्द जिज्ञसु जन सीप।
ताहाँ आपा जल सुत नीपजै अखा शब्द कुं जीप।। 2—

सच्चे शब्द से सहज की धुन या गूँज उत्पन्न होती है जिसके द्वारा सच्चे परमात्मा के साथ मन लग जाता है ,जिसमें से अमृत की एक रस धारा प्रवाहित होती है जो उसके साथ जुड़ते हैं वे इस अमृत का पान करते हैं ,उनका मन द्रवित होकर रस—विभोर हो जाता है और वे निज—धर पहुँच जाते हैं ।

गुरुवाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज धरि आवैगो।
तह अनहत धुनी बाजहि निज बाजे नीझर चुआवैगो।। 3—

अभ्यास की एक गूढ़ अवस्था में तन और मन स्थिर हो जाते हैं ,सुरत शब्द की धुन में और निरत उसके प्रकाश में लीन हो जाते हैं । और इस एक क्षण के आनन्द की बराबरी युगों तक स्वर्गों के निवास का सुख नहीं कर सकता।

तन थिर मन थिर वचन थिर ,सुरत निरत थिर होय।
कह कबीर इस पलक को ,कलप न पावै कोय।। 4—

1:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, परचा—171, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963—74

2:— साखियाँ, 11—शब्द परिक्षा अंग, साखी—2

3:—आदि ग्रंथ, कानड़ा, महल्ला—4, पृ. 1304

4:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 89—26

दादू दयाल जी भी फरमाते हैं :

निहचल का निहचल रहे ,चंचल का चलि जाइ।
दादू चंचल छाड़ि सब, निहचल सौं ल्यौं लाइ।। 1–
*　　　*　　　*
साई साचा नाँव दे ,काल झाल मिटि जाइ।
दादू निरभै है रहे ,कबहूँ काल न खाइ।। 2–

अखा– जिनु पाया जे पावही, अब पावत है जेह।
नुकता एक है शब्द का ,अखा होय विदह।। 3–

नाम या शब्द के अभ्यास से मन पवित्र होता है और अभ्यासी के आंतरिक –मार्ग की बाधाएँ नष्ट हो जाती है । शब्द के अभ्यास से संचित कर्मो का विशाल ढ़ेर जो कि जन्मान्तरों से त्रिकुटी में जमा हो रहा है ,भस्म हो जाता है –

कबीर सतगुरु नाम से ,कोटि विधन टरि जाय।
राई समान बसंदरा, केता काठ जराय।। 4–
*　　　*　　　*
(दादू कहै) साई को सँभालतॉ, कोटि बिघन टलि जाहिं।
राई मान बसंदरा, केते काठ जलाहिं।। 5–

1:– दा. द. की बा., भा 1, निहकर्मी पतिव्रता– 27, बे. प्रे. इला. द्वा. प्र. सन् 1964 74

2:– वही, बिनती 52

3:– साखियॉ, 11–शब्द परीक्षा अंग, साखी–5

4:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 86–40

5:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, निहकर्मी पतिव्रता, 97, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74

धुन कहाँ से प्राप्त होती है ?–

यह धुन की संपत्ति ग्रंथों के पठन पाठन से नहीं मिल सकती , ग्रंथों–पोथियों में तो केवल इस धुन का वर्णन ही है । हम चाहे चारों वेद ,अठ्ठारहों पुराण और छहों दर्शन पढ़ या सुन ले पर यह सब विद्या भी गोविंद के नाम की धुन के तुल्य नहीं हो सकती–

चारि बेद जिहव भने दस असट खसट स्रवन सुने ।।
नहीं तुलि गोबिंद नाम धुने मन चरन कमल लागे ।।1–

* * *

जप तप दीसैं थोथरा ,तीरथ ब्रत बेसास ।
सूबै सैंबल सेविया,यौं जग चल्या निरास ।। 2–

* * *

जोगी जंगम सेवड़े, बौध सन्यासी सेख ।
षट दर्शन दादू राम बिन, सबै कपट के भेख ।। 3–

* * *

छह दरसन छयानवै पाषंड, आकुल किनहूँ न जाना ।।
जप तप संजम पूजा अरचा जोतिग जग बौराना ।।
कागद लिखि –लिखि जगत भुलाना, मन ही मन न समाना ।।
कहै कबीर जोगी अरु जंगम,ए सब झूठी आसा ।
गुर प्रसादि रटौं चात्रिग ज्यूँ ,निहचै भगति निवासा ।। 4–

1:– आदि ग्रंथ , सारंग , महल्ला–5, पृ. 1229

2:– कबीर ग्रंथावली, , 23– भ्रम विधौसण को अंग, साखी–8, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, भेष को अंग, साखी–33, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, 1963 74

4:– क. ग्रं., राग गौडी, पद 34, सं. श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

तेर कांड मायानुं जाळ, कर्म फळ ने जीव ईश्वर काळ,
ए सबै घाट बेसार्यु वेद, त्रि–पद कल्पी कीधा भेद।
अखा अटके नहि ते तेर, जे चौद बोली चाल्यो सं ु सेर।।1–

नाम की धुन मनुष्य के अंदर हो रही है । यह धुन हृदय में सदैव दिन रात हो रही है ,वह निश्चल है जो परमात्मा के इस घर में आ जाने का चिन्ह है।

खटु मटु देही मनु बैरागी।।
सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी।। 2–

बिमल बिमल अनहद धुनि बाजै,
समुझि बरै जब ध्यान धरै ।। 3–

दादू जी का भी कथन है:–

काया माहैं सिरजन हार। काया माहैं ओंकार।। 4–

1:– छप्पा, 44–वेद अंग, छप्पा–504

2:– आदि ग्रंथ, रामकली, महल्ला–1, 903

3:– कबीर साहिब की शब्दावली, भाग–4, राग कहरा, शब्द–2, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित , सन् 1990 ई.

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–2, ग्रंथ काया बेली, पद–357, बेलबीडियर प्रेस, इलाहाबाद द्वारा संपादित, सन् 1990 ई,

च—गुरु::—

परमार्थ का मार्ग सुगम नहीं अति कठिन है । कठोपनिषद में आया है :

उत्तिष्ठत जाग्रतः प्राप्य वरान्निवोधत ।।
क्षुरस्य धारा निशिना दुरत्यया,
दुर्गमपथस्तत् कतर्या वदन्ति ।। 1

उठो, जागो महपुरुषों के पास जाकर उनसे प्राप्त करो, बुद्धिमान लोग कहते हैं कि यह मार्ग छुरी की धार की तरह तीक्ष्ण और विकट है तथा इसपर चलना कठिन है ।

कुरान शरीफ़ में इसको 'पुल सिरात' कहा है जो उस्तरे की धार की भाँति तीखा और बाल से भी बारीक है । वेदों—शास्त्रों में भी यम—नियमों की कठिन विधियों तथा संयमों को पढ़कर रौंगटे खड़े हो जाते है ।

हज़रत ईसा ने भी कहा है :

"गिरना बहुत आसान है और तबाही का रास्ता बहुत चौड़ा है । लेकिन अमर जीवन की राह बहुत कठिन और तंग हैं । 2—

संत कबीर ने भी कहा है :

कबीर भाठी कलाल की ,बहुतक बैठे आइ ।
सिर सौंपे सोई पिवै ,नहीं तो पिया न जाई । 1—

1:— कठ,—14

2:— मेथ्यू, 7:13—14

3:— कबीर, कबीर वाणी, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पद—190, पृ. 277, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1987 ई.

कबीर मारिग कठिन है ,कोई न सकई जाइ।
गये ते बहुड़े नही ,कुसल कहै को आइ।। 1—

दादू— मस्तक मेरे पाँव धरि, मंदिर माहैं आव।
सइयाँ सोवै सेज पर, दादू चंपै पाँव।। 2—

अखा — शिर साटे साहब मळे ते नो धेखो न धरिये रे।
जो शिर दिए आपणुं ,आपो मूकीने मळीए रे। 3—

*   *   *

ब्रह्मरस ते पिये जे कोई आपत्यागी होय। 4—

गुरु अमरदास भी कहते हैं कि प्रभु के भक्तों को तलवार की धार से तीक्ष्ण और बाल से भी बारीक राह पर चलना पड़ता है ।

खनिअहु तिखी बालहु निकी एतु मारिग जाणा।। 5—

फिर कहाँ अकेला निर्बल और सामर्थ्यहीन , मोह—माया का शिकार, तुच्छ—जीव, और कहाँ पाँच बली शत्रु (काम, कोध, मोह ,लोभ, और अहंकार), मनुष्य भवसागर से पार हो तो किस प्रकार ?

1:— क. ग्रं. , सुषिम मारिग कौ अंग, साखी 6, सं. श्यामसुंदर दास, का.ना. प्र. स.

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, परचा को अंग, साखी 276, बे.प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित, सन् 1984 ई.

3:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—2, 58— आत्मविचार ब्रह्मविचार, राग रामग्री, पद— 132, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा सं. सन् 1983 ई.

4:— वही, पद 69

5:— आदि ग्रंथ, पृ. 914

इसका उपाय सभी धर्म ग्रंथों में एक ही बताया है । परमात्मा का ध्यान करने वाले गुरु या संत परमात्मा के रुप हो जाते हैं । जिस प्रकार समुद्र की लहर ,देखने में समुद्र से अलग रहती है ,परंतु उसका मूल आधार सदा समुद्र में होता हैं ,उसी प्रकार परमात्मा के सच्चे भक्त शरीर के कारण परमात्मा से भिन्न लगते हैं परंतु अंतरात्मा से वे सदा परमात्मा से अभेद होते हैं । जब हम ऐसे गुरु या संत की शरण लेते हैं जिनकी लगन परमात्मा से जुड़ी हुई है तो हमारी लगन भी सहज ही में परमात्मा और उसके नाम से जुड़ जाती है ।

हरि का सेवकु सो हरि जेहा ।।
भेद न जाणहु माणस देहा ।।
जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती ।
फिरि सललै सलल समाइदा ।।1–

शब्द स्वरुप होने के कारण संत–जन परमात्मा की भाँति आदि और अंत से परे है इसलिये जो कोई परमपिता का दर्शन करना चाहे ,संतो की देही के दर्शन कर ले ।

सब्द सरुप सतगुरु अहैं ,जाका आदि न अंत ।। 2–

*　　*　　*

निराकार की आरसी, साधो ही की देहिं ।
लखा जो चाहे अलख को ,(तो) इनही में लखि लेहि ।। 3–

अन्य स्थान पर कबीर साहिब कहते हैं कि कबीर राम रुपी कस्तूरी में समा कर उसका रुप हो चुका है । जो सेवक कबीर की भक्ति करते हैं उनका

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 1076

2:– कबीर , अखरावती, पृ. 3

3:– कबीर साखी, पृ. 111

कबीर के द्वारा राम में निवास होता जा रहा है ।

कबीरु कसतूरी भइआ भवर भए सभ दास।।
जिउ–जिउ भगति कबीर की तिउ–तिउ राम निवास।।1–

दादू साहिब कहते हैं कि संत साई में समाये हुए होते हैं और साई संतों में समाया हुआ होता है :

(दादू) सेवा साई का भया, तब सेवग का सब कोइ।
सेवक साई कौ मिल्या, तब साई सरिख़ा होइ।। 2–

अखा जी भी कहते है :–

अखा काठ के नाव विन्या, कोई न पावै पार।
त्यों हरिजन सेवे वीन्या छुटे नहीं संसार।। 3–

महर्षि पतंजलि योगदर्शन–4 में कहते है कि वीत–रागी(वैरागी) पुरुष के ध्यान द्वारा मन स्थिर हो कर साम्य–अवस्था के लिये तैयार हो जाता है । 4–

ईसा समझाते हैं कि जब तक कोई परमात्मा में से न आया हो यह किसी को परमात्मा के पास नहीं ले जा सकता । 5– वे कहते हैं "मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है 6– और आप मुझमें हो । 7–

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 1371

2:– दा. द. की. बा. भाग 1, परचा 185, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित

3:– साखियाँ, 20–समदृष्टि अंग, साखी–7

4:– पतंजलि, योग दर्शन, 1:37

5:– जॉन 3:13

6:– जॉन 14:11

7:– जॉन 14:20

अन्य स्थान पर ईसा कहते हैं :

मैं ही आरंभ और अंत हूँ, जो कोई जीवनमयी अमृत की प्यास लेकर मेरे पास आयेगा, मैं उसको मुफ़्त में यह अमृत दूँगा । वह मेरा पुत्र होगा और मैं उसका परमात्मा हुँगा और वह मेरी प्रत्येक वस्तु का उत्तराधिकारी होगा। 1–

परमात्मा निराकार सर्वव्याप्त है पर उसके सर्वव्यापक होने पर भी जब तक उससे हमारा संबंध न हो जाये हमे उसका कोई गुण प्राप्त नहीं होता । बिजली सब जगह परिपूर्ण है पर उससे कोइ लाभ नहीं हो सकता जब तक उस स्विच से जहाँ कि वह प्रकट है संबंध नही हो जाता । बिजली से संबंध होने पर भी जब तक बल्ब न लगा हो बिजली प्रकाश नही देती, जब उसके साथ संबंध हो जाए तब बिजली हमारे काम करती है ,हमारे अंधेरे मकानों में रोशनी करती है । इसी प्रकार हमारा उस परमात्मा से संबंध हो जाये तब हमारा काम बन सकता है । सदगुरु उस परमात्मा का स्वरुप है वह देहधारी शब्द है। परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिये किसी देहधारी पूरे गुरु या पूर्ण संत की आवश्यकता क्यों होती है ,इसे समझाने के लिये इस बात को भली भाँति मन में बैठा लेना आवश्यक है कि पूर्ण संत या सच्चे गुरु परमात्मा के ही व्यक्त रुप होते हैं । सच्चे गुरु और परमात्मा के बीच कोई अन्तर नही होता। जब साधू या संत सतगुरु के रुप में प्रकट हुआ परमेश्वर जीवात्मा से प्रेम करता है तो उसके अंदर सोया परमेश्वर का प्रेम अकस्मात जाग उठता है ,और

1:– I am alpha and omega, the beginning and the end. I will given unto him that is athirst of the fountain of water of life freely. He that evercometh, shall inherit all things , and I will be his God and he shall be my son.
(Rev. 21:6.7)

इस प्रकार गुरु रुप में प्रकट हुए प्रत्यक्ष –परमेश्वर का प्रेम निर्गुण ,निराकार के प्रेम में बदल जाता है ।

संत –सतगुरु निराकार के साकार रुप है । पूर्ण साधू, नर–हरि, या हरि–नर होता है वह एक ही समय मे मनुष्य के स्तर पर भी होता है और साथ ही परमात्मा के स्तर पर भी इसलिये केवल वही जीवात्मा को मनुष्य के स्तर से परमात्मा के स्तर पर ले जा जा सकता है ।

कबीर साहिब दूसरे शब्दों में यह प्रकट करते हैं :–

सब तत्तन मॉ संत बड़े हैं , सब्द रुप जिन देहियॉं ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो , सतरुप वहि जानियॉं ।। 1–

* * *

भोलै भूली खसम कै, बहुत किया विभचार ।
सतगुरु गुरु बताईया, पूरिबला भरतार ।। 2–

दादू– सबद दूध, घृत राम रस, मथि करि काढ़े कोइ ।
दादू गुर गोविंद बिन, घट घट समझि न होइ ।। 3–

* * *

(दादू) सतगुरु ऐसा कीजिये, राम रस्म माता ।
पार उतारै पलक में ,दरसन का दाता ।। 4–

1:– कबीर साहिब की शब्दावली, भाग–1, चितावनी और उपदेश , शब्द–10, पद–7, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित, सन् 1986 ई,

2:– कबीर ग्रंथावली, पीव पिछावन कौ अंग, साखी–3, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रसारिणी सभा वाराणसी

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव– 30, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई.

4:– वही, साखी–50

अखा— तन मन धन सब वारीयै जो कोई दे ब्रह्मज्ञान।
जीव टाली स्वे शीव करे सदगुरु दे अभेदान।। 1

*   *   *

अखा जक्त सब आत्यमा सो भेदो कु भोग।
पण जीव हरी कु तब मीले जब सदगुरु मीलाये जोग।। 2

पलटु साहिब का कथन है :—

संत हमारे प्रान रहौं मैं साध में।
तीन लोक सब रहै संत के हाथ में।। 3—

गोस्वामी तुलसीदास जी भी स्पष्ट कहते हैं कि उन्होंने असीम और अपार परमात्मा की जानकारी संतों से ही प्राप्त की है और वे उसे ही हमें सुनाना चाहते हैं :—

रामु अमित गुन सागर थाह कि पावइ कोइ।
संतन्ह सन जस किछु सुनउँ तुम्हहि सुनायउँ सोइ।। 4—

गुरु नानक देव जी का कथन हैं :—

साध रुप आपणा तनु धारिया।
महा अगनि ते आप उबारिया।। 5—

1:— साखियाँ, 40— उपदेश अंग, साखी—8

2:— वही, साखी—11

3:— पलटू साहब की बानी, भाग—2, पृ. 63

4:— मानस, 7.92

5:— आदि ग्रंथ, पृ. 1005

गुरुनानक कहते हैं कि जिस परमात्मा ने जगत और जीव की रचना की है उसने स्वयं यह नियम बनाया है कि भवसागर से मुक्ति शब्द या नाम के द्वारा होगी और शब्द या नाम की प्राप्ति सच्चे संत सदगुरु से होती है –

सचै सबदी सची पति होई। बिनु नावै मुकति न पावै कोई
बिन सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाइ है ।। 1

अन्य स्थान पर वे कहते हैं :

मत को भरमि भूलै संसारि।
गुरु बिनु कोइ न उतरसि पारि 2–

गोस्वामी तुलसी दास जी स्पष्ट कहते हैं कि बिना गुरु के कोई भवसागर तर नही सकता ।

गुरु बिन भवनिधि तरइ न कोई।
जौं विरंचि संकर सम होई।। 3–

परमात्मा ने ही स्वयं यह नियम बनाया है :

कहुँ नानक प्रभि इहै जनाई।।
बिन गुर मुकति न पाईऐ भाई।। 4–
*   *   *
बिन गुरु दाते कोई न पाए।।
लख कोटी जे करम कमाए।। 5–

1:– वही, पृ. 1046
2:– वही, गौड़, महल्ला–5, पृ. 864
3:– मानस, 7.92 (ख)3   4:– आदि ग्रंथ, गौड़, महल्ला–5, पृ. 864
5:– वही, मारु, महल्ला:3, पृ. 1057

गुरु वाणी में बड़े जोरदार शब्दों में संत या गुरु की आवश्यकता के बारे में कहा गया है कि कोई संसार में भ्रम में न रहे ,बिना गुरु के कोई संसार सागर से पार नहीं उतर सकता –

मत को भरमि भुलै संसारि ।।
गुरु बिनु कोइ न उतरसि पारि ।।1–

यह संसार भवसागर है इसमें गुरु जहाज है और गुरु ही उसका कप्तान् है । गुरु के बिना कोई भवसागर तैर नहीं सकता है । उसकी कृपा द्वारा ही हम परमात्मा से मिल सकते हैं :–

गुरु जहाजु खेवट गुरु गुर बिनु तरिआ न कोइ ।।
गुर प्रसादि प्रभ पाईये गुर बिन मुकति न होइ । 2 –

*   *   *

नामा छीबा कबीरु जुलाहा पूरे गुर से गति पाई ।। 3–

*   *   *

ताला कुंजी हमैं गुरु दीन्ही,
जब चाहे तब खोलो किवरवा ।।4

*   *   *

साचें सतगुरु की बलिहारी,
जिन यह कुंजी कुफ़ल उधारी । 5–

1:– वही, गौड, महल्ला–5, पृ. 864

2:– वही, सवइआ, महल्ला–5, पृ. 1401

3:– वही, सिरी रागु, म.–3, पृ. 67

4:– कबीर शब्दावली , भाग–2, पृ. 74

5:–वही, पृ. 19–6

दादू देव दयाल की ,गुरु दिखाई बाट।
ताला कूँची लाइ करि, खोलै सबै कपाट।। 1–

*   *   *

एकै सबद अनंत सिष ,जब सतगुरु बोलै।
दादू जड़े कपाट सब ,दे कूँची खोलै ।। –

गुरु अमरदास जी भी कहते हैं कि अंदर के द्वार की कुंजी सतगुरु के हाथ में है यह द्वार किसी और से नही खुलता–

सतिगूर हाथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाहीं।
गुरु पूरै भागि मिलावणिआ। 3–

अखा भी कहते हैं :–

कळा कूंची सदगुरु तणी ,जेने लागी होय लगार।
कमाड खोली खड़की तणुं ,ए ठेकीने नीसर्यो बहार।
बाहर नीसर्यो त्यारे बुद्धि आवी, ने काढया कर्मना पाश।
कहे अखो तेने पांखो आवी, ते उड़ी चाल्यो आकाश । 4–

हज़रत ईसा भी कहते हैं ::–

"और मैं तुम्हें स्वर्ग की बादशाहत की कुंजी दूँगा।। 5–

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव–6, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रकाशित, सन् 1983–74

2:– वही, साखी–148

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 124

4:– अखानी वाणी, पद–15

5:– मेथ्यू , 16:19

हिन्दू की धर्म पुस्तकों में भी गुरु की आवश्यकता बड़े जोरदार शब्दों में कही गई है । कठउपनिषद में कहा है :—

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः श्रृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्यु।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्चोज्ञाता कुशलानुशिष्ठः। 1

अर्थात अनेक लोगों के भाग्य में परमात्मा के बारे में सुनना भी नही है। उनके बारे में सुनकर भी बहुत सारे लोग उसको नहीं जान सकते । वह महात्मा जो उसके बारे में कुछ कहता है ,अद्भुद हस्ती है । वही मनुष्य योग्य और बुद्धिमान है ,जो उस तक रसाई कर लेता है ,पर बहुत कम लोग गुरु की सहायता द्वारा परमात्मा को पा लेते है।

फिर कठोपनिषद में आया है :—

" बिना दीक्षा के परमात्मा नहीं जाना जा सकता है चाहे उसका कोई कितना ही विचार करे । जब तक किसी गुरु के पास से तू उपदेश न ले ,उसको नही पा सकेगा क्योंकि वह इतना सूक्ष्म है कि विचार की सीमा में नही आ सकता।— 2

छान्दोग्य उपनिषद में स्पष्ट कहा गया है —

न नरेणावरेण प्रोक्त एव सुविज्ञेयो बहुधा चिंत्यमानः।
अनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीया—हमतर्क्यमणु प्रमाणात् । 3—

*   *   *

श्रुतं ह्यवे में भगवददृशेभ्य आचार्याद्वैव।
विधा विदिता साधिष्ठ प्रापयतीति।। 4—

1:—कठ उपनिषद, 1,2   2:— वही, 1,2

3:— छान्दोग्य उपनिषद, 4,9,3

4:— मुण्डक उपनिषद, 1,2,7,:12

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।
प्रकाशन्ते महात्मनः।। 1—

अर्थात परमात्मा में परम भक्ति हो और जैसी परम् भक्ति परमात्मा से हो वैसी गुरु से हो ,ऐसे महात्मा ही को इस उपनिषद के उपदेश समझ में आयेंगे। मनुस्मृति में उपदेश है ।:

"शिष्य प्रतिदिन पाठ के प्रारम्भ और अंत में दोनो हाथों से गुरु के चरणों को छुए और गुरु की आज्ञा का पालन करे।" 2—

अन्य स्थान पर कहा है :

'शरीर ,जिह्वा, बुद्धि ,कामनाओं, और हृदय को वश में रखकर हाथ जोड़कर गुरु को देखता हुआ सम्मुख खड़ा रहे' । 3—

भगवद् गीता में भी उपदेश है कि तू पूर्ण गुरु के चरणों में गिरकर यह अभ्यास और सेवा कर । जो गुरु तत्व के भेद को जानता है , केवल वही पुरुष तुम्हें ज्ञान का उपदेश दे सकता है ।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञान ज्ञानिनस्तत्तवदर्शिनः।। 4—

1:— श्वेताश्वतरोपनिषद, अध्याय—6, श्लोक—23

2:— वही, श्लाक—192

3:—मनुस्मृति, अध्याय—2, श्लाक—71

4:— गीता, 4—34

गुरु के बिना हमें परमार्थ के मार्ग का ज्ञान नहीं हो सकता है । अतएव सबसे पहले गुरु को जानने की अवश्यकता है ।

हज़रत ईसा नें सेंट जॉन में स्पष्ट कहा है :

जो मुझपर विश्वास करते है ,वह मुझ पर नहीं बल्कि मुझे भेजने वाले (परमात्मा) पर विश्वास करता है । और जो मुझे देखता है मेरे भेजने वाले को देखता है ।

मैं संसार में एक ज्योति बनकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझपर यकीन करे ,वह अंधकार में न रहे । 1— जब एक शिष्य ने हज़रत ईसा से पूछा कि परमात्मा तक़ वापस जाने का मार्ग क्या है ,तो उन्होंने उत्तर दिया "मैं ही रास्ता हूँ ,सत्य हूँ, और जिंदगी हूँ कोई इंसान मेरा बिना परमपिता तक नहीं पहुँच सकता ।" 2—,

अर्थात एक जीते जागते गुरु के द्वारा ही रास्ता मिल सकता है और परमात्मा तक पहुँचा जा सकता हैं ।

प्रसिद्ध सूफी अली बिन अल्—हुसैन अल —हकीम अल तिरमीज कहते हैं ।

कोई वजह नहीं है कि खलीफा अबु— बक्श और अली के बाद आने वाले संत उन जैसे सा उनसे ऊँचे न हो सके। रब्बी रहमत (प्रभु कृपा) को ऐसे लोगों पर बरसने से कौन रोक सकता है ? लोग यह क्यों सोचते हैं कि आज कोई सिद्दीक, मुकर्रब, मुज्तबा या मुस्तफ़ा संसार में नही हैं । 3—

1:— जॉन, 12:44—46 2:— जॉन, 14:6

3:— Who can prevent the mercy of God from Prevailing in these moderm times ! No body can check it. for it is continous. Do they think that there is no siddique, no maqurrab no mujitaba, no mustafa, now days ?
(History of Sufisum in INDIA, vol.I,p-41)

साई बुल्लेशाह अपने मुर्शिद (गुरु) के बारे में कहते हैं ।

बुल्लिया इस नु देख हमेशा इह है दरशन साई दा।
मौला आदमी बन आया। ओह आया ते जग जगाया।। 1—

अतः संसार की सब धर्म –पुस्तकों को खोजकर देखने से पता लगता है कि वे सब एक ही बात पुकार –पुकार कर कहते हैं कि बिना गुरु के किसी की मुक्ति नही होती—

सासत बेद सिमृति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी।।
बिन गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी।। 2—

संत कबीर भी दूसरे शब्दो में यही कहते हैं कि आत्मिक ज्ञान रुपी पदार्थ मनुष्य बाहर ढूँढ़ता है और पा नही सकता। इसे पाने के लिये इसके भेद के ज्ञाता सतगुरु का मार्गदर्शन आवश्यक हैं ।

वस्तु कहीं ढूँढै कहीं ,केहि बिधी आवै हाथ।
कहै कबीर तब पाइये ,जब भेदी लीजे साथ।।
भेदी लीन्हा साथ कर ,दीन्ही वस्तु लखाय।
कोटि जनम का पंथ था ,पल में पहुँचा जाय।। 3—

गुरु के बिना परमात्मा का ज्ञान होना असंभव है । गुरु की सहायता की शिष्य को पग—पग पर आवश्यकता है । यह हक़ीकत साफ—साफ समझ में नहीं आ सकती ,क्योंकि वह मन—बुद्धि से परे है ,वह बेज़बानी की जबान में है ,

---

1:— कलाम, बुल्लेशाह

2:— आदि ग्रंथ, गूजरी, महल्ला—5, 495

3:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 5

गुरु सुरत की भाषा –द्वारा शिष्य को समझाता है । गुरु की मेहर बिना जीव चेतन नही होता न सिद्धि की प्राप्ति होती है और नहीं जीव मोह,माया के तीनों गुणों के बंधनों से मुक्त हो सकता है । अतः बिना गुरु के मनुष्य घोर अंधकार में डूबा हुआ है :–

सतिगुर बाझहु घोर अंधारा डूबि मुए बिनु पाणी ।। 1–

अतः जीव अज्ञानता के घोर अंधकार में डूबा हुआ है । इस अंधकार को दूर करने वाली हस्ती का नाम गुरु है ,जिसका अर्थ है, 'गु'–अंधकार ,और रु–प्रकाश । जो अंधकार में प्रकाश कर दे, घोर अंधकार में से हमको निकाल कर सत्य वस्तु की प्राप्ति करा दे। सो चंद्र और सूर्य के रहने पर भी गुरु बिना अंधकार रहता है –

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ।।
एते चानण होदिआं गुरु बिनु घोर अंधार ।। 2–

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि मैं गुरु के पवित्र चरणों को नमस्कार करता हूँ वे दया और मेहर के समुद्र हैं ,वे सचमुच मनुष्य के रुप में हरि हैं ,जिनके वचन सूर्य की किरणों की भाँति महा मोह के अंधकार को दूर करने वाले हैं –

बंदों गुरु पद कंज ,कृपा सिंधु नर रुप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासु वचन रवि किरन कर ।। 3–

1:– आदि ग्रंथ, मलार, महल्ला–1, पृ. 1275

2:– वही, आसावार, महल्ला–2, पृ. 463

3:– मानस, 1, आदि सोरठा, 5

कबीर साहिब का भी कथन है :—

निसि अंधियारी कारने ,चौरासी लख चंद।
गुरु बिनु एते उदय है ,तहू सुदृष्टिहि मंद।। 1—

*   *   *

चौसठ दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि।
तिहिं घरि किसको चानिणौं जिहि घर गोविंद नाहिं।। 2—

संत दादू का भी कथन हैं :

इक लख चंदा आणि घर,सूरज कोटि मिलाइ।
दादू गुर गोविंद बिन, तौ भी तिमर न जाइ।। 3—

*   *   *

अनेक चंद उदय करे असंख सूर परकास।
एक निरंजन नॉव बिन ,दादू नहीं उजास।। 4—

अखा — अखा अनुभव अर्कबीन दादू दस नोहे प्रकास।
ता थे सेवो सदगुरु जे कर्म गहेत करे नास्य।। 5—

अंधकार में रहने के कारण जीव जो भी कर्म करता है ,वह उसके बंधन का कारण बना रहता है । उसके अच्छे कर्म भी —वेदों , शास्त्रों को पढ़ना ,पूजा

1:— कबीर साखी संग्रह, पृ. 19—10

2:— कबीर ग्रंथावली, गुरुदेव—17, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा

3:— दादू दयाल की बानी. भाग—1, गुरुदेव—59, बेल. प्रेस इला, 1963 74

4:— वही, साखी—60

5:— साखियाँ, 40—उपदेश अंग, साखी—23

पाठ करना आदि भी उसके बंधन के कारण बनते है । मनुस्मृति में उपदेश है :

"जो लोग बिना गुरु के वेद को सुन सुना कर सीखते हैं ,वे वेद के चोर हैं ,क्योंकि वेद का ठीक अर्थ नहीं लगाने वाला नरकों में जाता है ।" 1–

अतएव संत जन उपदेश देते हैं कि बिना गुरु के धर्म–पुस्तकों के पढ़ने–पढ़ाने ,कर्मकाण्ड के रीति रिवाजों ,प्रार्थना, पूजा, सुमिरन ,ध्यान और गुणगान से बहुत थोड़ा लाभ होता है और जीव का छुटकारा नहीं हो सकता । कबीर साहब फरमाते हैं कि गुरु के बिना माला फेरना और दान देना किसी अर्थ का नही ,वेदों और पुराणों से पूछ लो –

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है जाय पूछहु वेद पूरान।।

* * *

भजो ही सतगुरु नाम उरी।
जप तप साधन कछु नाहीं लागत, खर्चत न गठरी।। 2–

कबीर फिर कहते हैं कि मनुष्य जप तप ,यज्ञ, धर्म–शास्त्रों का पढ़ना आदि कितने ही प्रयत्न कर ले वह बिना गुरु के आत्म ज्ञान नही पा सकता :–

केतिक पढ़ि गुनि पचि मुवा, जोग जज्ञ तप लाय।
बिन सतगुरु पावै नही ,कोटिन करै उपाय।। 3–

1:– मनुस्मृति, 2,116

2:– कबीर साहेब की शब्दावली, भाग–1, चितावनी और उपदेश, शब्द–81, बेल. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा सं. सन् 1989 ई.

3:– कबीर साखी संग्रह, पृ. 110 124

संत दादू दयाल का भी यही कथन है :—

काजी काजा न जानही, कागद हाथि कतेब।
पढ़ता पढ़ता दिन गये ,भीतर नाहीं भेद।। 1—

*   *   *

संगति बिन सीझै नहीं ,कोटि करै जे कोइ।
दादू सतगुरु साध बिन, कबहूँ सुद्ध न होइ।। 2—

*   *   *

भण्येगण्ये शी साधी वात ? अवळा पडळ वळी गया सात।
ऊँचनीच रुसल माहें हता, अखा थापीने कीधां छतां।
पांडित्य करतां लाग्युं पाप, पाइ दूध उछेर्यो साप। 3—

स्वामी जी महाराज उपदेश देते हैं :

बिन गुरु और न पूजो कोई। दर्शन कर गुरुपद नित सेई।
गुरु की पूजा में सब की पूजा।जस समुद्र सब नदी समाना।। 4

इस संसार में गुरु एक ऐसी हस्ती है जो मनुष्य को सत्य का रास्ता दिखा सके। गुरु मनुष्यों में पूर्ण मनुष्य है । पूर्ण मनुष्य आध्यात्मिक मनुष्यत्व का कमाल (परिपूर्णता) है ,उसकी प्रशंसा करना असंभव है । वह संपूर्ण सुखों से भरपूर है ,वह आध्यात्मिकता का स्रोत है । प्रकृति में जो कुछ भी है वह सब उसके अंदर है ,सतलोक से लेकर मृत्युलोक तक के सारे गुण उसके अंदर विद्यमान है ,उसके व्यक्तित्व में वे सब प्रकट दिखाई देते है । कहीं और से इन

1:— दा. द. की. बा., भाग 1, साच— 100, बे. प्रेस इला. , 1963—74 ई.

2:— वही, साखी—35

3:— छप्पा, 32—जडभक्ति अंग, छप्पा—294

4:— सारवचन, 16:1, पृ. 128

गुणों का पता लगाना कठिन है । सारे समुद्र में तैर लेना कठिन है । मनुष्य सारे समुद्र में नहीं नहाता ,नहाने का काम सदैव किसी घाट पर हुआ करता है । यह पूर्ण पुरुष (सतगुरु) परमात्मा का इसी प्रकार का घाट है ।

सतगुरु सतलोक से आए है ,सारे लोंकों की मंजिलों को पार करके भूलोक में आया है और यहाँ ठहरे हैं । वह परम तत्व की शानको प्रकट कर रहा है । लोक –लोकांतरों के प्रभाव और गुण उसमें विद्यमान हैं ।

उसके हृदय में स्वयं परमात्मा विराजमान है । उसके स्वरुप से मालिक का व्यक्तित्व और गुण प्रकट हो रहे है । यदि तुम परमात्मा को देखना चाहते हो तो इस पूर्ण मनुष्य को ही देख लो ।

एक दिन हज़रत मसीह ने अपनी ओर संकेत करते हुये अपने शिष्यों से पूछा "संसार के लोग इस मनुष्य पुत्र को क्या समझते है ?"

साइमन ने उत्तर दिया " तू मसीह है ,जीवित खुदा का पुत्र है ।" इसू ने इस उत्तर में कहा"तू धन्य है साईमन' क्योंकि जीव गति और मनुष्य की बुद्धि ने तुझ पर यह प्रकट नहीं किया ,बल्कि मेरे पिता ने जो आकाश में है प्रकट किया है मैं तुझसे कहता हूँ कि तू पीटर है ,इस चट्टान पर मैं अपना गिरजा खड़ा करुँगा जिसके सामने नरकों के द्वार नहीं खुल सकेंगे । 1–

इसके बारे में गीता में भगवान श्री कृष्ण उपदेश देते हैं ।

अवजानंति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
पर भावमजानंतो मम भूतमहेश्वरम् ।। 2–

अर्थात मैंने मनुष्य देह धारण किया है अतः मूर्ख लोग मेरी अवज्ञा करते है ,क्योंकि मेरे देह धारण कर लेने से वे मेरी ऊँची अवस्था से अनजान है ।

1:– सेंट मेथ्यू , 16, 13–18

2:– गीता, 9–11

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानंतो ममाव्ययमनुत्तमम् ।। 1—

अर्थात् मेरा उत्कृष्ट, अविनाशी और अत्युत्तम भाव न जानने वाले अज्ञानी लोग , मैं अव्यक्त होने के बावजूद भी मुझे देह धारी मानते हैं ।

कबीर जी भी यही कहते हैं :

कहैं कबीर हम घुर के भेदी लाए हुक्म हजूरी ।
दिवा जलें अगम का बिनु बाती बिनु तेल ।
हम बासी उस देश के जहँ पार ब्रह्म का खेल ।।
कबीर हमरे नाम बत ,सात दीप नौ खंड ।। 2—

दादू — एक देश हम देखिया, जहाँ बस्ती ऊजड़ नाहिं ।
हम दादू उस देश के, सहज रुप ता मांहि ।।
एक देश हम देखिया,जहाँ रुति नहि पलटे कोइ ।।
हम दादू उस देश के , जहाँ सदा एक रस होइ । 3—

अखा— सोहं तेज सनातन ज्यां, निगम् रह्या बलहार ,
ते हुं जगत ,जगत मुज मांहे , हुं निर्गण गुणनो भंडार ।। 4—

1:— गीता, 7,24

2:— कबीर साखी संग्रह, 84—14

3:— दादू वाणी, मंगलदास, साखी 23—22, पृ. 315

4:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 2, परिशिष्ट, पद— 3. सं. शिवलाल जेसल पुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा संपादित, सन् 1988 ई.

गुरु गोविन्द सिंह जी भी ठीक इसी प्रकार का वर्णन करते हैं , "हम द्वैत से मालिक में एक रुप हो गये थे , हमारा चित्त दुनिया में आने को नहीं करता था, पर परमात्मा ने हमें दुनिया में ज्यों – त्यों करके भेजा ।"

है ते एक रुप हवै गयो ।। चित्त न भयो हमरो आवन कह ।।
जिउ तिउ प्रभु हमको समझायो ।। इम कहिकै इह लोक पठायो ।। 1–

यही भाव स्वामी जी महाराज प्रकट करते हैं :

राधा स्वामी धरा नर रुप जगत में ।
गुरु होय जीव चिताये ।। 2–

देहधारी गुरु को परमेश्वर मानना यह बात समझ की बाहर है । लेकिन जब गुरु की दया से आंतरिक नेत्र खुलता है तो पता लगता है कि सदगुरु सारे संसार के लिये दण्डवत करने का स्थान है । वे सारी दुनिया की जान हैं । वे शरीर –धारी परम –तत्व हैं । वे सारी सृष्टि के सरदार हैं उससे उत्तम इस संसार में कोई नही , जो विशेषतायें ब्रह्मांड और उसके पार के चेतन देशों में है, वे सब उसके व्यतित्व में प्रकट हो रही है वे सारे गुणों के केन्द्र हैं । जिसने उन्हें देख लिया उसने परमात्मा के व्यक्तित्व को देख लिया । जितने भी गुण परमात्मा के है वे सब उनके अंदर झलक रहे है । वे इस संसार में परमात्मा का नमूना या प्रतिरुप है उनका प्रतिनिधि है और संसार में सदैव परमात्मा का काम करते हैं । परमात्मा अपने आप को गुरु के अंदर रखता है :

1:– बचित्र नाटक, अध्याय–5

2:– सारवचन, पृ. 6

गुरु महि आपु रखिआ करतारे ।।
गुरुमुखि कोटि असंख उधारे ।। 1—

मालिक अनुपम है ,गुरु उसके रुप को प्रकट करने का माध्यम है :

पारब्रह्म परमेसरु अनूपु ।।
सकल मूरति गुरु तिस का रुपु ।। 2—

*　　　*　　　*

नानक सोधे सिंमृति बेद ।
पारब्रह्म गुर नाही भेद ।। 3—

अन्य स्थान पर वे उपदेश देते हैं :

हरि का सेवकु सो हरि जेहा ।।
भेदु न जाणहु माणस देहा ।।
जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती ।
फिरि सललै सलल समाइदा ।। 4—

कबीर साहिब भी स्पष्ट कहते हैं :—

अब हम तुम एक भये हहि एकै देखत मनु पतीआहीं ।। 5—

1:— आदि ग्रंथ, मारु, महल्ला—1, पृ. 1024

2:— वही, भैरव, महल्ला—15, पृ. 1152

3:— वही,

4:— वही, मारु, महल्ला 15, पृ. 1142

5:— वही, गउड़ी, कबीर, पृ. 339

फिर कहते हैं कि 'राम' और 'कबीर ' दोनों ऐसे मिलजुल गए है कि उनमें कोई भिन्न भेद नहीं कर सकता :

अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले सारिंगपानी ।।
राम कबीरा एक भये है कोई न सकै पछानी ।। 1–

अन्य स्थान पर कबीर जी कहते हैं :

सतिगुरु जागता है देउ' 2–

अखा जी का भी कथन हैं कि हरिजन में हरि को देखो :

कहे परमातमा :"सुण तुं आतमा ,समज तुं बात महा संत केरी,
हरिजन –रुप ते ओळखो माहरुं, जात न वर्ण पूछीश फेरी। 3

स्वामी जी महाराज भी फरमाते हैं :

गुरु को तुम मानुष मत जानो। वे है सत्त पुरुष की जान।।
धरी देह मानुष की गुरु ने । ज्यों त्यों तेरा करें कल्यान।। 4–

संक्षेप में कहे तो गुरु मनुष्य के रुप में दिखाई देते हैं ,पर साधारण मनुष्य नहीं वह पूर्ण पुरुष है । अर्थात नेकी बदी से परे सबसे उच्च मनुष्य है । वह मनुष्य के रुप में स्वयं परमात्मा है उसके अंदर नीति और रुहानियत का मिश्रण है । शक्ति के साथ विनय और नम्रता तथा बुद्धि के साथ प्रेम का मेल

1:– वही, रामकली, कबीर, पृ. 969

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 479

3:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–2, परिशिष्ट, पद–20, स्वाती प्रेस, अहमदाबाद द्वारा संपादित, सन् 1988 ई.

सतगुरु के अंदर ही मिलता है । इसलिये व्यावहारिक दृष्टि से ,सदगुरु रुप में प्रकट हुआ साकार परमेश्वर निराकार परमेश्वर से अधिक महत्व पूर्ण है ।

तीन लोक नौ खंड में ,गुरु तें बड़ा न कोइ।
करता करै न करि सकै, गुरु करै सो होइ।। 1—

कबीर जी ने तो यहाँ तक कहा है कि तू प्रभू से प्रेम मत कर क्योंकि वे तो धन दौलत देते हैं और धन दौलत का मोह हमें यहाँ फँसाये रखता है । हरिजन को हेत करने से हम हरि के दर्शन कर सकते हैं —

हरि से तू मति हेत कर , कर हरिजन से हेत।
माला मुंलुक हरि देत है ,हरिजन हरिहीं देत।। 2—

1:— कबीर साखी संग्रह, भाग—1, पृ. 4,3

2:— वही, पृ. 48—59

गुज़रे हुए या पुरातन गुरुः—

प्रभु भक्ति या नाम भक्ति का आधार गुरु भक्ति है और गुरु भक्ति का आधार अपने वक्त का प्रत्यक्ष गुरु है ।

गुरु का अर्थ वक्त का गुरु होता है । पिछले समय के संतों—महात्माओं या अवतारों पर श्रद्धा रखने से हमारा कोई लाभ नहीं हो सकता है । जिन महात्माओं या अवतारों को हमने कभी आँखों से देखा नहीं ,वे हमारे प्रेम और भक्ति का आधार कैसे बन सकते है ? वे अब हमसे उतने ही दूर है जितना परमेश्वर है । अगर हम पिछले समय में हुये पूर्ण संतों की भक्ति कर सकते हैं तो सीधे परमात्मा की ही भक्ति क्यों न करे जिसमें वे महात्मा अभेद हो चुके हैं। उन असंख्य संत महात्माओं या अवतारों का संसार में आना ही इस बात का बहुत बड़ा सबूत या प्रमाण है कि हमें अपने वक्त के गुरु की आवश्यकता है ।

यदि महात्मा को आने की आवश्यकता किसी भी समय में हुई तो यह इस बात का पूरा प्रमाण है कि आज भी हमें उसकी इसी प्रकार आवश्यकता है जिस प्रकार पहले थी ।

एक और विचारणीय बात है कि जब हम ऐसा विश्वास कर लेते हैं कि एक विशेष महात्मा के बाद संसार में कोई दूसरा कोई पूर्ण महात्मा नहीं आएगा, तो हम उस महात्मा या गुरु से पहले और पीछे संसार में आने वाले जीवों के साथ बहुत बड़ा अन्याय करते हैं । वह परमपिता परमात्मा न्यायी ही नहीं, प्रेम और दया की मूर्ति भी है , अपनी दया मेहर की बेतुकी बॉट नहीं कर सकता । वह कभी यह नही कर सकता कि थोड़े से समय के लिये ही अपने संतो महात्माओं को संसार में भेजे और उन महात्माओं से पहले या पीछे संसार में आने वाले जीवों को मुक्ति प्राप्त करने और अपने साथ मिलाप कर सकने के अधिकार से दूर रखे ।

वास्तव में उस परमात्मा की दया मेहर का स्रोत कभी नही सूखता । अपनी दया के कारण ही उसने ऐसा प्रबंध कर रखा है कि संसार कभी भी पूर्ण संत –सतगुरुओं से खाली नही रहता है । संसार के सामाजिक और राजनैतिक नियम और कानून बदल सकते है पर यह ईश्वरीय कानून कभी नहीं बदल सकता कि परमात्मा से मिलाप करने के इच्छुक आत्माओं की सहायता के लिये कोई न कोई पूर्ण संत सदा संसार में मौजूद रहेगा ।

गोस्वामी तुलसीदास जी निम्न पंक्तियों में स्पष्ट कहते हैं संत संसार में सदैव सुलभ रहते है :

मृदु मुगल संत समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू।।
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा, सरसद ब्रह्म बिचार प्रचारा।।
बिधि निषेधमय कलि मल हरनी। करम कथा रबिनंदनि बरनी। ।
बटु विस्वास अचल निज धरमा। तीरथ राज समाज सुकरमा।।
सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा।।
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल पगट प्रभाउ ।।
सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।।
लहहिं चारि फल अछत मनु साधु समाज प्रयाग।। 1–

प्रसिद्ध सूफी अली बिन अल् हुसैन अल हकीम अल तिरमीज कहते हैं–
"कोई वजह नही है कि खलीफा बख्श और अली के बाद आने वाले संत उन जैसे या उनसे ऊँचे न हो सके । रब्बीरहमत (प्रभु कृपा) को ऐसे लोगों पर

1:– मानस, 1–1.4–.12

बरसने से कौन रोक सकता है ? लोग यह क्यों सोचते है कि आज कोई सिद्दीक,मुकर्रब, मुज्तबा, या मुस्तफा संसार में नहीं है " । 1–

कबीर दास जी ,दादू दयाल जी एवं अखा जी इसी लिये गुरु को अत्यंत आवश्यक मानते है :

सतगुरु साचा सूरिवां, सबद जु बाह्य एक ।
लागत ही में मिलि गया, पड्या कलेजे छेक ।। 2–

* * *

(दादू) निराकार मन सुरति सौं ,प्रेम –प्रीति सौं सेव ।
जे पूजै आकार कौं, तौ साधू परतषि देव ।। 3–

अखा – हरि –हरिजन अळगा करी रखे गणो,
संत सेव्या तेणे स्वामी सेव्या ।। 4–

1:– Who can Prevent the many of God from prevailing in these modern times. No body can check it, for it is continous. Do they think that there is no siddique, no maqurrab no mujitaba, no mustafa, now days ?
(History of Sufisum in INDIA, vol.I,p-41)

2:– कबीर ग्रंथावली, 40– सबद कौ अंग, साखी–4, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा,

3:– दा. द. की. बा. , भाग 1, 15 साध कौ अंग, साखी 2, बे. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा संपादित, सन् 1984 ई.

4:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 2, सद्गुरु महिमा अने संत महिमाना पद 57, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वा. प्रे. अह. द्वारा सं. संस्करण 1988 ई.

जीवित सदगुरु के बिना कोई परमात्मा की प्राप्ति नहीं कर सकता ,इस बात का प्रमाण इतिहास में मिलता है । शास्त्रों के अनुसार नारद जी जब विष्णु की पुरी में गये वहाँ उन्हें अंदर जाने की आज्ञा नहीं मिली ,क्योंकि उनका कोई गुरु नही था फिर उन्हें गुरु धारण करना पड़ा ।

वेद व्यास जी के पुत्र शुकदेव स्वामी को गर्भ में ही ज्ञान था , पर जब वे विष्णु की पुरी गये वहॉं उन्हें वापस आना पड़ा । वे आत्मिक मंडलों पर नही जा सके और फिर राजा जनक को अपना गुरु धारण किया ।

कोई ऐसा इतिहास नही मिलता जिसमें आंतरिक चढाई गुरु के बिना किसी को प्राप्त हुई हो । स्वतः सिद्ध संतों को जन्म से ही ज्ञान होता है ,ऐसी हस्तियॉं गिनती की होती है ,पर वे भी मर्यादा भंग न करते हुये नाम– मात्र को ही गुरु धारण करती है । जिस प्रकार कबीर जी ने गोसाई रामानन्द जी को गुरु धारण किया । इतिहास से पता चलता है कि ऐसी हस्तियों को चाहे जन्म से ही ज्ञान था पर वे साधु संतो की संगति में रहे और उससे लाभ उठाते रहे । गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि खसम (परमात्मा) का हुकम यही है कि बिना सतगुरु के चेता नहीं जा सकता है ।

धुरि खसमै का हुकुम पइआ ,
विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ।। 1–

कबीर साहिब जी स्पष्ट कहते हैं :–

ऐसी जुगत करै जो कोई ,तब सो भगत कहावै ।
कहै कबीर सतगुरु की मूरति ,तेहि दरस दिखावै ।। 2–

1:– आदि ग्रंथ, बिहलड़ा वार, महल्ला–3, पृ. 556

2:– कबीर साहिब की शब्दावली, भाग–3, विरह और प्रेम, शब्द–2,पद 16, पृ. 16 , बे. प्रे. इला. द्वारा संपादित

दादू– (दादू) सदगुर पसु माणस करै ,माणस थै सिध सोइ।
दादू सिध थै देवता, देव निरंजन होइ। 1–

अखा जी भी कहते हैं कि परमात्मा सतगुरु के रुप में इस जगत में प्रकट होते हैं:

पुरुषोत्तम पारब्रह्म पूरण प्रगटिआ जगमांय।
सदगुरु रुपे शोभता रे ,जिज्ञासुनि ग्रहवा बांय।। 2–

* * *

सदगुरु संते कीधी माहारी सार रे ,
ओळखाव्यो निज आतमा रे ,
धीरज देइने बताव्युं निज–धाम,
हरि –हीरो आप्यो हाथ मां रे।। 3–

सबके लिये सदगुरु आवश्यक है । इतिहास बताता है कि विष्णु के अवतार राम और कृष्ण जी ने भी वशिष्ठ और गर्ग मुनि को गुरु धारण किया । हमारे लिये इस प्रकार के उदाहरण उपस्थित किये गये हैं ,वे (राम और कृष्ण) तो तीनों लोकों के स्वामी थे ,उनसे बड़े और कौन होंगे ? इस पुष्टि में गुरु नानक साहिब फरमाते हैं कि गुरु के बिना किसी को ज्ञान नहीं हुआ । इसकी सच्चाई तुम ब्रह्मा, नारद और वेदव्यास से पूछो।

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव कौ अंग, साखी–12, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित

2:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड 2, सद्गुरु महिमा अने संत महिमा, पद 45, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988 ई.

3:– वही, पद–50

भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ।
पूछहुं ब्रह्मै नारदै बेद बिआसै कोइ।। 1—

तुलसी साहब भी स्पष्ट कहते हैं :

राम कृष्ण ते को बड़ो ,तिनहू भी गुरु कीन।
तीन लोक के नायकां गुरु आगे आधीन।।

इसलिये व्यवहारिक दृष्टि से सतगुरु के रुप में प्रकट हुआ परमेश्वर निराकार परमेश्वर से अधिक महत्व पूर्ण है :

तीन लोक नौ खंड में ,गुरु तें बड़ा न कोइ।
करता करै न करि सकै ,गुरु करै सो होई।। 2—

संत चरनदास ने भी सदगुरु—भक्ति को प्रभु भक्ति का दर्जा दिया है :

गुरु समान तिहँ लोक में ,और न दीखै कोई।
नाम लिये पातक नसै,ध्यान किये हरि होय।। 3—

दादू— सतगुरु मिलैं तो पाइये, भगति मुक्ति भंडार।
दादू सहजै देखिये, साहिब का दीदार।। 4—

1:— आदिग्रंथ, सिरी रागु, महल्ला—1, पृ. 59

2:—कबीर साखी संग्रह, भाग—1, पृ. 43

3:— चरन दास जी की बानी, भाग—1, पृ. 1

4:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, गुरुदेव—57, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित सन् 1984 ई.

अखा— त्यम गुरुप्रतापथी परिब्रह्म ने भेटीए।
माया रुपियुं गेहेन नासे।। 1—

जिस किसी ने आंतरिक उन्नति की है उसके जीवन को पलटा देने वाला कोई न कोई अवतार या महात्मा था । राजा जनक को आत्म ज्ञान देने वाले अष्टावक्र जी थे ,गोरखनाथ जी ने भर्तहरि जी से ,विवेकानन्द जी रामकृष्ण परमहंस जी से ,अर्जुन ने भगवान कृष्ण जी से आत्मिक जीवन प्राप्त किया ।

सिक्खों में दूसरी पातशाही गुरु अंगद जी को बनाने वाले गुरु नानक देव थे ,गुरु अमरदास जी के गुरु अंगद साहिब , गुरु रामदास जी को गुरु अमरदास जी, गुरु अर्जुनजी को गुरु रामदास जी और इसी प्रकार दसवें गुरु साहिब तक परंपरा चलती रही।

संसार के सभी धर्म ग्रंथों में जीवित या वक्त के गुरु की आवश्यकता पर जोर दिया है ।

हज़रत ईसा नें स्पष्ट कहा है —

"जब तक मै संसार में हूँ मैं संसार का प्रकाश हूँ । 2—

उन्होंने यह नहीं कहा कि वे भविष्य के लिये भी तथा हमेशा के लिये संसार का प्रकाश है ।

1:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—2, सद्गुरु महिमा अने संत महिमा, पद—45, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा संपादित, सन् 1988 ई.

2:— जॉन, 9:4:5

हज़रत ईसा को जोन दि बेपटिष्ट ने दिक्षा दी थी उन्होंने भी कहा है कि पुरातन या गुजरे महात्मा या अवतार हमारी कोई मदद नही कर सकते ।

1—जितने भी मुझसे पहले आये ,वे सब चोर और डाकू हैं । 1—

2—दरवाजा मै हूँ : यदि कोई मेरी मारफ़त अंदर जाये तो उद्धार पायेगा और अंदर तथा बाहर आ—जा सकेगा। और हरी —भरी धरती पायेगा। 2

3— चोर किसी और काम के लिये नहीं ,बल्कि सिर्फ चोरी करने,घात करने और और नाश करने के लिए आता है । मैं इसलिये आया हूँ कि लोग जीवन प्राप्त कर सके और उन्हें भरपूर जीवन मिले। 3—

कबीर आदि संत भी वक्त के सदगुरु पर जोर देते हैं ।

हाज़िर छाडि बुत्त को पूजै, हसद करै नहि बूझै।। 4—

अखा— गुरु थइ मूरख जगमां फरे,ब्रह्मवेत्तानी निंदा करे,
भूतकाळमां जे थइ गया, तेहनी मनमां इच्छे मया,
अखा ते क्यम भवनी टाले व्यथा,जे नित्य मडदानी वांचे कथा ? 5

स्वामी जी महाराज भी पिछले गुरु या अवतारों पर श्रद्धा या विश्वास करने के खिलाफ थे । वे उपदेश देते हैं :

1:— जॉन, 10:8

2:— जॉन, 10:9

3:— जॉन, 10:10

4:— कबीर साहिब की शब्दावली, भाग—4, राग ककहरा (ह) बेलबीडियर प्रेस द्वारा संपादित , सन् 1990 ई.

5:— छप्पा—646

पिछले की तज टेक तेरे भले की कहूँ ।।
वक्त गुरु का मान ,तेरे भले की कहूँ।।
ली पुरानी छोड़ तेरे भले की कहूँ ।।
जो गुरु कहै सो मान तेरे भले की कहूँ ।। 1–

*   *   *

सब मिल करते पिछली टेका।
वक्त गुरु का खोज न सका।।
बिन गुरु वक्त भक्ति नाहिं पावे।
बिना भक्त सतलोक न जावे ।।
वक्त गुरु तब लग नहिं मिलई।
अनुरागी न काज सरई ।। 2–

1:– सारवचन, 19 : पृ. 142

2:– वही, 8: शब्द–1

र–सत्संग::–

साधारण बोलचाल में सत्संग उस समुदाय को कहते हैं जिसमें गाना–बजाना, कीर्तन, कथा, वार्ता या संवाद होता हो अथवा किसी विद्वान पुरुष का उपदेश या भाषण हो । चार व्यक्ति आपस में मिल बैठें और बाजे गाने के साथ या वैसे ही हरि–महिमा के गीत गाने लग जायें तो वह भी सत्संग ही कहा जाता है । पर संतों की दृष्टि से सत्संग का आदर्श इससे बहुत ऊँचा और पवित्र है। साकत (मनमुख) लोगों के सम्मेलन का नाम सत्संग नही है :

कबीर संगति करीए साध की, अंति कर निरबाहु।
साकत संगु न कीजीए ,जा ते होइ बिनाहु।। 1–

पिया हुआ जहर कई बार किसी न किसी कारण प्रभावहीन हो जाता है ,पर बुरी संगति अपना विनाशकारी रंग दिखाने से नहीं चूकती । इसलिये महापुरुष सदा ही उससे बचने का हिदायत करते रहते हैं ।

कबीर साकत संगु न कीजिये, दूरहिं जाईऐ भागि।
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागि ।। 2–
* * *
कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ।।
होनहार सो होइ है साकत संगि न जाउ।। 3–

1:– आदि ग्रंथ, सालोक, कबीर जी, पृ. 1369

2:– वही, पृ. 1371

3:– वही, पृ. 1369

कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बूरी माइ।।
ओहु नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ।। 1

*   *   *

कबीर संगति साध का दिन–दिन दूना होतु।।
साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु।। 2–

संत दादू दयाल का भी कथन हैं :

दादू सभा संत की ,सुमति उपजै आइ।
साकत की सभा बैसतॉं ज्ञान काया थैं जाइ।। 3–

*   *   *

(दादू) असाध मिलै अंतर पडै ,भाव भगति रस जाइ।
साध मिलै सुख ऊपजै ,आनन्द अंगि न माइ ।। 4–

अखा – आ अवसर तारे नहि रे आवे फरी, माणजे मन धरी संतसेवा,
संत–संगत करे ,अर्थ सर्वे संरे, कोटि मळी नथी अन्य देवा।। 5

संतों के अनुसार सच्ची संगति वह है जिसमें प्रभु निवास हो:

विचि संगति हरि प्रंभु वसै जीउ । 6–

1:– आदि ग्रंथ, सालोक कबीरजी, पृ. 1367

2:– वही, पृ. 1369

3:– दा. द. की बा., भाग 1, साध 70, बे. प्रे. इला. , सन् 1983–74

4:–वही, भाग–2, शब्द 135

5:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–2, परिशिष्ट, पद–23, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाजी प्रेस, अहमदाबाद द्वारा सं. सन् 1988 ई.

6:– आदि ग्रंथ, महल्ला–4, पृ. 94

कबीर बन—बन मैं फिरा ,कारणिं अपणैं राम।
राम सरीखे जन मिले ,तिन सारे सब काम।। 1—

दादू— जहँ राम तहँ संत जन जहँ साधू तहँ राम।
दादू दून्यूँ एकठे, अरस परस बिसराम।। 2—

* * *

सदगुरुजीनी संगत करीए, मन—कर्म— वचने तन—धन धरीए,
ब्रह्मानंद निज—सुख अनुसरिए, तो मोटो महिमा गुरुदेवनो रे ! 3

सार ,वचन, छन्द,वन्द में स्वामी जी महाराज कहते हैं :—

सतसंग किसको कहत है ,सो भी तुम सुन लेय।
सत्तनाम सतपुरुष का ,जहाँ कीर्तन होय।। 4—

संत कहते हैं कि हरि अपने प्रिय भक्तों के वश में है हरि अपने प्रिय भक्तों के हृदय में निवास करता है ,अतः हरि को साध की संगति में ही खोजा जा सकता है । अतः पूर्ण प्रेमी या सदगुरु का मिलाप ही प्रभु का मिलाप है :

हरिजन मिले तो हरि मिले ,मन पाया बिस्वास।
हरिजन हरि के रुप है ,ज्यों फूलन में बास।। 5—

1:— क. ग्रं. साध—5, सं. डॉ. श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, परचा 181, बे. प्रे. इला. सन् 1963—74

3:— अखानी काव्यकृतिओ परिशिष्ट , पद—31, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस , अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित,सन् 1988 ई.

4:— सारवचन, 11:1, पृ. 100

5:— संत कबीर की शब्दावली, पृ. 345

साध मिलै तब ऊपजै ,हिरदे हरि का भाव।
दादू संगति साध की , जब हरि करे पसाव।। 1—
*　　　*　　　*
साध मिलै तब हरि मिलै ,तब सुख आनन्द मूर।
दादू संगति साध की ,राम रह्या भरपूर।। 2—

दादू जी ईश्वर के मिलाप के लिये साध संगति की अनिवार्यता को बताते हुये कहते हैं :

(दादू) राम मिलन के कारणें ,जे तूँ खरा उदास।
साधू संगति सोधि ले ,राम उन्हीं के पास।। 3—

प्रभु रुप संत सदगुरु के बारे में कहा गया है :

साध— संगि खिन महि उधारे। 4—

अखा जी भी कहते हैं :—

झील तुं झील सत्संगरुपी जाह्नवी,
सत्संगत बिना नर नथी निपन्यो,
ज्यम नीपजे नव खंड पण काम धननुं।
संतसंगत तणु फळ छे अतिधणुं,
कहे आखो शुं भणु? जोजो परसी।। 5—

1:— दा. द. की. बा. , भाग—1, साध—18, बे. प्रेस इला, 1963—74

2:— वही, साध—22

3:— वही, साध—115

4:— आदि ग्रंथ, महल्ला—5, पृ. 103

5:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—2, 52— झील तुं झील—— सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वली प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्र. सन् 1985 ई.

अतः किसी भी प्रकार के मनुष्यों के मिलकर बैठने से संगति नहीं बनती ,उसके लिये सदगुरु का मौजूद होना आवश्यक है :

सतिगुरु बाझहु संगति न होई। बिनु सबदे न पाए कोई। 1—

* * *

संतसंगति कैसी जाणीए। जिथैं एको नामु वखाणीए।।
एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ।। 2—

* * *

जह सतिगुरु तह सत संगति बणाई।।
जह सतिगुरु सहजै हरि गुण गाई ।। 3—

* * *

पूरे गुर ते सत संगति ऊपजै ।। 4—

दादू— (दादू) हरि साधू यौं पाइये,अविगत के आराध।
साधू संगति हरि मिलैं, हरि संगत थै साध।। 5—

दूसरे शब्दों में अखा जी यही कहते हैं :

मान मुकीने मानवी करो संत को संग।
नहीं तो काचा मरसो अखा ज्यम बाझ बले मन भंग ।। 6—

1:— आदि ग्रंथ, मारु, महल्ला—3, पृ. 1068

2:— वही, सिरी रागु, महल्ला—1, पृ. 72

3:— वही, गउड़ी, महल्ला—3, पृ. 160

4:— वही, आसा, वही, पृ. 427

5:— दा. द. की. बा., भाग—1, परचा 182, बे. प्रे. इला. सन् 1963—74

6:— साखियाँ, 40—उपदेश अंग, साखी—12

संतों और महापुरुषों की प्रतिदिन की संगति हमारी आत्मा पर सत् और धर्म का प्रभाव डालती है । उनके प्रभाव के फलस्वरुप काल और माया का प्रभाव नहीं रहता । सत्संग में आध्यात्मिकता का सोता बहा करता है । मनुष्य सत्संग के प्रभाव से काल तथा माया आदि संसार के पदार्थों की वासना को भूल जाता है । और आत्मा निर्मल हो जाती है । उसके पाप समाप्त हो जाते है। साधु जन को केवल एक घड़ी के सत्संग से जो लाभ होता है ,वह हज़ार वर्षो की तपस्या से भी प्राप्त नहीं हो सकता ।

एक घड़ी आधी घड़ी ,आधी हूँ से आध।
कबीर संगति साध की ,कटै कोटि अपराध।। 1–

*   *   *

साधू बरखै राम रस अमृत बाणी आइ।
दादू दरसन देखतॉं, त्रिविध ताप तन जाइ।। 2–

*   *   *

विष का अमृत करि लिया, पावक का पाणी।
बॉंका सूधा करि लिया सो साध बिनाणी।। 3–

गुरु अर्जुन देव जी का कथन है :

महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ।
मैलू खोई कोटि अध हरे नरियल भए चीता।। 4–

गुरु अमरदास जी का कथन हैं कि पूर्ण साधू की संगति में कितने बुरे

1:– कबीर साखी संग्रह, भाग–1, पृ. 50

2:– दा. द. की बा., भाग 1, साध 12, बे. प्रे. इला. , सन् 1963–74

3:– वही, साध–123

4:– आदि ग्रंथ, पृ. 809

खोटे पाप क्यों न हो सब नष्ट हो जाते है :

आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै।
महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ।। 1

*　　　　*　　　　*

संत–समागम कीजै संतो ! संत समागम कीजे,
संत –समागम संशे भागे, जीवपणुं टळी जाय। 2–

स्वामीजी महाराज सत्संग के फलस्वरुप जो दशा शिष्य की होती है उसका वर्णन करते हुये कहते हैं :

सतगुरु संग कभी न छोड़ूँ ,मन तन से नाता तोड़ूँ।
गुरु बल से करम निकारुँ ,सतसंग से काल पछाड़ा।। 3

सब धर्म–पुस्तकें सत्संग की महिमा गाती है । भागवत में भगवान सत्संग के बारे में फरमाते हैं :

" हे उद्धव ! न योग , न ज्ञान , न धर्म–पुस्तकों के पाठ, न तप, न त्याग, न दूसरों से सेवा, न दान ,न पूजा, न पाठ न वेदों के पाठ, न तीर्थ और न मन –इन्द्रियों के दमन द्वारा जीव मुझको इतनी सरलता पूर्वक पा सकते हैं जितनी जल्दी सत्संग सा साधू –संग द्वारा ,जिसमें संसार के सम्पूर्ण प्रभाव और संस्कार दूर होजाते हैं । 4–

1:– वही, पृ. 1324

2:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–2, परिशिष्ट, पद–13, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाजी प्रेस, अहमदाबाद द्वारा प्र. सन् 1988

3:– सारवचन, 8:16, पृ. 84

4:– भागवद् स्कंध, 11, अध्याय–12

भगवान फिर भागवत में फरमाते हैं :

"है उद्धव ! जिस प्रकार कोई आग के पास पहुँचता है तो ठण्ड ,भय और अंधकार दूर होजाते है ,इसी प्रकार संतों के पास आने से पापों की सर्दी, जन्म–मरण का भय तथा अज्ञान का अंधकार दूर हो जाता है । जिस प्रकार पानी में डूबते हुये मनुष्य को नॉव सहारा देकर बचाती है ,इसी प्रकार शांति में स्थित संत संसार–सागर में गोते खाते जीवों के आधार है । जिस प्रकार भोजन जीवों का सहारा है ,उसी प्रकार मैं दुखियों का सहारा हूँ । जिस प्रकार परलोक में धर्म रुपी संपत्ति काम देती है इसी प्रकार संत जन संसार –सागर में भयभीत जीवों के लिये आधार हैं । 1–

भागवत में स्कंध एक में कहा है :

" जो परमात्मा के साथ एक हो चुके हैं ,ऐसे अभ्यासी महापुरुषों की संगति का रस एक ऐसा विशेष रस है कि स्वर्ग आदि लोकों का रस तथा मुक्ति का रस भी उसकी कोई होड़ नहीं कर सकता। इस लोक की बादशाहत और सुखों की तो हैसियत ही क्या है । " 2–

श्री भगवद गीता में अन्य स्थान पर कहा है :

" महापुरुषों के संग की महिमा की चर्चा करते हुये कहा गया है कि भगवत् –सत्संगी के क्षणमात्र की उपलब्धि भी तुच्छ भोग क्या स्वर्ग ओर मोक्ष से भी बढ़कर है । 3–

1:– वही, अध्याय–26, श्लोक 31–33

2:– वही, अध्याय–18, श्लोक–23

3:– श्री मद् भागवत् गीता– 1/18/13

महाभारत में कहागया है :–

"मनुष्य का महान आत्मा के साथ रहना ही आत्मिक उन्नति कराने वाला है चाहे वह और कुछ भी न करे ।" 1–

नारद भक्ति सूत्र में भी कहा गया है कि भगवाान की प्राप्ति में केवल भगवान की कृपा की ही नही बल्कि महापुरुषों के कृपा भी आवश्यक मानी जाती है । 2–

अन्य स्थान पर कहा गया है कि महापुरुषों का संग दुर्लभ ,अगम्य और अमोध है –

महात्संगस्तु दुर्लभोऽगम्यो मोघश्च। 3–

अन्य स्थान पर कहा गया है कि महापुरुषों की दृष्टि जिन पर पड़ जाती है वे यदि महापातक या पापी भी हो तो वे परम पद को पा लेते हैं । 4–

संतों का सत्संग एक अमुल्य नियामत है जो तड़पते जीवों का आधार है । जो जीव इसका सहारा लेते हैं , वे भवसागर से तर जाते हैं ,चंदन के वृक्ष के पास सामान्य वृक्ष भी चंदन बन जाता है ,कसाई के घर का लोहा भी पारस के र्स्पश से सोना बन जाता है ,तो संतों की संगति में रहने वाला जीव भी परमात्मा हो जाता है।

1:– अध्याय–1, श्लोक–27

2:– नारद भक्ति सूत्र, 38

3:– वही, 39

4:– वही, –7/74–75

कबीर साहब कहते हैं :

गंगा के संग सलिता बिगरी।
सो सलिता गंगा होई निबरी ।
चंदन के संग तरुवर बिगरिओ।
सो तरुवर चंदन होई निबरियो।
पारस के संग तांबा बिगरिओ।
सो तांबा कंचनु होइ निबरियो।
संतन संग कबीरा बिगरिओ।
सो कबीरु रामै होइ निबरिओ।। 1–

अन्य स्थान पर वे कहते हैं :

कबीर चंदन का बिखा भला बेढ़िओ ढाक पलास।।
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि।। 2–

संत दादू दयाल भी यही भाव प्रकट करते हैं :

साधू जन संसार में ,सीतल वंदन बास।
दादू केते ऊघरे, जे आये उन पास।। 3–

*   *   *

राख विरष बनराइ सब ,चंदन पासैं होइ।
दादू बास लगाइ करि ,किये सुगंधे सोइ।। 4–

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 1158

2:– वही, सालोक, कबीर जी, पृ. 1385

3:– दा. द. की बा., भाग 1, साध–6, बे. प्रे. इलाहाबाद , सन् 1963–74

4:– वही, साध–9

जहाँ अरँड अरु आक थे, तहँ चंदन ऊग्या माहिं।
दादू चंदन करि लिया, आक कहै को नाहिं।। 1—

गुरु रविदास भी संत दादू दयाल के शब्दों में ही सत्संग के महत्व को समझाते हुए कहते हैं :

तुम चंदन हम इरंड बपु रे, निकटि तुम्हारे वासा।
नीच व्रिष तै ऊंच भए तुम्हरी बास सबासा।। 2—

गुरु वाणी में भी यही शब्दों में कहा गया है :

जिउ चंदन निकरि वसै हिरड्ड बपुडा ।
तिउ सत संगति मिलि पतित परवाणु।। 3—

अखा— अखा चंदन सदगुरु ज्याके पासु बन बसाय।
बांसु बास न भेद ही गाढ्य पड़ी हदे माया।। 4—

सत्संग की महत्ता अन्य उदाहरणों के द्वारा संत जन बताते हैं । वे कहते हैं कि जिस प्रकार पारस के संग से लोहा भी कंचन बन जाता है ,उसी प्रकार पारस रुपी संत लोहे रुपी जीव को स्वर्ण रुपी धर्मात्मा बना देता है , नीच को उच्च गति देते है :

1:— वही, साध—10

2:— आदि ग्रंथ—वाणी 116, पृ. 486

3:— वही, महल्ला—5, पृ. 861

4:— साखियॉ, 40—उपदेश अंग, साधी—28

जिउ लोहा पारसि भेटीए मिलि संगति सुवरनु होइ जाई ।।
जउ नानक के प्रभ तू घणी जिउ भावै तिवै चलाइ ।। 1—

गुरु वाणी में फिर कहा गया है :

ए जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ।।
पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ।। 2—

संत दादू दयाल भी कहते हैं :—

साधू जन संासर में ,पासर परगट गाइ ।
दादू केते ऊधरे ,जेते परसे आइ ।। 3—
*   *   *
दादू गुर गरुवा मिलै , ता थैं सब गमि होइ ।
लोहा पारस परसताँ ,सहज समाना सोइ ।। 4—

कबीर जी ने तो सत्संग की महिमा गाते हुये कहा हैं कि पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है ,उसका मान और मोल बढ़ जाता है , पर वह पारस नहीं बनता । लेकिन सत्संग की महिमा क्या कही जाए । जिसने सत्संग किया वह स्वयं संत हो गया नाम से लगकर नाम में समा गया । उसको सदा जीवन मिल गया तथा जीवन मुक्त हो गया ।

1:— आदि ग्रंथ, गूजरी, महल्ला—4, पृ. 303

2:— वही, पृ. 505

3:— दादू दयाल की बानी, भाग 1, साध-8, बे. प्रे. इला. , सन् 1963—74

4:— वही, गुरुदेव—47

पारस महि अरु संत महि बडो अंतरो जान।
वह लोहा कंचन करे , वह कर ले आप समान।। 1—

संतो महात्माओं की खोज कर शरण लेनी चाहिये । और संतों की संगति जितनी भी हो सके करनी चाहिए , क्योंकि संत एक प्रभावशाली साधन है , जिसके द्वारा जीव का बहुत जल्दी उद्धार हो जाता है । सत्संग ईश्वर साक्षात्कार का एक अनिवार्य साधन माना जाता है । मन के विकारों को दूर करने के और प्रभु —भक्ति बढ़ाने के लिये सत्संग से बढ़कर कोई अन्य साधन नही है ।

1:— कबीर

ल–भक्ति::–

वेदों के मंत्रों और उपनिषदों में भक्ति के संकेत मिलते हैं । भगवद्गीता,भगवद पुराण, तथा नारद और शांण्डिल्य के सूत्रों में इसका काफी वर्णन किया गया है ।

हिन्दुओं की आध्यात्मिक पुस्तकों में परमात्माके मिलाप के लिये दो मार्ग बताये गये है :

1:– ज्ञान मार्ग::– 2::– भक्ति मार्ग ::–

संतों ने ज्ञान–मार्ग से भक्ति –मार्ग को श्रेष्ठ माना है । भक्ति मार्ग प्रभु–प्राप्ति का सुगम और सर्वश्रेष्ठ साधन है ।

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भक्ति –मार्ग , ज्ञान –मार्ग से श्रेष्ठ है : " पर इन सब योगियों में मैं उनको उत्तम और श्रेष्ठ समझता हूँ जो मुझे अपने घट में बसाकर श्रद्धा और भक्ति के साथ मेरे ही ध्यान और भजन में लगा रहे–

योगिनामपि सर्वेषां मद्वेतेनांतरात्मना ।
श्रद्धावन्भजते यो मा स मे युक्ततमो मतः ।। 1–

पुनः गीता में साफ –साफ कह दिया कि ज्ञान भी श्रद्धा के बिना असंभव है : "हे अर्जुन ! उसपर भी श्रद्धा न रखने वाले मुझ को नहीं पाते और इस नाशवान संसार में बार–बार जन्म–मरण के चक्कर में फँसे रहते हैं , वे मुक्ति नहीं पाते।

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।
अप्राप्य मां निर्वतते मृत्यृसंसारवर्त्मनि ।। 2–

1:– गीता, अध्याय–6, श्लोक–47

2:– वही, अध्याय–9, श्लोक–3

कई लोगों का विचार है कि ज्ञान भक्ति की प्राप्ति का माध्यम है और कईओं के ख्याल में इन दोनों का आपस में सबंध है ।

" ज्ञान भक्तयोरंगंगिनोः एकार्थत्वाद एकप्रयोजनकत्वादितियोवत्" ।1–

नारद जी भक्ति के माध्यम या साधन और आदर्श या साध्य दोनों मानते हैं । 'नारद–भक्ति–सूत्र' में भक्ति को कर्म, ज्ञान और योग इन तीनों से श्रेष्ठ कहा गया है । 2–

शांण्डिल्य भक्ति के लिये योग और ज्ञान को आवश्यक समझते है , क्योंकि भक्ति में एकाग्रता और साथ में मन की सफाई की आवश्यकता है जो योग और ज्ञान का विशेष गुण है । श्री मद् भगवद गीता में कहा गया है कि प्रभु की भक्ति ज्ञान को उत्पन्न करती है और वह सच्चा ज्ञान है जिससे कि प्रभु के साथ संबंध या लगाव हो जाता है , निरे ज्ञान से कुछ हाथ नहीं आता । श्रद्धा के बिना भक्ति नहीं होती और श्रद्धा के बगैर ज्ञान भी किसी काम का नहीं । 3–

गोरख नाथ भी ज्ञान –मार्ग से भक्ति –मार्ग का महत्व बताते हुए कहते हैं कि अव्यक्त ब्रह्म ज्ञान, ध्यान, नाना साधनों से प्राप्त नहीं होता , भक्ति ही एक मात्र आधार है ।

भणत गोरषनाथ मछींद्रतां दासा,
भाव भगति और न आस न पासा ।

1:– भक्ति चन्दिका कल्याण–भक्ति अंक, पृ. 236

2:– नारद भक्ति सूत्र, 25

3:– श्रीमद् भागवत् (4/29,26/49)

रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसी दास जी फरमाते हैं कि भक्ति आप में पूर्ण है और यह किसी साधन पर निर्भर नहीं । ज्ञान और वैराज्ञ इसके अधीन है । तुलसी दास के राम स्वंय अपने मुख से भक्त को प्रभु प्राप्ति का साधन बतलाते है ।—

भगति कि साधन कहउँ बखानी।
सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी।। 1—

*　　*　　*

ग्यान अगम प्रत्यह अनेका।
साधन कठिन न मन कहुँ टेका।।
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ।
भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ।। 2—

ज्ञान मार्ग के संबंध में अपना निष्कर्ष देते हुये गोस्वमी तुलसी दास जी कहते हैं कि यह तलवार की धार के समान है जिसपर चलना अत्यंत ही कठिन है ओर जिससे गिरते भी देर नहीं लगती है । जो इस मार्ग को निर्विघ्न निबाह ले जाता है , वही ऊँचे पद को प्राप्त करता है , जिसे वेद , पुराण और संतजन अत्यंत दुर्लभ पद कहते हैं । पर प्रभु —भजन में लगे जीव के पास यह दुर्लभ पद बिना इच्छा किये ही अपने आप हठ पूर्वक आ जाता है ।

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा।।
जो निर्विघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई।।
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद।।
राम भजत सोइ मुकुति गोसाई। अनइच्छित आवइ बरिआई।। 3—

1:— मानस 30,15.3

2:— मानस,7.44.2

3:— मानस,7.118 (ख) 1—2

इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसी दास जी ने मानस के उत्तरकाण्ड में ज्ञान और भक्ति की तुलना करते हुए कहा है कि ज्ञान अति कठिन है । उन्होंने भक्ति की विशेषता का वर्णन किया है कि भक्ति अति सुखेन है तथा इसके मार्ग में कोई विघ्न नहीं पड़ता । 1—

गुरु वाणी में भी ज्ञान से भक्ति को प्रभू प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन माना है ।

गुर की मति तूँ लेहि इआने।।
भगति बिना बहु डूबे सिआने।। 2—

भाव भक्ति सर्वोपरि है , इसके अतिरिक्त सब व्यर्थ है :—

भाव भगति विसवास बिन कटै न संसै सूल ।
कहै कबीर हरि भगति बिन ,मुक्ति नहीं रे मूल।। 3—

ज्ञान—मार्ग से भक्ति मार्ग की श्रेष्ठता कबीर निम्न शब्दों में प्रकट करते हैं :—

कथणीं बदणीं सब जंजाल,
भाव भगति अरु राम निराल।। 4—

अन्य स्थान पर वे कहते हैं :—

जब लगि जुक्त न जानिए भाव भक्ति भगवान।
झूठा जप तप झूठा ज्ञान , राम नाम बिन झूठा ध्यान।। 5—

1:— मानस 7.117 (घ) 3.7.118 (क) (ख), 7.119, (ख) 1—6

2:— आदिग्रंथ, गउड़ी, महल्ला—5, पृ. 288

3:— क. ग्रं. , पृ. 248, सं. डॉ. श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

4:— वही, पृ. 156 (इ) पद 201

5:— वही, पृ. 152

कबीर स्वामी सेवक एक मत ही मै मिलि जाई।
चतुराई रीझै नहीं रीझै मन के भाई।। 1–

कबीर जी तो यहाँ तक कहते है कि भक्ति के बिना संसार को धिक्कार है –

कबीर हरि भगति बिना ,ध्रिग जीवन संसार।
धूंवां केरा धौलहर, जात न लागै बार।। 2–

*   *   *

कबीर हरि के भगति करि , तज विषय रस चोज।
बार–बार नहीं पाईए ,मनिषा जन्म की मौज।। 3–

*   *   *

संत दादू दयाल ज्ञान–मार्ग की अपेक्षा भक्ति–मार्ग की महत्ता निम्न शब्दों से फ़रमाते हैं –

(दादू) भगति निरंजन राम की ,अविचल अविनासी।
सदा सजीवन आतमा , सहजै परकासी।। 4–

*   *   *

(दादू) जैसा राम अपार है , तैसी भगति अगाध।
इन दून्यूँ की मित नहीं, सकल पुकारैं साध।। 5–

*   *   *

(दादू) जैसा अविगत राम है , तैसी भगति अलेख।
इन दून्यूँ की मित नहीं, सहस मुखाँ कहै सेस।। 6–

1:– वही, हेत–प्रीति सनेह अंग, साखी–4

2:– वही चितावणी कौ अंग, साखी–27

3:–क. ग्रं , चितावणी –35 सं. बापू श्याम सुंदर दास, काशी ,ना.प्र. सभा

4:–दा. द. की बा. भाग 1, परचा– 244, बे. प्रे. इला. सन् 1984 ई.

5:– वही साखी 245   6:– वही, साखी 346

अखा— एम प्रीछेने हरिभक्ति आदरे, तो अंते पड़े ते सर्वे वेर।
हुं ते कोण ने हरि शी वस्तु, जे जाणीं ग्रहुं जइ हस्त ?
एम भणी भज, मळे भगवान, नहि जो अखा वर व्यहोणी जान।। 1

* * *

अखा तुं भोरी भक्ती कर्‌य जो सांई रीझाया चाहे ।
पंडित कला में मत पड़े बुध्य अक्षर में जाय।। 2—

* * *

कब ध्रु प्रहलाद पींगल पढ़े कब व्याक्रण नामा कबीर।
भक्ती पंख भये अखा सब संतन के पीर ।। 3—

1:— छप्पा, 416

2:— साखियॉं, भोरी भक्ति अंग, साखी—1

3:— वही, 15—विरही अंग, साखी—10

भक्ति क्या है ::–

भक्ति संस्कृत की 'भज' धातु से निकला है , जिसका अर्थ है भजना, सेवा या आराधना करना, पूजा करना इत्यादि। ईश्वर महापुरुष अथवा किसी विशेष गुणवान व्यक्तित्व में अपनी इच्छा के अनुकूल अनुराग की स्थिति का नाम भक्ति है । भक्ति वह साधन है जिसके द्वारा आत्मा ऊपर उठकर प्रभू में जा समाती है और प्रभु अलौकिक मण्डलों से उतर कर आत्मा में आ समाता है।

नारद जी कहते हैं "ईश्वर के प्रति परम प्रेम का रुप भक्ति है ।" 1– भागवत् के अनुसार सांसारिक विषयों का ज्ञान देने वाली इन्द्रियॉ की स्वाभाविक प्रवृत्ति निष्काम रुप से जब भगवान में लगती है तो उसे भक्ति कहते है । " 2– पतंजलि के ईश्वर प्राणीधान सूत्र की व्याख्या करते हुये भोज ने कहा है कि "समस्त फलाकांक्षाओं को त्याग करना एवं समस्त कर्म परमात्मा को सर्मपित कर देना ही भक्ति है । " 3– श्री शंकराचार्य ने आवृत्ति–रस, कृदु –परेशात् सूत्र की व्याख्या करते हुए कहा है कि उत्कंठा युक्त निरंतर स्मृति को ही भक्ति कहते है । 4–

विष्णु पुराण के अनुसार साधक को वैसी ही आसक्ति होनी चाहिये जैसी कि अविवेकी पुरुष की इन्द्रियों में होती है । 5– संत सुंदर दास के अनुसार अपने चित्त को भगवान में भुलाना ही भक्ति है । 6–

1–नारद भक्ति सूत्र, 2,3,4,18

2–श्रीमद् भागवद–3–25–32

3–पातंजली दर्शन, प्रथम अध्याय,समाधि पाद, 23वें सूत्री, भोज वृत्ति

4–ब्रह्मसूत्र, शंकरभाष्य,4,1,1

5–विष्णु पुराण,1,20,19

6–संत सुन्दर दास,ज्ञान समुद्र,पृ.40

नारदी भक्ति का प्रेम तत्व कबीर की भक्ति का भी आधारभूत तत्व है |:

भगति नारदी मगन सरीरा, इह विधि भव तिरि कहै कबीरा | 1

कबीर जी अपनी भक्ति को नारदी भक्ति ' बताते हुये यहाँ तक कहते हैं कि अगर हृदय में नारदी भक्ति नहीं है तो सब साधना व्यर्थ है ।

भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीनां | 2–

कबीर अन्य स्थान पर कहते हैं कि भाव–भगति के बगैर मुक्ति संभव नहीं है ।

भाव भगति सौं हरि न अराधा |
जनम मरन की मिटी न साधा ||
भाव भगति बिस्वास बिनु, कटै न संसै सूल |
कहै कबीर हरि भगति बिनु, मुकुति नहीं रे मूल || 3–

अन्य स्थान पर कबीर जी ने निम्न दोहों में भक्ति का मत प्रकट किया है :

भक्ति का मारग झीना रे |
नहिं अचाह नहिं चाहना, चरनन लौ लीना रे ।
साधन के रस–धार में , रहे निस दिन भीता रे |
राग में स्नुत पेसे बसे, जैसे जल मीना रे |
साँई सेवन में देत सिर, कुछ बिलम न कीना रे |
कहैं कबीर मत भक्ति का परगट कर दीना रे || 4–
भाग बिना नहिं पाइये , प्रेम–प्रीति की भक्त |
बिना प्रेम नहीं भक्ति कछु भक्ति भर्यो सब जक्त ||

1–कबीर ग्रन्थावली, पद –278,सं. बाबू श्याम सुन्दर दास,काशी नागरी प्रचारिणी सभा

2–कबीर ग्रन्थावली, हिन्दी परिषद प्रयाग, वि. वि. , पद–76

3:– वही, रमैनी–1

4:– कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संकलित, कबीर वाणी, पद–22, राजकमल प्र. नई दिल्ली, सं. 1987

प्रेम बिना जो भक्ति है , सो निज दम्भ –विचार।
उदर भरन के कारने , जनम गँवायौ सार।। 1–

संत दादू दयाल की भक्ति का आधारभूत तत्व भी प्रेम है ।

प्रेम भगति माता रहै ,तालाबेली अंग।
सदा सपीड़ा मन रहै, राम रमै उन संग।। 2–

*　　　*　　　*

प्रेम मगन रस पाइये, भगति हेत रुचि भाव।
बिरह बिबास निज सौं ,देव दया करि आव।। 3–

*　　　*　　　*

(दादू कहैं) तूँ है तैसी भगति दे, तूँ है तैसा प्रेम।
तूँ है तैसी सुरति दे, तूँ है तैसा खेम।। 4–

*　　　*　　　*

पहली आगम विरह का पीछे प्रीति प्रकाश।
प्रेम मगन मन लै लीन मन, तहँा मिलन की आस।
प्रीति न उपजै विरह बिन, प्रेम भगति क्यों होई।
सब झूठे दादू भाव बिन, कोटि करै जो कोई। 5–

1:– सत्य कबीर की साखी, पृ. 41, वेकटेश्वर प्रेस, बंबई, संवत 1977

2:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, विरह–51–बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा संपादित, सन् 1963–74

3:– वही, विरह –52

4:– वही, विरह –44

5:– दादू दयाल की वाणी, पृ. 44 (बे. प्रेस , प्रयाग)

जिस घट इस्क अलाह का, तिस घट लोहि न मास।
दादू जियरे जक नहीं , सिसकै साँसै साँसे।। 1—

भक्ति अन्य साधनों से उत्तम है ::—

भक्ति का फल परमात्मा की प्राप्ति है परमात्मा की प्राप्ति के लिये भक्ति सब कर्मो(इन्द्रियों के संयम ,योग, ज्ञान ,जल—थल पर विचरना और ग्रंथों —पोथियों का विचार) से उत्तम साधन है :

सभहू को रसु हरि हो।।
काहु जोग काहू भोग काहू गियान काहू धियान।।
काहू हो डंड धरि हो।।
काहू जाप, काहू ताप काहू पूजा होम नेम।।
काहू को गउनु करि हो।।
काहू तीर काहू नीर काहू बेद बिचार।।
नानका भगति प्रिअ हो।। 2—

अन्य साधनों से भक्ति की श्रेष्ठता कबीर निम्न शब्दों में कहते हैं :

कबीर भया है केतकी , भबर सब भये दास।
जहां जहां भगति कबीर की , तहां तहां राम निवास। 3—

1:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, विरह—57, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963—74

2:— आदि ग्रंथ, गौड़ी, महल्ला—5, पृ. 213

3:— कबीर ग्रंथावली, साध महिमा—11, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा,

संत दादू दयाल अन्य साधनों से भक्ति की महत्ता निम्न शब्दों में व्यक्त करते हैं –

बाहरि दादू भेष बिन, भीतर बस्त अगाध।
सो ले हिरदे राखिये, दादू सन्मूख साध।। 1–

*   *   *

दादू सब दिखलावै आप कूँ, नाना भेष बणाइ।
जहँ आपा मेटन हरि भजन, तेहिं दिसि कोई न जाइ।। 2–

*   *   *

(दादू) भेष बहुत संसार में, हरि जन बिरला कोइ।
हरिजन राता राम सूँ, दादू एकै सोइ।। 3–

*   *   *

भगति मूल मुकति मूल, भौजल निसतरणा।
भरम करम भजना भैं, कलिविष सब हरणा।। 4–

अखा '–   धात की धात होवे ज अखा!
                    और काठ पत्थर का ना होय सोना,
          प्रेम प्रीछा कर पियु मिले,
                    ईस बिन औरह लाख होना। 5–

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, भेष–6, बेल. प्रेस इला., 1963–74

2:– वही, साखी–11

3:– वही, साखी–13

4:– वही,भाग–2, राग माली गौड़ी, पद–2

5:– झूलणा, पद–58

भोरा भक्त एसा अखा जैसा काला पूत।
बचन बोलत तोतरे, तब प्यारा अद्‌भूद।। 1–

गोस्वमी तुलसीदास जी कहते हैं कि भक्ति अपने आप में सब तरह से परिपूर्ण है । भक्ति के लिये जप, तप, पूजा, पाठ, दान, पूण्य, और तीर्थ व्रत आदि किसी भी साधन की आवश्यकता नहीं पड़ती । सभी ज्ञान–विज्ञान भक्ति के आधीन है और या समस्त सुखों का भंडार है :

जप तप नियम जोग निज धर्मा। श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा।।
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन। जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन।।
आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर भल प्रभु एका।।
तव पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधन कर यह फल सुंदर।। 2–

* * *

तीर्थाटन साधन समुदाई। जोग बिराग ग्यान निपुनाई ।।
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना। संजम दम जप तप मख नाना।। 3–

* * *

संजप जप तप नेम धरम ब्रत बहु भेषज–समुदाई ।
तुलसीदास भव–रोग रामपद–प्रेम–हीन नहिं जाई।। 4–

कबीर दास जी भी कहते हैं :

अवधू भजन भेद है न्यारा।
क्या गायै क्या लिखि बतलाये, क्या भर्मे संसारा ।

1:– साखियाँ, 21–भोरी भक्ति अंग, साखी–3

2:– मानस, 7.48.1–2

3:– मानस, 7.125 (ख) 2–4

4:–विनय पत्रिका, 81

क्या संध्या–तर्पण के कीन्हें , जो नाहिं तत्त विचारा।
मूँछ मुडाये–सिर जटा रखाए, क्या तन लाये छारा।
क्या पूजा पाहन की कीन्हें , क्या फल किये अहारा।
बिन परिचे साहिब हो बैठे, विषय करै ब्यौपारा।
ग्यान ध्यान का मर्म न जानै, वाद करै अहंकारा।
अगम अथाह महा अति गहिरा, बीज न खेत निवारा।
महा सो ध्यान मगन है बैठे, काट करम की छारा।
जिनके सदा अहार अंतर में केवल तत्त विचारा।
कहै कबीर सुनो हे गोरख तारौं सहित परिवारा।। 1–

*   *   *

माथे तिलक हाथि माला बाना।
लोगन राम खिलउना जाना।। 2–

दादू– टामन टूमन है सखी, भूलि करो मत कोई। 3–

अखा – छोकरिऑ ढींगलियाँ खेले !
साची सोहागन कंथ न मेले !
गुडियाँ को पहिनावे गहैनाँ !

1:– कबीर , पद–109, सं. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राज कमल प्रका., नई दिल्ली, 1987

2:– कबीर ग्रंथावली, पद –343, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा, 1977

3:– लेख 'युग प्रवर्तक महात्मा दादू', श्री राम देव चौखानी, श्री दादू चर्तुशताब्दी निबंध माला से उद्धृत, पृ. 20

जाने यह बोलेगी बेनाँ !

यूँ जन्मारो खोवे रेनाँ ! 1—

*　　　　*　　　　*

कोई है रे सोहागन नारी रे ?

प्रेम —गली की खेलारी रे ! 2—

*　　　　*　　　　*

प्रेम पीछ नर को भली अखा सो जाने कोय।

प्रेम मिलावे पीयु को प्रीछे समरस होय।। 3—

*　　　　*　　　　*

रस बस होय के हरि मिलै कछु न राखे ओट।

आतुरता भक्त चाहिये अखा राम नहीं खोट।। 4—

*　　　　*　　　　*

पढ़ते पढ़ते पची मुआ व्याकर्ण पिंगलसार।

आपा अधिक बढ़या अखा जाक्ता जाय संसार।। 5—

*　　　　*　　　　*

पढ़ते पियु न पाया कोइ,

ज्युं पढ़ीअे त्युं दीसे दोइ । 6—

कठोपनिषद और मुण्डकोपनिषद में बतलाया गया है कि "आत्मा को

1:— धुआसा, 31—छोकरिआँ ढिंगलियाँ खेले

2:— वही, 14— कोई है रे सोहागन नारी

3:— साखियॉ, 67— प्रेम प्रीछा को अंग

4:— साखियॉ, चानक अंग, साखी—19

5:— साखियॉ, सर्वग अंग, साखी—14

6:— धुंआसा, 24—बात बड़ी जो सुरिजन सूझे

तुम वेदों के पढ़ने से नही जान सकते और नहीं बुद्धि विचार से । इसको केवल वही जान सकता है जिसको परमात्मा स्वयं चुने अथवा जिस पर वे दया करे।"1–

नारद जी कहते हैं " प्रभु के भक्तों में जन्म ,ज्ञान शक्ल –सुरत , कुल संपत्ति और कर्म –धर्म की कोई पूछ नही , क्योंकि ये सब ही प्रभू के है ।"2–

भक्ति सब साधनों में श्रेष्ठ है । भगवान कृष्ण कहते हैं "योगी तपस्वियों से बड़े है , वे ज्ञानियों से बड़े है , वे कर्म करने वालों से बड़े है । योगियों में भी जो श्रद्धा सहित अपने अंतर में मुझे बसाते है , वे मेरे साथ पूर्णतया अभेद है। 3 –

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।।
योगिनामपि सर्वेषां मद्गेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः।।

भक्ति के लिये आवश्यकता::–

भक्ति के लिए भगवान की आवश्यकता है । लेकिन भगवान तो हमने देखा नही , फिर उसकी भक्ति कहाँ ? ऐसी हालत में किसकी भक्ति की जाये वह कौन सी हस्ति है जिसमें परमात्मा प्रकट है और जो हमारे अंतर में स्वाभाविक रुप में भक्ति भाव को प्रकट करने और बढ़ाने में सहायक हो सकती है ? वह हस्ती सदगुरु ही है ,जिसके अंदर परमात्मा की झलक है ,जो

1:– कठोपनिषद, (2–23), मुण्डकोपनिषद (3–2,3)

2:– नारद भक्ति सूत्र, 72,73

3:– गीता, अध्याय–6, श्लोक, 46, 47

परिपूर्णता की मूर्ति है और शिष्य को सच्चा मार्ग बताकर उसका मुख परमात्मा की ओर मोड़ देता है । कबीर दास जी कहते हैं कि भक्ति कठिन है और दुर्लभ है । भेष आसान और आम है । केवल गुरु की सहायता से इसकी प्राप्ति संभव है :

भगति कठिन अति दुर्लभ है, भेष सुगम निज सोइ।
भगति जो निआरी भेख से , यह जाने सब कोई ।।
भगति पदारथ तब मिले , तब गुरु होइ सहाय।।
प्रेम प्रीति की भगति जो ,पूरण भाग मिलाय।। 1—

कबीर साहिब गुरु भक्ति का बड़े स्पष्ट शब्दों में उपदेश देते हुए कहते हैं :

सतगुरु चरन भजस मन मूरख , का जड़ जन्म गँवावस रे।। 2—

अन्य स्थान पर वे गुरु भक्ति की आवश्यकता बताते हुये कहते हैं :

बिन गुरु भक्ति के माता कैसी, जैसी बॉझिन नारी।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्ति करो करारी। 3—

*　　　*　　　*

हिंडौलनां तहां झूलै आतम रांम।
प्रेम भगति हिंडोलनां, सब संतनि कौ विश्राम।। 4—

1:— कबीर साहब की शब्दावली, भाग—1, सद्गुरु और शब्द महिमा, शब्द—3 बे. प्रे. इला. द्वारा प्र., सन् 1989 ई.

2:— वही, शब्द—2

3:— वही, भाग—3, शब्द—9, पद—6

4:— कबीर ग्रंथावली, राग गौड़ी, पद—18, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा

कहै कबीर जोगी अरु जंगम, ए सब झूठी आसा ।
गुर प्रसादि रटौं चात्रिग ज्यूँ, निहचै भगति निवासा।। 1–

कबीर साहिब भक्ति का दान गुरु से माँगते हुये फरमाते हैं :

भगति दान मोहि दीजिये, गुरु देवन को देव।
और नहीं कछु चाहिये , निस दिन तेरी सेव।। 2–

*　　　*　　　*

साध– संगत पीतम उहाँ चल जाइये।
भाव–भक्ति उपदेस तहाँ ते पाइये।। 3–

कबीर साहेब पूर्ववर्ती भक्तों के उल्लेख करते हुये कहते हैं कि उन्होंने भी गुरु के प्रताप से ही भक्ति पाई थी :

गुरु परसादि जयदेव नाम।
भगति कै प्रेम इनही है जाना।। 4–

गुरु वाणी भी कहती है कि परमात्मा से मिलने के सब उपायों में गुरु का प्रेम तथा उनके चरणों में लगे रहना चाहिये।

सरब उपाइ गुरु सिरि मोरु।।
भगति करउ पग लागउ तोर।। 5–

1:– वही, पद–34

2:– वही, पद–35

3:– कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, संकलित, कबीर वाणी, पद–71, पृ. 229, राजकमल प्रका., नई दिल्ली पटना, 1987

4:– आदि ग्रंथ, पृ. 137

5:– आदि ग्रंथ, वसंतु, महल्ला–1, पृ. 1187

भाई रे दासिन दासा होई।।
गुरु की सेवा गुरु भगति है विरला पाए कोइ।। 1—

गुरु अमरदास जी का कथन है कि प्यार के बगैर भक्ति नहीं हो सकती और न सुख उत्पन्न हो सकता है । केवल गुरु भक्ति के द्वारा ही मन को धीरज मिलता है :

बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ।।
प्रेम पदारथु पाईए गुर भगती मन धीरि ।। 2—

परमात्मा से मिलने का साधन केवल गुरु भक्ति है —

हरि सचा गुर भगति पाईए सहजे मंनि वसाचणिआ।। 3—

* * *

बिनु सतिगुरु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु।।
जन नानक नामु आराधिआ गुर कै हेति पिआरि।। 4—

* * *

विणु प्रीति भगति न होवई, विणु सतिगुर न लगै पिआरु।। 5—

* * *

एहा भगति जनु जीवत मरे ।। गुरु परसादी भवजलु तेरे । 6—

1:—आदि ग्रंथ, सिरी रागु, महल्ला—3, पृ. 66
2:— आदि ग्रंथ, आसा, महल्ला—3, पृ. 429
3:— वही, माझ, महल्ला—3, पृ. 116
4:— आदि ग्रंथ, सलोक, महल्ला—3, पृ. 1417
5:— वही, पृ. 1286
6:— वही, आसा, महल्ला—6, पृ. 364

हरि के रुप सत्गुरु के पास भक्ति का लहराता सागर है , जिस गुरमुख पर वह प्रसन्न हो जाये उस पर वह प्रकट कर देता है :

सागर भगति भंडार हरि पूरे सतिगुरु पासि।।
सतिगुरु तुठा खोलि दई मुखि गुरुमुखि हरि परगासि।। 1–

भक्ति की संपत्ति केवल गुरु सेवा से ही प्राप्त हो सकती है –

अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझे बाहरि पूअर तापै।
गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ।। 2–

गुरु रविदास भी गुरु भक्ति पर ही जोर देते हुये कहते हैं :

साध संगति बिना भाउ नहीं उपजै।
भाव बिनु भगति नहिं होई तेरी।। 3–

संत दादू दयाल प्रभु के सच्चे सेवक की सेवा –भक्ति करने और सदा उनकी आज्ञा में रहने पर जोर देते हैं :

सेवक साई बस किया ,सौंप्या सब परिवार।
तब साहिब सेवा करे, सेवक के दरबार।। 4–

* * *

राम जपै रुचि साध कौं, साध जपै रुचि राम।
दादू दुन्यूँ एकटग यहुँ आरंभ यहु काम।। 5–

1:– आदि ग्रंथ, माझ, महल्ला–4, पृ. 996

2:– वही, सिरी रागु, महल्ला–1, पृ. 20

3:– वही, धनासरी, रविदास, पृ. 694

4:– दादू दयाल की बानी, भाग– 1, परचा –273, बे. प्रेस इला. 1963–74

5:– वही, साखी–180

भाई रे ऐसा सदगुर कहिये , भगति मुकति फल लहिये।। 1—

अखा जी भी स्पष्ट कहते हैं कि भक्त वैराग्य की प्राप्ति गुरु मिलने से ही होती है:

ज्ञान भक्ति वैराग्य कृत्य सब है जाको अंग।
सो पद तब पाईये अखा जब सदगुरु मिल्ये सुचंग।। 2—

* * *

सदगुरु बिनु विश्वास बिन पची मरे सब लोक।
सीष्य लंपट लोभीआ ताते न मीटे सोक।। 3—

स्वामी जी महाराज जी भी गुरु भक्ति पर जोर देते हुये फरमाते हैं :

गुरु भक्ति दृढ़ के करो , पीछे और उपाय।
बिन गुरु भक्ति मोह जग ,कभी न काटा जाय।। 4—

* * *

पिरथम सीढ़ी है गुरु भक्ति । गुरु भक्ति बिन काज न रत्ती।। 5

* * *

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या इसाई क्या जैन ।
गुरु भक्ति पूरन बिना, कोई न पावै चैन।। 6—

मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि संतों की सहायता के

1:— वही, भाग—2, राग अडाना—112, पृ. 36

2:— साखियाँ, निष्ट ज्ञान को अंग, साखी—15

3:— वही, साखी—16

4:— सारवचन, 8:1, पृ. 74

5:— सारवचन, 8:1, पृ. 74

6:— वही,

बिना कोई भी उत्तम वस्तु को नहीं पा सकता है :

सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई।।
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा।।
भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलई जो संत होई अनुकूला।। 1

*   *   *

बिनु सतसंग भगति नहि होई। ते सब मिलैं द्रवै जब सोई।। 2

कबीर जी गुरु–भक्ति की कठिनाई को समझाते हुये कहते हैं :

भगति दुहेली गुरु की ,नहिं कायर को काम।
सीस उतारे हाथ से, सो लेसी हरि नाम।।
गुरु भगति दुहली राम को, जेसि खंडे की धार।
जे डोलै तो कटि पड़ै , नहीं तो उतरै पार ।। 3–

दादू– सदगुरु मिलै तो पाइये , भगति मुक्ति भंडार।
दादू सहजै देखिये, साहिब का दीदार।। 4–

अखा जी कहते हैं वही राम भक्त सच्चा है जो गुरु में विश्वास रखता है–

1:– मानस 3.15.2

2:– विनय पत्रिका, 136.10

3:– कबीर ग्रंथावली, 45–सुरा तन कौ अंग, साखी–24,25, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, गुरुदेव–57, बे. प्रेस इलाहाबाद , सन् 1963–74

राम भक्त साचा अखा पालत गुरु के बेन।
धरनी बोल परे नहीं गुरु की मानत एन।। 1—

सब धर्म पुस्तकें तथा ऋषि—मुनि, संत—महात्मा, गुरु—भक्ति पर ज़ोर देते आये हैं । इसके बगैर सभी साधन अधूरे रहते है तथा फलदायक नहीं होते।

भक्ति के प्रकार::

आचार्यो ने भक्ति के दो प्रमुख भेद माने है – 1 गौणी 2– परा। इन्हीं को विविध नाम दिये गये हैं – नवधा और दशधा , साधना भक्ति और प्रेम भाव भक्ति , मर्यादा भक्ति और पुष्टि भक्ति , मध्यमा भक्ति और उत्तमा ,भक्ति आदि।

गौणी भक्ति के पुनः दो भेद है :

1:– वैधी:– 2:– रागानुगा:–

वैधी भक्ति को मर्यादा भक्ति कहते है जो शास्त्रविदित नियमों से आबद्ध रहती है । 2–

रागानुगा भक्ति किसी प्रकार के शास्त्रविदित नियमों से आबद्ध नहीं होती है ।

निष्काम भाव से भक्त का प्रेमानन्द में निमग्न होना परा भक्ति है ।

श्रीमद् भगवत् में भक्ति के मुख्यतः दो भेद –निर्गुण एवं सगुण माने गये है । सगुण के तीन भेद किये गये है – सात्विकी, राजसी, एवं तामसी। श्रवण , कीर्तन, स्मरण , वन्दना आदि क्रिया भेद के आधार से सगुण भक्ति के नौ प्रकार से (नवधा भक्ति) विभाजित किया गया है :

1:– साखियॉं, 47, प्राप्ति अंग, साखी–8

2:– ऑस्वाल, द साइकोलोजी ऑफ सेक्स, पृ. 23

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पदसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।। 1—

नारद भक्ति सूत्र में भक्ति का विस्तार ग्यारह सूत्रों मे किया गया है :—
गुणमात्म्यासक्ति रुपः सक्ति पूजासक्ति स्मरणासक्ति
दास्यासक्ति सख्यासक्ति कान्तासक्ति
वात्सल्यासखत्यात्मनिवेदनासक्ति तन्मयतासक्ति
परम विरहासक्तिरुपा एकधाप्येकादशधा भवति ।। 2—

कबीर दादू आदि संतों की रचनाओं में भी भक्ति के प्रकार देखने को मिलते है :

1:— श्रवणः— सबसे पहले भगवान के बारे में सुनना तथा उनका खयाल अपने अंदर बसाना है । भगवन्त को हमने कभी देखा नही, अतएव सबसे पहली भक्ति सुनना है —

कबीर— ज्यूं ज्यूं हरि गुण सांभलूं,त्यूं त्यूं लागे तीर।
सांठी सांठी झड़ि पड़ी , मलका रह्या सरीर ।। 3—

* * *

ज्यूं ज्यूं हरि गुण सांभलौं, त्यूं त्यूं लागै तीर।
लागें थैं भागा नहीं , साहणहार कबीर ।। 4—

1:— श्रीमद् भगवद्, 7/5/23

2:— नारद भक्ति सूत्र, 82

3:— कबीर ग्रंथावली, सबद—6, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्रचारिणी सभा

4:— वही, साखी—7

दादू—　　　　साचा सबद कबीर का , मीठा लागै मोहिं ।
दादू सुनताँ परम् सुख केता आनन्द होइ ।। 1—

2: कीर्तन::— सुनने से जब ध्यान अंदर स्थिर होने लगे तो भक्त फिर भगवान के गुणगान गायेगा क्योंकि जैसा भाव किसी के अंदर प्रबल होगा ,वैसा ही बाहर प्रकट होगा कबीर ,दादू ,अखा आदि संत उपदेश देते हैं कि दिन रात उस परमात्मा का यश गान करो:

कबीर—　　　　गुण गायें गुण नाम कहै रटै न राम विवोग।
अहनिसि हरि ध्यावै नही क्यू पावै द्रुलभ जोग ।। 2—

दादू—　　　　प्रेम कथा हरि की कहै, करै भक्ति ल्यों लाइ ।
प्रियै पियावै रस सौ जन मिलिबो आइ ।। 3—

अखा—　　　　कहे अखो हू तो कइ नव जाणुं मैं तो हरिना गुण गाया जी ।
लख चौरासी राह चुकाव्यो ने अखंड ने घेर आण्या जी ।। 4—

3::— स्मरण::— (सुमिरन) उठते— बैठते , चलते'फिरते उसी का स्मरण या चिंतन किया जाये । संतों की वाणी में सुमिरन की अपार महिमा की गई है सुमिरन द्वारा अपने आदर्श का प्रेम मन में बसता है :—

1:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, सबद—34, बे. प्रेस, इलाहाबाद, 1984
2:— कबीर ग्रंथावली, सुमिरन 28, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा
3:— दादू वाणी, मंगल दास, साधू कौ अंग, साखी—25
4:— अ. अ. वा., गुज, भजन, पृ. 27

कबीरः:— मेरा मन सुमिरै राम कूं, मेरा मन रामहिं आहि।
अब मन रामहि है रहया, सीस नवाबौं काहि।। 1—

दादू— हरि सुमिरण सौं हेत करि।
तब मन निहचल होई।। 2—

अखा— राम ही राम जपे सो हीरा मने नाम जपे नित्य सो श्याम सुंदर। 3

4— पद सेवनः:— श्रवण, कीर्तन और स्मरण करते हुए गुरु के चरण कमलों की सेवा में लगेः

कबीर— अब तोहिं जान न दैहूँ राम पियारे,
बहूत दिनन के बिछुरे हरि पाये ।
भाग बड़े घर बैठे आये ।
चरननि लागि करौं बरियाई,
प्रेम—प्रीति राखौं उरझाई। 4—

दादू— मस्तक मेरे पाँव धरि, मंदिर माहैं आव।
सइयाँ सोवै सेज पर, दादू चंपै पॉव।। 5—

1:— क. ग्रं., सुमिरन— 8, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

2:— दादू वाणी, मंगल दास, मन कौ अंग, साखी—16, पृ. 196

3:— संत प्रिया, 102

4:— कबीर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संकलित कबीर वाणी, पद—181, रा. क. प्रका., नई दिल्ली, पटना, 1987

5:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, परचा—276, बेल. प्रेस इलाहाबाद, सन् 1984 ई.

दादू–　　साहिब सिर का ताज है , साहिब प्यंड पसण।। 1–

अखा –　　सदगुरु –चरणें जउ नमुं, कहुं जीवनमुक्ति–हुलास।। 2–

5– अर्चना::– अनेक प्रकार से पूजा करे । भाव सहित की गई सेवा और पूजा से मन निर्मल होता है । संतों की वाणी में इस पर जोर दिया गया है :

कबीर–　　धरि परमेसुर पांहुणाँ, सुणौं सनेही दास।
षट रस भोजन भगति करि , ज्यूं कदे न छाडैं पास।। 3–

दादू–　　(दादू) माहैं कीजे आरती, माहैं पूजा होइ।
माहै सतगुरु सेवियै, बूझै बिरला कोइ।। 4–

दादू भीतरि पैसि करि, घट के जड़े कपाट।
साई की सेवा करै, दादू अविगत घाट।। 5–

6–वंदना::–भक्त तन मन से सदैव वंदना करता रहे तथा सहायता और आत्मिक उन्नति के लिये बिनती करता रहे :

1:–: वही, बेसास–57

2:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–2, जीवन मुक्ति हुलास, पद–46, सं. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1988

3:– क. ग्रं., निहकर्मी पतिव्रता–18, सं. श्यामसुंदर दास, का. ना प्र. सभा

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, परचा–265, बे. प्रेस इला., 1963–74

5:–वही, परचा–256

कबीर— कबीर करत है बीनती, भौंसागर कै तांई।
बंदे ऊपरि जोर हौत है , जंम कूं बरजि गुसाँई ।। 1—

दादू:— (दादू कहै) दिन दिन नौतम भगति दे , दिन दिन नौतम नाँव।
दिन दिन नौतम नेह दे, मै बलिहारी जॉव।। 2—

* * *

दादू— साई सत संतोष दे, भाव भगति बेसास।
सिदक सबूरी साच दे ,माँगै दादू दास।। 3—

1:—कबीर ग्रंथावली, बिनती—5, सं. श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, बिनती—25, बे. प्रेस इलाहाबाद, द्वारा प्रकाशित, सन् 1984 ई,

3:— वही, साखी—26

7—दास्य—भावः— भगवन्त को स्वामी और स्वयं को सेवक मानने का भाव ।

कबीर — कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाउं।
गले राम की जेवड़ी, जित खैंचै तिउ जांउ ।। 1—

*   *   *

तो तो करै त बाहडौं, दुरि दुरि करैं तो जाउँ ।
ज्यूं हरि राखैं त्यूं रहौं, जो देवैं सो खाउँ ।। 2—

दादू— सौ धक्का सुनहाँ कौं देवैं, घर बाहरि काढै।
दादू सेवग राम का, दरबार न छाड़ै।। 3—

*   *   *

(दादू) डोरी हरि कै हाथि है, गल माहैं मेरै।
बाजीगर का बँदरा, भावै तहँ फेरै।। 4—

*   *   *

साहिब का दर छाड़ि करि, सेवक कहीं न जाइ।
दादू बैठा मूल महि, डालौ फिरै न बलाइ ।। 5—

अखा— मेरा ढोलन ढलकर आया रे, हुं दूध धोवूंगी पाया रे। 6—

8— सख्य भाव— भगवान के प्रति सखा भाव की आसक्ति में लीन रहना ।

1—कबीर ग्रन्थवली,निहकर्मी—पतिव्रता—14,सं. बाबू श्याम सुन्दर दास,काशी नागरी प्रचारणी सभा ।

2—वही, साखी 15

3—दादू दयाल की बानी, भाग 1,निहकर्मी पतिव्रता—36,बेले.प्रेस इला.,1984 ई.

4—वही, समर्थाई को अंग—17

5—वही,पृ.— 91

6—जकड़ी —10

कबीर— पाणीं ही ते पातला, धुंवा ही तैं झीण ।
पवनां बेगि उतावला, सो दोसत कबीरै कीन्ह ।। 1—

* * *

कहै कबीर यहु हेत हमारा या रब यार हमारा ।। 2—

* * *

कबीर साथी सो किया जाकै सुख दुख नही कोय ।
हिलि मिलि करि खेलस्यूँ कदै बिछोह न होय ।। 3—

दादू— मरिये मीत बिछोहे, जियरा जाइ अँदोहे ।। 4—

अखा— हद के खोजे तू नही मीता बेहद कहाँ लौ ध्यावै ।। 5—

9— **आत्म निवेदन** — प्रभु के सम्मुख विनयशील होकर उससे याचना करना।

कबीर— मेरा मुझमें कछु नहीं , जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागै है मोर ।। 6—

1:— कबीर ग्रंथावली, मन कौ अंग,—12, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा,

2:— वही, साखी—63

3:— वही, अविहड कौ अंग—1

4:— दादू दयाल की बानी भाग—2, शब्द—127, पृ. 41, बे. प्रे. इलाहाबाद द्वारा संपादित , सन् 1984 ई.

5:— अ. वा. गुज., भजन—31

6:— क. ग्रं. निहकर्मी पतिव्रता—3, सं. श्यामसुंदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा

दादू– पतिव्रता गृह आपणे , करे खसम की सेव ।
ज्यों राखे त्यों हीं रहै , आज्ञाकारी टेव ।। 1–

* * *

दादू– तन भी तेरा मन भी तेरा , तेरा पिण्ड परान ।
सब कुछ तेरा तू है मेरा, यहु दादू का ज्ञान ।। 2–

अखा– में नही, में नही, में नही, प्यारे,
तू ही है तू ही है तू ही सही। 3–

व:– मृत्यु विषयक अवधारणा :–

एक दिन हर किसी को मरना है । मौत से कोई बच नहीं सकता। संत कबीर जी जीवन की अस्थिरता को प्रकट करते हुए कहते हैं :

कबीर कहा गरबियो, काल गहे कर केस ।
नां जानौं कहं मारिहै, कै घर के परदेस ।। 4–

* * *

कबीर कहा गरबियौ, ऊँचे देखि अवास ।
काल्हि पर्‌यूं भुइं लेटणा, ऊपरि जमिहैं घास ।। 5

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, निहकर्मी पतिव्रता–37, बे. प्रे. इला. द्वारा प्रका. 1984 ई.

2:– दादू वाणी, मंगल दास, सुंदरी को अंग–20, पृ. 430

3:– संत प्रिया, पद–42

4:– कबीर ग्रंथावली, चितावनी–12, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

5:– वही, साखी–10

कबीर काल सिह्रणै यूं खड़ा , जाग पियारे म्यंत।
राम सनेही वाहिरा, तूं क्यूं सोवै नच्यंत।। 1–

*   *   *

कबीर सब जग सूता नींद भरि संत न आवै नींद ।
काल खड़ा सिर ऊपरै ज्यूं तोरणी आया बींद।। 2–

दादू जी भी कहते हैं :

दादू दास पुकारे रे , सिर काल तुम्हारे रे।
सर सॉंधे मारै रे।। 3–

*   *   *

सब तरबर छाया रे, धन जोबन माया रे।।
यहु काची काया रे।। 4–

अखा जी दूसरे शब्दों में इसी बात की पुष्टि करते हैं :

अवसर जाय छे रे मनुषा देहनो मोंघो,
आळस करीने रे शुं अज्ञानी ! ऊंघो ? 5–

जो आत्मा देह में आई है उसे एक दिन इस शरीर का त्याग करना पड़ेगा। यह सब जानते है कि एक दिन हमको जाना है , पर यह पता नही कि

1:– वही, काल को अंग–3

2:– वही, साखी–4

3:– दा. द. की बा., भाग–2, राग माली गौड़ी, –89, पृ. 29, बे. प्रे. इला. 1984

4:– वही, पद–5,

5:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–2, 51, पद–1, सं. डॉ शिवलाल जेसल पुरा स्वाती प्रेस, अहमदाबाद द्वारा प्रका. सन् 1988

कब, परंतु अवश्य जाना है । मरना सत्य जीना अनित्य (झूठ) है । मृत्यु के बाद हमारी स्थिति कैसी होगी , इसके बारे में हमने सोचा तक नहीं ।

मौत क्या है ? क्या हमको मरण काल में कोई पीड़ा होती है , इस पीड़ा के बारे में श्री मद्भागवद गीता में उल्लेख आया है कि मृत्यु के समय आत्मा के शरीर से निकलने मे इतनी पीड़ा होती है जितनी कि एक लाख बिच्छुओं के इकट्ठे डंक मारने से होती है।

कुरान शरीफ में आया है आया है कि रुह के शरीर से अलग होने में दर्द होने का वर्णन है । वहाँ कहा गया है कि उस समय इतना दर्द होता है ,जितना कि काटों वाली झाड़ी को गुदा के मार्ग से डालकर मुँह के मार्ग से खींच कर निकाला जाये ।

सहजोबाई ने भी कहा है कि मौत के समय आत्मा को बलपूर्वक शरीर से निकालते है तो एक हजार बिच्छू को इकट्ठा डंक मारने के बराबर पीड़ा होती है :

सहजो मिरतू के समय ,पीड़ा होय अपार।
बीछूं एक हजार ज्यों, डक लगै इकसार।।1–

बाबू फरीद का कथन है कि इस खिंचाव के समय जो जीव पर बीतती है , वही जानता है । हड्डियों को बुरी तरह झंझोड़ कर प्राण निकाले जाते है और जीव को अकथनीय पीड़ा सहन करनी पड़ती है :

जितु दिहाड़ै धनवरी साहे लए लिखाइ।।
मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ।।
जिंदु निमाणी कढ़िये हडा कू कड़काइ।।
साहे लिखे न चलनी जिंदू कु समझाइ।। 2–

1:– सहज प्रकाश, पृ. 26

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 1377

कबीर साहिब भी कहते हैं कि मृत्यु से लोग थर–थर काँपते हैं , परंतु नाम की साधना द्वारा अभ्यासी इस अवस्था में पहुँच चुका होता है कि मौत उसके लिये आनन्दमय लगती है :

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरै मनि आनंदु ।।
कब मारिये कब पाइये पूरनु परमानन्द ।। 1–

साधारण लोगों के हृदय में मृत्यु का भय बना रहता है , किन्तु अपनी इच्छा से जीते जी मरने वालों के लिये मृत्यु एक सहज किया बन जाती है :

जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ।।
सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ।।
अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ।।
मरि मरि जाते जिनि रामु न जानिआ ।।
मरनो मरनु कहै सभु कोई ।।
सहजै मरै अमरु होइ सोई ।।
कहु कबीर मनि भइआ अनन्दा ।।
गइआ भरयु रहिआ परमानंदा ।। 2–

दादू साहिब उपदेश करते हैं कि अन्त में तो हर किसी को मरना ही पड़ता है , परंतु ज्ञानी पुरुष जीतेजी मरने का अभ्यास करते है । आप संकेत करते है कि जो कोई भी प्रियतम के देश पहुँचा है , जीते जी मर कर पहुँचा है :

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 1365

2:– वही, पृ. 327

दादू मारग कठिन है , जीवत चलै न कोइ ।
सोइ चलिहै बापुरा, जे जीवित मिरतक होइ ।। 1–

सेंट पाल समझते हैं मृत्यु हमारा अंतिम शत्रु है , जिसका जितना आवश्यक है ।

The last enemy that shall be destroyed, is death. 2

आध्यात्मिक अभ्यास द्वारा जीते–जी मरना ही मृत्यु को जीतना और जड़ शरीर से ऊपर उठकर सच्ची रुहानी जीवन में दाखिल होना है । इसलिये आप कहते हैं कि मैं प्रतिदिन मरने का अभ्यास करता हूँ :

I dia daily. 3

मृत्यु की भयावहता का उल्लेख सभी धर्म–ग्रंथों में पाया जाता है पर हम उसको कल्पित कथाएँ समझकर जीवों को पापों से डरने के लिये या उनकी रुचि शुभ –कर्मों की ओर लगाने के लिये मानकर उनपर ध्यान नहीं देते ।

कबीर ,दादू, आदि संत फरमाते हैं कि अगर तुम मौत की भयावहता से बचना चाहते हो मौत से पहले मरो । अर्थात गुरु प्रदत्त नाम के सुमिरन द्वारा सम्पूर्ण चेतन सत्ता को समेट कर साधक आत्मा (केन्द्र) पर आ जाता है , ध्यान द्वारा वहाँ ठहरता है और धुन को पकड़ कर ऊपर के मंडलों में आ जाता है। जब शरीर चेतन से अलग हो जाता है तब जीते–जी मरना होता है । इसी को संतों ने मौत से पहले मरना कहा है । यदि मृत्यु से पहले मरना आ जाये तो

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, जीवत मृतक को अंग, साखी –22, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रका. सन् 1984 ई.

2:– 1.Corinthians 15:26

3:– 1.Corinthians 15:31

मनुष्य सदा के लिये जन्म–मरण से बच सकता है उसका मृत्यु का भय नष्ट हो जाता है , क्योंकि वह प्रतिदिन मृत्यु के द्वार लाँघ कर जाता है इसलिये संत महात्मा जीते जी मरने की महिमा करते हैं और उसकी रीति सिखाते हैं ।

कबरी साहिब कहते हैं कि बार–बार जन्म और मरने के दुःखों में घिरे संसार के लोग , जीते जी मरने का अभ्यास सीख लें तो सदा के लिय इस मुसीबत से छूट जायें और उन्हें सुख की प्राप्ति हो।

कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिया कोइ ।।
ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ।। 1–

* * *

जीवत मरहु मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ।। 2–

* * *

कबीर जीवन थैं मरिबौ भलौ, जे मरि जाणैं कोइ।
मरनैं पहले जे को मरै, तो कलि अजरावर होइ ।। 3–

कबीर साहिब फरमाते हैं कि सारा जगत मर–मर कर फिर मर रहा है , क्योंकि जो सच्ची मौत थी , वह कोई न मरा, मैं ऐसी मौत मरा हूँ कि अब फिर से मरना न होगाः

मरता मरता जग मुआ, औसर मुआ न कोइ ।
कबीरा ऐसै मरि मुवा, ज्यूं बहुरि न मरनां होइ ।। 4–

1:– आदि ग्रंथ, पृ. 1365

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 1104

3:–कबीर ग्रंथावली, जीवत मृतक को अंग–8, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

4:– वही, साखी–5

कबीर जीवत मृतक है रहै , तजै जगत को आस।
तब हरि सेवा आपण करै , मति दुख पावै दास।। 1—

*   *   *

कबीर मन मृतक भया , दुरबल भया सरीर ।
तब पैड़ै लागा हरि फिरै , कहत कबीर कबीर।। 2—

*   *   *

जीवत मृतक है रहै , तजै जगत की आस।
तब हरि सेवा आवण करै, मति दुख पावै दास।। 3—

संत दादू दयाल का भी कथन है :—

दादू पहले मर रहौ, पीछे मरे सब कोय ।। 4—

संत दादू दयाल जीवित— मृतक अवस्था का उल्लेख करते हुये कहते हैं :

तब साहिब कूँ सिजदा किया, तब सिर धर्‍या उतारि।
यौं दादू जीवित मरै, हिरस हवा कूँ मारि।। 5—

*   *   *

जीवित ही मरि जाइये, हरि माहैं मिलि जाइ।
साँई का संग छाड़ि करि, कौन सहै दुख आइ।। 6—

1:— वही, साखी—1

2:— वही, साखी—2

3:— वही, साखी—41

4:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, जीवत मृतक को अंग—4, बे. प्रेस, इलाहाबाद द्वारा प्रका. सन् 1984 ई.

5:— वही, साखी 10

6:— वही, साखी—25

जीवत मिरतक साध की , वाणी का परकास।
दादू मोहे राम जी, लीन भये सब दास।। 1–

*   *   *

(दादू) सब कौं संकट एक दिन, काल गहेगा आइ।
जीवत मिरतक है रहै, ता के निकट न जाइ।। 2–

*   *   *

जीवत माही है रहै, सांई सन्मुख होइ।
दादू पहिले मरि रहै, पीछै तौं सब कोई।। 3–

*   *   *

(दादू) जीवत मिरतक होइ कर, मारग माहैं आव।
पहिला सांसि उतारि, पीछे धरिये पाँव।। 4'

अखा जी भी इस अवस्था का वर्णन करते हुए कहते हैं :

माया मूकेश मा, तुं खा , पछे नवरो थइने सुई जा।
मरता पहिले जाने मरी, पछे जे रहेशे ते हरि।। 5–

*   *   *

पियू की बात जिसे पूछ देखूँ,
सो जीव की बात आगे करे!
ऐसा देखुं नाँहि अखा !
जो मरते पहले आप मरे। 6–

1:– वही, साखी–49
2:– वही, साखी–45
3:– वही, सुरातन–4
4:– वही, साखी–20
5:– छप्पा, सुझ अंग, छप्पा–139
6:– झूलणा, पद–16

जीते जी मरना कोई साधारण बात नहीं । कोई भी साधक अपने प्रयत्नों से मौत से पहले मरने का आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता । मौत की पूरी स्थिति का ज्ञाता सतगुरु होता है । सदगुरु मृत्यु के उसपार सूक्ष्म, कारण, और चेतन देशों का समर्थ मार्ग–दर्शक होता है। इसलिये कबीर, दादू एवं अखा की बानी में कहा गया है कि तुम किसी सच्चे गुरु के साथ मैत्री रखो और सदगुरु के साथ अपना चित्त लगाये रखो , तब तुम जन्म–मरण के मूल को ही काट लोगे और निरंतर सुख को प्राप्त करोगे। संतों ने मौत की कठिनाई और समस्या को हल कर लिया है , वे प्रतिदिन अपनी इच्छा से स्थूल को लाँघ कर सूक्ष्म मंडलों की यात्रा करते हैं । उनकी संगति में मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के साधन जुट जाते हैं ।

सेंट पोल ने कहा था" मैं रोज मरता हूँ । "1–

*　　　*　　　*

मीर दाइ कहते है ," जीने के लिये मरो। " 2–

गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि सदगरु के द्वारा बताई युक्ति के अनुसार भजन–सुमिरन, द्वारा जीते जी मरने का अभ्यास करने वाला व्यक्ति सदा के लिये जन्म–मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है :

गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ। 3–

कबीर साहिब का भी कथन है :

जिह मरनै सभु जगत तरासिया।
सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ।। 4–

1:– कोर, 15:31

2:– मिखाईल नईमी की पुस्तक, 'दि बुक ऑफ मिरदाद'

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 554

4:– वही, पृ. 327

जे कौं मरे मरन है मीठा,

गुरु प्रसादि जिंनहीं मरि दीठा।

राम रमें रमि जे मन मूवा,

कहै कबीर अबिनासी हूवा।। 1—

अखा जी भी कहते हैं :—

कहया सुने जो संत का तो जीवन मुक्ती कु पाय।

ज्युं पाला गल्य पाणी हुआ त्यु भव वेदना जाय।। 2—

दादू जी का भी कथन हैं :

तब साहिब कूँ सिजदा किया, तब सिर धर्‍या उतारि।

यौं दादू जीवत मरै , हिरसं हवा कूँ मारि।। 3—

इस प्रकार जो जीव सदगुरु कृपा से जीते जी मरकर फिर जी उठता है, वह जन्म मरण से मुक्त हो जाता है ।

1:— कबीर ग्रंथावली, राग गौड़ी, पद—46, सं. बाबू श्याम सुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

2:— साखियाँ, 40— उपदेश अंग, साखी—3

3:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, जीवत मृतक—10, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रका. सन् 1984 ई.

प:– मनुष्य जन्म की सर्वोच्चता::–

सृष्टि में चौरासी लाख योनिओं में भ्रमती और आवागमन के चक्र में पड़ी जीवात्मा किन्हीं उत्तम कार्मों के फलस्वरुप मनुष्य का जन्म प्राप्त करती है । परमात्मा की समूची सृष्टि में केवल मनुष्य में ही पाँचों तत्व पूर्ण होते है । बाकी अन्य प्रणियों में ये पाँचों तत्व पूर्ण नहीं होते । चौरासी लाख योनियों के अंनंत प्रसार में केवल मनुष्य को ही यह महिमा दी गई है कि वह जन्म मरण या आवागमन के निरंतर चक्र को तोड़कर अपनी आत्मा को इससे आज़ाद कर ले । यह रचना चौरासी लाख योनियों का एक बड़ा जेलखाना है , जिसमें बाहर निकलने का एक ही दरवाजा है । वह दरवाजा मनुष्य जन्म है । केवल मनुष्य को ही संसार रुपी जेल से छुटकारा प्राप्त करने की शक्ति दी गई है । इस दृष्टि से मनुष्य को सारी सृष्टि या रचना से ऊँचा पद प्राप्त है । परमात्मा ने ही मनुष्य जन्म को विशेष महत्व दिया है ।

मुसलतान संतों ने इसे 'अशरफ–उल–मख्लूकात' अर्थात् सृष्टि का सिरमौर कहा है । हज़रत ईसा ने इसे सृष्टि के सब प्राणियों में श्रेष्ठ कहा है । बाइबल में कहा गया है कि मनुष्य को परमात्मा के रुप पर बनाया गया है । जब हज़रत ईसा पर यह दोष लगाया गया कि वे अपने आप को ख़ुदा का बेटा कहकर प्रभु की निन्दा करते हैं तब उन्होंने याद दिलाया कि प्रत्येक मनुष्य प्रभु है :

" क्या तुम्हारे कानून में नही लिखा है कि तुम ईश्वर हो ?" 1–

हिन्दू धर्मग्रंथों में भी इसे नर–नारायणी देह कहा गया है ।

संतों की बानियों में भी मनुष्य देह को उत्तम माना गया है ।

कबीर साहिब कहते हैं :

1:– जॉन, 10:34

कबीर मानस जनमु दुर्लभु है होइ न बारैवार।
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार।। 1

वे फिर कहते हैं :

इस देही कउ सिमरहि देव। सो देही भजु हरि की सेव।। 2

*   *   *

कबीर हरि की भगति करि,तजि विषिया रस चोज।
बार बार नहीं पाइए, मनिषा जन्म की मौज।। 3—

संत दादू दयाल भी मनुष्य देह को नर—नारायणी देह कह के याद करते हैं :

बार बार यहु तन नहीं नर नारायण देह।
दादू बहुरि न पाइये, जनम अमोलिक येह।। 4—

अन्य स्थान पर वे मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता बताते हुये कहते हैं कि यह अवसर बार बार नही मिलता —

(दादू) दरिया यहु संसार है , राज नाम निज नाव।
दादू ढ़ील न कीजिये, यहु अवसर यहु डाव।। 5—

1:— आदि ग्रंथ, पृ. 1366

2:— आदि ग्रंथ, पृ. 1149

3:— कबीर ग्रंथावली, 12—चितावनी कौ अंग, साखी—35, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा

4:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, चितावनी को अंग, साखी—15, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रका. सन् 1984 ई.

5:— वही, सुमिरन को अंग, साखी—30

जपि गोविंद बिसरि जिनि जाइ। जनम सुफल करिये लै लाइ।।
हरि सुमिरण स्यूँ होत लगाइ। भजन प्रेम जस गोविंद गाइ।।
मनिषा देह मुकति का द्वारा । राम सुमिरि जग सिरजनहारा।। 1–

*   *   *

दादू काया कारवी , देखत हीं चलि जाइ।
जब लग साँस सरीर में , राम नाम ल्यौ लाइ।। 2–

अन्य संतों ने भी मानव जीवन को परमात्मा की प्राप्ति का एक मात्र दुर्लभ अवसर माना है ।

गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं :–

लख चउरासीह जोनि सबाई। माणस कउ प्रभि दीई वडिआई।
इस पउड़ी ते जे नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा।। 3–

वे फिर कहते हैं :–

मिलु जगदीस मिलन की बरिआ। चिरकाल इह देह संजरीआ। 4–

गोस्वामी तुलसीदास जी भी कहते हैं :–

बड़े भाग मानुष तन पावा , सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।। 5–

1:– वही, भाग–2, शब्द–385

2:– वही, भाग–1, काल को अंग, साखी–70

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 1075

4:– आदि ग्रंथ, पृ. 17 6

5:– मानस, 7:42:4

सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा। जो तनुं पाइ भजिअ रघुबीरा।। 1—

अखा जी ने मनुष्य जन्म को कीमती कहा हैं :—

अवसर जाय छेरे मनुषा देहनो मोंघो।
आळस करीने शुं अज्ञानी ! ऊँघो ? 2—
* * *
वारंवार मानव देह नथी , पाम्यो तो चेते धेरथी।
ज्यारे जर्जर थाशे अंग, इंद्री मूकी जाशे संग,
त्यारे अखा जपमाला ग्रहे, पण भांग्ये घडे पाणी क्यम रहे ? 3—

स्वामी जी महाराज की भी वाणी हैं :

यह तन दुर्लभ तुमने पाया। कोटि जन्म भटका जब खाया।। 4—
* * *
मिलि नर देह यह तुमको। बनाओ काज कुछ अपना।। 5—

संत रविदास जी भी कहते है :

दुर्लभ जनमु पुंन फल पाइओ, बिरथा जात अबिबेकै।
राजे इंद्र समसरि गृह आसन, बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै।। 6

1:— मानस, 7,95 (ख) 1

2:— अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—2, 51— अवसर जाय छे रे, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रका., सन् 1984 ई.

3:— छप्पा, 14—चेतना अंग, छप्पा 103

4:— सारवचन, 16:1, पृ. 127

5:— सारवचन, 15:13, पृ. 121

6:— श्री आदि ग्रंथ, पृ. 658, बाणी 126

मानव –जीवन की क्षण भंगुरता:–

यह अनमोल मानव जीवन बहुत कम समय के लिये मिलता है। इस जीवन में हमें गिने –गिनाये साँस मिलते हैं । हमारी आयु प्रतिदिन कम होती जा रही है ।

कबीर जी फरमाते हैं :–

दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै।
कालु अहेरी फिरै बाधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै।। 1

मानव जीवन की नश्वरता को देखते हुये कबीर उदास हो जाते हैं :

कबीर हाड़ जरे जीउ लाकरी केस जरे जिउ घासु।।
इहु जगु जरता देखिकै भइओ कबीर उदासु ।। 2–

*　　　*　　　*

कबीर गरबु न कीजिये देही देखि सुरंग ।।
आजु कालि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुचंग।। 3–

*　　　*　　　*

कबीर गरब न कीजिए चाम लपेटे हाड़।
हैवर ऊपर छत्र तर ते फुनि धरनी गाड़ ।। 4–

1:– आदिग्रंथ, धनासरी, कबीर जी, पृ. 691

2:– आदिग्रंथ, सालोक, कबीर जी, पृ. 1366

3:– आदि ग्रंथ, सालोक, कबीर जी, पृ. 1366

4:– वही,

कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ।
नांगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ।। 1–

*   *   *

देहरी बैठी मिहरी रोवै दुवारै लउ संग माइ ।
मरहट लगि सभु लोगु कुटंबु मिली हंसु इकेला जाइ ।। 2–

दादू दयाल जी भी कहते हैं कि इस क्षणभंगुर और चंचल मानव जीवन का अन्त तीव्र गति से निकट चला आ रहा है । हमें बिना समय खोये परमात्मा की शरण लेनी चाहिए –

दादू यहु घट काचा, जल भरया बिनसत नाही बार ।
यहु घट फूटा, जल गया, समझत नाहीं गँवार ।। 3–

*   *   *

दादू देखत ही भया, स्याम बरण थैं सेत ।
तन मन जोबन सब गया, अजहुँ न हरि सौं हेत ।। 4–

*   *   *

फूटी काया जाजरी, नव ठाहर काणी ।
तो मैं दादू क्यौं रहै, जीव सरीखा पाणी ।। 5–

*   *   *

दादू काया कारवी, देखत ही चलि जाइ ।
जब लग साँस सरीर में, राम नाम ल्यौ लाइ ।। 6–

1:– वही, पृ. 1365

2:– वही, केदारा कबीर जी, पृ.1124

3:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, काल–7, बे. प्रेस, इलाहाबाद, सन् 1984

4:– वही, काल–61,   5:– वही, काल–8

6:– वही, काल–17

बेग बटाऊ पंथ सिरि, अब बिलंब न कीजै ।
दादू बैठा क्या करै, राम जपि लीजै ।। 1—

*   *   *

दादू औसर चलि गया, बरियाँ गई बिहाइ ।
कर छिटकें कहँ पाइये, जन्म अमोलक जाइ ।। 2—

अखा जी भी कहते हैं :

काळ — करवत तोरुं आयुष कापे ;
काम ने धाम धन देखी का धसमसे ? 3—

*   *   *

झूँटी ल्ये राजानां राज, तपसीनां तप करे अकाज ।
श्रीवंत केरा धन ने हरे, पंडित नी विद्या भक्ष करें ;
जुवतीनां जौवन हरे काळ, तोहे अखा नहि जागे बाळ ।। 4—

*   *   *

ज्यम कागळ मांहेथुं जाय कपूर, त्यम शोषे ए सहुनुं नूर ।
गर्भ—गाठुआ मोहोकम जाण, सहुने पीले एके धाण ।
खोखां करी नाखे तत्काळ, अखा एहेवो करडो काळ ।। 5—

1:— वही, काल—27

2:— वही, काल—57

3: अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड—2, बारामास—8, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस , अहमदाबाद द्वारा प्रका. सन् 1988

4:— छप्पा, 46—माया अंग, छप्पा—568

5:— वही, छप्पा—569

सहित देश वैकुंठ गया राम, कुळ लेइ कृष्ण पोहोत्या निजधाम ।
तो प्राकृत जीव तणी शी बात, जो मोहोरे ठामे घाली घात ?
थयो पदारथ टाळे काळ, वळग अखा निर्गुण नी चाळ ।। 1–

हमारा जीवन प्रत्येक क्षण घटता चला जा रहा है । इसलिए तुलसीदासजी कहते हैं कि हमें सांसारिक विषयों की आशा छोड.कर इस मानव जीवन को प्रभु भजन में लगाना चाहिए, नही तो संसार को खानेवाला काल रुपी सर्प इस शरीर को खा जायेगा और यह दुर्लभ मानव जीवन व्यर्थ ही चला जायगा :

छिन–छिन छीन होत जीवन, दुरलभ तनु बृथा गँवायो ।
तुलसिदास हरि भजहि आस तजि, काल–उरग जग खायो ।। 2–

*   *   *

तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच ।
चपरि चपेटे देत नित केस गहै कर मीच ।। 3–

*   *   *

तुलसी विलम्ब न कीजिए, भजि लीजै रघुबीर ।
तन तरकस ते जात है, श्वास सरिखो तीर ।। 4–

1:– वही, छप्पा–571

2:– विनय पत्रिका–199

3:–दोहावली, 248

4:– तुलसी सतसई, द्वितीय सर्ग–10

मानव जीवन की सार्थकता :–

परमात्मा के चरणों में प्रेम लगाने और उनका भजन करने में ही मानव–जीवन की सार्थकता है । मनुष्य शरीर की वास्तविक सार्थकता प्रभु भक्ति, सतगुरु– भक्ति, नाम– भक्ति और सत्संग द्वारा अपनी लिव परमात्मा के चरण– कमलों से जोड़ने में है, ताकि मनुष्य इस दुःख सन्ताप के संसार से आजाद होकर सदा के लिए निज धाम में पहुँच जाए जो परम सुख का भंडार है । जो मनुष्य इस दुर्लभ अवसर को इन्द्रियों के भोगों,विषयों–विकारों और संसार के झूठे धन्धों में बरबाद कर देता है, वह फिर चौरासी के लम्बे चक्कर में पड़ जाता है । कबीर जी कहते हैं :

कबीर ऊजत पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ।
एकस हरि के नाम बिनु बाधे जमपुरि जांहि ।। 1–

*   *   *

कबीर गागरि जल भरी आजु काल्हि जै है फूटि ।
गुरु जु न चेतहि आपनो अधमाज लीजहिगे लूटि ।। 2–

*   *   *

वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखैं आइ ।
कहतु कबीर राम की न सिमरहुं जनमुं अकारथ जाइ ।। 3–

दादू जी कहते हैं :

दुख दरिया संसार है, सुख का सागर राम ।
सुख सागर चलि जाइये, दादू तजि बेकाम ।। 4–

1:– श्री आदि ग्रंथ, सालोक, कबीर जी, पृ. 1366

2:– श्री आदि ग्रंथ, वही, पृ. 1368

3:– वही, केदार, कबीर जी, पृ. 1124

4:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, सुमिरन–30, बे. प्रे. इला. 1984 ई.

थेहि जग जीवन सो भला, जब लग हिरदे राम ।
राम बिना जे जीवना, सो दादू बेकाम ।। 1—

*   *   *

(दादू) कर साईं की चाकरी, ये हरि नाँव न छोड़ि ।
जाणा है उस देस कौं, प्रीति पिया सौं जोड़ि ।। 2—

*   *   *

दादू पछितावा रह्या ,सके न ठाहर लाइ ।
अरथि न आया राम के , यहु तन यौंही जाइ ।। 3—

गोस्वामी तुलसी दास जी बताते हैं कि परमात्मा से विमुख रहने वाला जीव यदि ब्रह्मा के समान शरीर भी पा ले , तब भी ज्ञानी जन उसकी प्रशंसा नही करते । इसलिये यदि हम अपने मानव जीवन को सफल बनाना चाहते है , तो हमें सांसारिक विषयों से हट कर परमात्मा के भजन में लगना चाहिये :

सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा। जो तन पाइ भजिअ रघुबीरा।। 4—

*   *   *

सोइ सर्बग्य गुनी सोइ ग्याता। सोइ महि मंडित पंडित दाता।।
धर्म परायन सोइ कुल त्राता। राम चरन जा कर मन राता।। 5—

1:— वही, विरह—33

2:— वही, चितावणी—13

3:— वही बिनती—22

4:— मानस 7—95 (ख)1

5:— मानस, 7.126.1

राम विमुख लहि बिधि सम देही। कबि कोबिद प्रसंसहि तेही।। 1–

अखा जी का भी कथन हैं :

अवसप्य चेते ते नर भलो , शूरो ज्यम झूझे एकलो;
भाथी ह्यम साचा हरिजंन ,मनमां न आणे तन ने धंन;
ज्यम त्यम करी सारे निज काज , अखा जाओ के रहेजो लाज।। 2

*   *   *

हठ करीने ओळख हरि, नहि तो काचो जीव जाशे नीसरी।
ज्यम नींभाडे भाजन काचुं रहयुं , अर्थ न आव्युं , माटीथुं गयुं।
छती बुध्ये हरि न अभ्यस्यो, हवे डाह्मया हुता डेहेकाणा जशो। 3

सभी संत-महात्माओं ने मनुष्य जन्म को अन्य योनियों से उच्च कहा है । क्योंकि केवल मनुष्य जन्म में ही मुक्ति पाने की संभावना है । सदगुरु द्वारा आंतरिक मार्ग का भेद प्राप्त कर सकते है और शब्द या नाम का अभ्यास करके परमात्मा के धाम पहुँच सकते हैं ।

1:– मानस, 7.95 (ख) 2

2:– छप्पा, 14 चेतना अंग, छप्पा 214

3:– वही, 24 चानक अंग, छप्पा–214

फ –कर्म काण्ड की निरर्थकता–

परमात्मा हम सबके अंदर है उसकी प्राप्ति एकमात्र अंर्तमुखी अभ्यास द्वारा ही हो सकती है । अनेक प्रकार की धार्मिक वेशभूषा बनाना– जैसे गेरुआ वस्त्र पहनना , सिर मुंडाना, चन्दन–तिलक लगाना, माला धारण करना , भस्म लगाना आदि – केवल सांसारिक आडंबर या बाहरी प्रदर्शन मात्र हैं । इसी प्रकार सभी बहिर्मुखी धार्मिक क्रियाएँ या कर्म काण्ड जैसे नाचना–गाना, पूजा पाठ या तीर्थ–व्रत करना, दान पूण्य या अग्नि होम करना , जंगलों या पहाड़ों में भटकते फिरना , मन्दिर –मस्जिद में जाना आदि व्यर्थ और भ्रामक है । सच्चे संत इन बाहरी वेश–भूषाओं और बर्हिमुखी क्रियाओं से कोई संबंध नहीं रखते।

ध्यान पूर्वक देखा जाय तो अलग –अलग धर्मों के क्रिया काण्ड आध्यात्मिक साधनों में सहायता देने के लिये या उसकी रक्षा के लिये बनाई गई थी , न कि अंर्तमुखी आध्यात्मिक साधना और सक्रिय आध्यात्मिक उन्नति का स्थान लेने के लिये बनी थी । छिलका गुद्दे की रक्षा के लिये होता है , छिलका ही सबकुछ नही होता ।

संतों ने आलोचना के लिये कर्मकाण्ड की आलोचना नहीं की । वे केवल यह समझाना चाहते हैं कि परमात्मा के मिलाप का साधन उसके नाम का प्रेम है। प्रेम और नाम के बिना कर्मकाण्ड जीव को भावसागर से पार नही कर सकती । हर प्रकार के कर्मकाण्ड का मूल ध्येय हमारी वृत्ति को सांसारिक के स्थान पर पारमार्थिक बनाना है और हमारे अंदर संसार के संस्कारों के स्थान पर परमात्मा और उसके नाम के प्रेम के संस्कार पैदा करना है । पहाड़े और क,ख, ग उच्च शिक्षा के लिये सुंदर आधार तैयार कर सकते है परंतु यही वास्तविक पढ़ाई नहीं है । कर्माकण्ड आध्यात्मिकता का महल निर्माण करने के लिये मज़बूत नींव तैयार कर सकती है , परंतु हम महल के निर्माण का विचार

त्याग कर केवल नींव मज़बूत बनाने में संतुष्ट नहीं रह सकते । बाइबिल में सेंट पाल का उपदेश है कि धार्मिक मर्यादा या कर्मकाण्ड आरंभिक विकास और आध्यात्मिकता का शौक पैदा करने का अवश्य कर्तव्य पूरा कर सकता है परंतु किसी महापुरुष (गुरु) की कृपा से शब्द का भेद पाकर जीव सच्चे धर्म में दाखिल हो जाता है । तब वह बाहरी कर्मकाण्ड की आवश्यकताओं से मुक्त हो जाता है । 1— कुरान, शरीफ 2— में कहा गया है कि अलग— अलग ढंगों से परमात्मा की भक्ति करने वालों को ही नही , बल्कि एक परमात्मा की उपेक्षा करके अन्य को अपना इष्ट मानने वालों को भी बुरा भला नहीं कहना चाहिए ।

बाहरी वेषों का सम्बन्ध शरीर से है जो अन्त समय साथ नहीं जाता —

जिथै लेखा मंगीए तिथै देह जाति न जाइ । 3—

वास्तविक महत्ता भक्ति की है , जो चाहे एक वेष या चिन्ह धारण करके की जाये या दूसरा , कोई अन्तर नही पड़ता ।

1:— **Wherefore the law was our schoolmaster to bring us unto christ that we might be justifid by faith. But that faith is come, we are no longer under a schoolmaster**
(Galatians 3:24-25)

2:— कुर्आन शरीफ़ 22:67;6:108

3:— आदि ग्रंथ, पृ. 1346

दादू दयाल जी का कथन हैं –

(दादू) सब दिखलावै आप कूं, नाना भेष बणाइ ।
जहँ आपा मेटन हरि भजन, तेहिं दिसि कोइ न जाइ ।। 1–

*   *   *

(दादू) भेष बहुत संसार में, हरि जन बिरला कोइ ।
हरि जन राता राम सूँ, दादू एकै सोइ ।। 2–

अखा जी भी कहते हैं कि जब जगत का रस (मोह) हृदय से निकल जाता है तब ही सच्चा वैराग्य माना जाता है –

जक्तभाव हृदेथी भयो , त्यारे तांहा वैराग ज थयो ।
ज्याहां जुओ, हरि दृष्टे पडे, त्यारे भक्ति सराडे चढे ।
द्वैतभाव अखा ज्योर गयुं, ए त्रणे प्रकारे ज्ञान ज थयु ।। 3–

अतः कबीर आदि समझाते हैं कि जप–तप , पूजा–पाठ और अन्य सब बाहरमुखी कर्म इस प्रकार हैं जिस प्रकार कोई रास्ता भूला व्यक्ति उजाड़ में भटक रहा हो । सच्चे ज्ञान के बिना हम अपने ठिकाने पर नहीं पहुँच सकते और शब्द या नाम की कमाई के बिना सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता ।

कबीर जी कहते हैं कि यदि मनुष्य प्रभु मिलन के रहस्य से परिचित नहीं है तो गले में माला, माथे पर तिलक लगा देने से क्या लाभ ? जंगल में

1:– दादू दयाल की बानी, भाग 1, 14–भेष को अंग, साखी–11, बे. प्रेस , इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74 ई.

2:– वही, साखी–16

3:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–1, 40–वेष विचार अंग, साखी–451, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1986 ई,

भागने वाले पशु के गले में जिस प्रकार काठ का पाया पड़ा रहने पर भी वह भागने से बाज नहीं आता , चाहे भागने पर वह पाया कितना ही उसके पैरों में लगे, इस भॉति जीव भी यह जानते हुए कि विषयों के आनन्द में पाप पंक में फॅसना है इस ओर जाये बिना बाज नहीं आता । यदि किसी का मन संसार–स्वॉंग में बुरी तरह फँसा है तो गले में ढोंग सहित माला धारण करने का कोई लाभ नहीं । प्रेम शून्य स्थिति में प्रभु के लिए रोने से क्या , भीतर मन में तो पाप , विषय–विकार है , बाहर से शरीर को धोने से क्या लाभ ? कबीर जी कहते हैं कि भक्ति पथ में सांसारिक आनन्द नहीं, वह बड़ा धैर्य पूर्ण मार्ग है एवं वह पथ चन्दन तुल्य शीतल और चिकना है –

कहा भयो तिलक गरैं जपमाला,
मरम न जॉंनै मिलन गोपाला ।। टेक ।।
दिन प्रति पसू करै हरिहाई, गरै काठ बाकी बानिन जाई ।
स्वांग सेत करणीं मनि काली , कहा भयो गलि माला घाली ।।
बिन ही प्रेम कहा भयो रोयें, भीतर मैल बाहरि कहा धोये ।
गल गल स्वाद भगति नहीं धीर, चीकन चँदवा कहै कबीर ।। 1–

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि जप–तप , तीर्थ–व्रत एवं विभिन्न देवताओं में विश्वास सब निस्सार दृष्टिगत होता है । इसके ऊपर आश्रित व्यक्ति अन्त में उसी प्रकार निराश होता है जैसे तोता सेमर के फल के आश्रित होकर निराश होता है –

जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास ।
सूवै सैंबल सेविया , यौं जग चल्या निरास ।। 2–

1:– कबीर ग्रंथावली, राग गौड़ी, पद–136, सं. श्यामसुंदर दास, का. नागरी प्रचारिणी सभा

2:– वही, 23–भ्रम विधौसण कौ अंग, साखी–8

योगियों का आडम्बर भर कर चाहे नग्न हो जाओ या संसारी बन कर वस्त्र धारण कर लो , किन्तु जब तक हृदय स्थित परमात्मा को न पहिचानो तब तक इस सब का क्या प्रयोजन है ? अर्थात इनसे कोई लाभ नही । नंगे रहने से योग साधना पूर्ण हो जाय तो वन में जो मृग सर्वदा निर्वस्त्र रहता है , मुक्त न हो गया होता ? यदि शरीर पर केश न रखने मात्र से ही योगी हो जाते तो आये दिन मुंडने वाली भेड़ स्वर्ग की अधिकारी न बन गई होती । यदि शरीर की रक्षा करते हुये योग साधना हो जाती तो खसरो को परम् गति किस प्रकार प्राप्त होती । कबीर कहते हैं कि ज्ञान को पढ़ने से उसे अत्मसात् करके भी यदि अहंकार उत्पन्न हो गया हो तो वह नर संसार के समुद्र के अतल में डूब जाता है । राम नाम के बिना तो किसी को भी परम् पद प्राप्ति नहीं हुई –

का नागैं का बाँधे चाँम, जौं नहीं चीन्हसि आतम राम ।। टेक ।।
नाँगैं फिरैं जोग जे होई, बन का मृग मुकति गया कोई ।
मूंड मुँडाये जौं सिधि होइ, स्वर्ग ही भेड़ न पहुँची कोई ।।
व्यंद राखि जे खेलै है भाई , तौ षुसरैं केण परम गति पाई ।।
पढ़ें गुने उपजैं अहंकारा, ऊधधर डूबे बार न पारा ।।
कहैं कबीर सुनहु रे भाई , रांम नांम बिन किन सिधि –पाई ।। 1–

कबीर जी की निम्न साखियों में भी यही भाव प्रकट होता हैं ;

कर सेती माला जपै , हिरदै बहै डंडूल ।
पग तौ पाला मैं गिल्या , भाजण लागी सूल ।। 2–

1:– वही, राग गौड़ी, पद–132

2:– वही, 24–भेष कौ अंग, साखी–1

कर पकरैं अंगुरी गिनै , मन धावैं चहुँ और ।
जाहि फिरांया हरि मिलै , सो भया काठ की ठोर ।। 1–

* * *

कबीर माला मन की , और संसारी भेष ।
माला पहयाँ हरि मिलै , तौ अरहट कै गलि देष ।। 2–

* * *

सांई सेती सांच चलि, औरां सूं सुध भाइ ।
भावै लंबे केस करि , भावै घुरडि मुडाइ ।। 3–

* * *

केसों कहा बिगाड़िया, जे मूंडै सौं बार ।
मन कौ काहें न मूंडिये ज़ामै विषै बिकार ।। 4–

* * *

स्वांग पहरि सोरहा भया , खाया पीया षूंदि ।
जिहि सेरी साधू नीकले , सौ तो मल्ही मूंदि ।। 5–

* * *

किआ जपु किआ तपु किआ व्रत पूजा ।।
जा कै रिदै भाउ है दूजा ।।
जब मनु माधउ सिउ लाईए ।।
चतुराई न चतुर भुजु पाईऐ ।। 6–

1:– वही, साखी–2

2:– वही, साखी–6

3:– वही, साखी–11

4:– वही, साखी–12

5:– वही, साखी–15

6:– आदिग्रंथ, गउड़ी, कबीर जी, पृ. 324

दादू दयाल की साखियों में भी यही बात दृष्टिगोचर होती है । धार्मिकता के वाह्य प्रदर्शन , जैसे गुदड़ी या कषाय (गेरुआ) वस्त्र पहनना , माला तिलक या भस्म लगाना, केश मुंडाना या जटा बढ़ाना अथवा भिक्षा पात्र लेकर भीख माँगते चलना आदि केवल आडम्बर और पाखण्ड है । परमात्मा के सच्चे प्रेमी ऐसा कोई बाहरी दिखावा नहीं करते , क्योंकि दिखावा केवल दुनिया को दिखाने के लिये होता है । भक्तों का सम्पूर्ण अभ्यास अंर्तमुखी होता है । वे अंदर से उस नाम से जुड़े होते हैं जो एक मात्र सत्य है –

ऊपर आलम सब करै, साधू जन घट माहिं ।
दादू एता अंतरा, ता थै बनती नाहिं ।। 1–

*　　*　　*

कोरा कलस अवाह का , ऊपर चित्र अनेक ।
क्या कीजै दादू बस्त बिन, ऐसे नाना भेष ।। 2–

*　　*　　*

बाहरि दादू भेष बिन , भीतर बस्त अगाध ।
सो ले हिरदे राखिये , दादू सन्मुख साध ।। 3–

*　　*　　*

स्वाँग साध बहु अंतरा, जेता धरनि आकास ।
साधू एता राम सूँ, स्वाँग जगत की आस ।। 4–

1:– दादू दयाल की बानी, भाग–1, साच–149, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963–74

2:– वही, भेष–5

3:– वही, भेष–6

4:– वही, भेष–15

(दादू) माला तिलक सूँ कुछ नहीं , काहू सेती काम ।
अंतरि मेरे एक हैं , अहि निसि उसका नाम।। 1–

*   *   *

जोगी जंगम सेवड़े, बौध सन्यासी सेख।
षटदर्शन दादू राम बिन, सबै कपट के भेख।। 2–

*   *   *

(दादू) बाहर का सब देखिये , भींतर लख्या न जाइ ।
बाहरि दिखावा लोक का , भीतरि राम दिखाइ।। 3–

*   *   *

(दादू) सचु बिनु सांई ना मिलै भावै भेष बनाइ।
भावै करवत उरध–मुखि, भावै तीरथ जाइ।। 4–

*   *   *

(दादू) साचा हरि का नाँव है , सो ले हिरदे राखि ।
पाखंड परपंच दूरि करि , सब साधौं की साखि।। 5–

*   *   *

निरंजन जोगी जानि ले चला। सकल बियापी रहै अकेला।।
खपर न झोली डंड अधारी। मठी ना माया लेहु बिचारी।।
सींगी मुद्रा बिभूति न कंथा। जटा जाप आसण नहीं पंथा।।
तीरथ बरत न बनखंड बासा। माँगि न खाइ नहीं जग आसा।।
अमर गुरु अविनासी जोगी । दादू चेला महारस भोगी ।। 6–

1:– वही, भेष–24
2:– वही, भेष–33
3:– वही, भेष–38
4:– वही, भेष–41
5:– वही, भेष–42
6:– वही, भाग–2, शब्द–230

अखा जी भी शरीर को ही तीर्थस्थान मानते हैं –

तन तीरथ तुं आतम देव, सदा सनातन जाणे भेव ,
अड़सठनुं अधिदैवत सदा, ते जाण्ये टळे कोटि आपदा ।
वे तीरथ मज्जन कीधुं अखे, जन्ममरण नहि तेहने विखे (षे) ।। 1–

*   *   *

तिलक करता त्रेपन थयां, जपमाळानां नाकां गयां ,
तीरथ फरी फरी थाक्यां चरण, तोहे न पहोच्यो हरि ने शरण ।
कथा सुणी सुणी फूट्या कान, अखा तोहे ना' व्युं ब्रह्मज्ञान ।। 2–

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं– " हे मनुष्यों ! नाना प्रकार के कर्मकाण्ड अधर्म हैं । ये विभिन्न मतों के झगड़े हैं तथा दुःख देने वाले हैं । इन सबको त्यागो और विश्वास करके प्रभु के चरणों में प्रेम लगाओ ।"

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू ।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ।। 3–

तुलसीदास जी के अनुसार बाहरमुखी कियाओं में पड़कर हम अपने आपको भी अधिक कर्मों में उलझा लेते हैं । जब तक प्रभु के प्रति गहरा आन्तरिक प्रेम उत्पन्न नही होता, तब तक अनेकों जन्मों तक ऐसी करोडों कियाओं के करने पर भी हमारा आन्तरिक मैल दूर नही हो सकता ।

1:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–1, 39–विचार अंग, छप्पा–405, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाति प्रेस , अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित सन् 1988

2:– वही, 51–फुटकळ अंग, छप्पा–628

3:– मानस, 3.3.5

संजम, जप, तप, नेम, धरम, ब्रत, बहु भेषज़, समुदाई ।
तुलसिदास भव–रोग रामपद– प्रेम– हीन नहि जाई ।। 1–

गुरु अर्जुन देव जी भी समझाते हैं कि जीवात्मा का उद्धार एक कर्मकाण्ड को अपनाने या दूसरे को त्यागने में नहीं, बल्कि हृदय की सफाई और नाम के सिमिरन सब धर्मों को आपस में जोड़ने का मूल सूत्र है –

सगल मतांत केवल हरिनाम । 2–

*　　*　　*

सरब धरम महि स्रेसट धरमु । हरि को नामु जपि निरमलु करमु । 3–

श्री गुरु अमरदास जी ने अपने मारु राग के प्रसिद्ध शब्द 'जग जीवनु साचा एको दाता ' 4– में कर्मकाण्ड और सच्ची आध्यात्मिकता का बहुत सुन्दर ढंग से मुकाबला किया है । आप कहते हैं कि एक वे पंडित , विद्वान या आलिम– फाजिल लोग हैं, जो रात– दिन धर्मग्रन्थों के मनन पाठ और वाद– विवाद में व्यस्त रहते हैं । उनका अपना हृदय विषय– विकारों की अग्नि से जलता है, किन्तु वे दूसरे लोगों को आत्मिक शान्ति का उपदेश दे रहे होते हैं । वे यह समझने का प्रयत्न नहीं करते कि सच्ची शान्ति वेदों– शास्त्रों या ग्रन्थों के पाठ मनन में नहीं, यह तो सन्तों महात्माओं की सहायता से ध्यान को अन्दर प्रभु के नाम से जोड़ लेने से प्राप्त होती है :

1:– विनय पत्रिका, 81

2:– आदि ग्रंथ, पृ. 296

3:– आदि ग्रंथ, पृ. 266

4:– आदि ग्रंथ, पृ. 1045–46

पड़ि पंडितु अंवरा समझाए ।। घर जलतें की खबरि न पाए ।
बिन सतिगुरु सेवे नामु न पाईऐ, पड़ि थाके सांति न आई है ।। 1—

गुरु अर्जुन साहिब का भी कथन हैं कि केवल षटकर्मों, शौच, संयम और स्नान आदि करने से पारब्रह्म का रंग नहीं चढ़ता और ऐसी पूजा से जीव का कल्याण कदापि नहीं हो सकता :

खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ।
रंगु न लगी पारब्रह्म ता सरपर नरके जाइ ।। 2—
* * *
तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नहीं पूजा ।
नानक भाइ भगति निसतारा दुविधा विओपे दूजा ।। 3—
* * *
खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ।
पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ।।
निवली करम आसन चतुरासीह ,
इन महि सांति न आवै जीउ ।। 4—

कबीर साहिब जड़ पदार्थों की मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा आदि करना स्वीकार नहीं करते और उनको मुक्ति कल्याण का साधन नहीं मानते —

बुत पूजि पूजि हिंदू मुए तुरक मूए सिरु नाई ।
ओइ ले जोर ओइ ले गाड़े तेरी गति दुहू न पाई ।। 5—

1:— आदि ग्रंथ, पृ. 1049
2:— आदि ग्रंथ, सिरी रागु, महल्ला—5, पृ. —70
3:— आदि ग्रंथ, सिरी रागु, महल्ला—1, पृ.— 75
4:— आदि ग्रंथ, माझ, महल्ला—5, पृ. —98
5:— आदि ग्रंथ, सोरठि, कबीर जी, पृ. —654

देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रह्मु नहीं जाना ।
कहत कबीर अकुलु नहीं चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ।। 1—

*　　　*　　　*

पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ।
ओहि जा आपि डुबे तुम कहा वरणहारु ।। 2—

कबीर अन्य स्थान पर कहते हैं कि कैसा भ्रम है कि संसार पत्थर की मूर्ति को ईश्वर मानकर पूजता है । जो भी मनुष्य इस मूर्ति को प्रभु मानते रहे वे विनाश की काली धारा में डूब गये —

पाँहण केरा पूतला, करि पूजैं करतार ।
इही भरोसे जे रहै, ते बूड़े काली धार ।। 3—

वे आगे कहते हैं कि भला पत्थर को पूजने से क्या लाभ जो जीवनपर्यन्त (चाहे कितनी भी पूजा क्यों न की जाय) कोई उत्तर नहीं देता । अज्ञानी मनुष्य विभिन्न महत्वाकांक्षाओं के वशीभूत हो पत्थर पूजकर व्यर्थ अपना आत्मसम्मान नष्ट करता है क्योंकि वह मनुष्य होकर पत्थर के सम्मुख झुकता है अथवा वह व्यर्थ ही पत्थर पूजने में जन्म नष्ट करता है :

पाँहन कू का पूजिए , जे जनम न देई जाब ।
आँधा नर आसामुखी, यौंही खोवै आव ।। 4—

1:— आदि ग्रंथ, गउड़ी कबीर जी, पृ. 332

2:— आदि ग्रंथ, बिहागड़ा, सलोक, महल्ला—1, पृ. 556

3:— कबीर ग्रंथावली, 23—भ्रम विधौसण कौ अंग, साखी—1, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा द्वारा प्रका.

4:— वही, साखी—3

पंडितों ने अपने ढोंग से समस्त पृथ्वी पर पत्थरों की मूर्तियों को प्रस्थापित कर दिया , इस पर भी वे कहते हैं –

काजल केरी कोठड़ी , मसि के कर्म कपाट ।
पाँहनि बोई पृथमीं , पंडित पाड़ी बाट ।। 1–

* * *

सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंतकाल कउ भारी ।
राम नाम की गति नहीं जानी भै डूबै संसारी ।। 2–

* * *

जो पत्थर कउ कहते देव , ता की बिरथा होवै सेव ।
जो पत्थर की पांई पाइ , तिसु की घाल अजांई जाइ ।। 3–

* * *

कबीर साहिब उस एक मालिक की ही पूजा करते हैं –
पूजहु रामु एकु ही देवा , साचा नावणु गुरु की सेवा ।। 4–

अन्य स्थान पर कबीर साहिब कहते हैं कि शून्य के मन्दिर में जो ब्रह्मरन्ध्र रुपी देव प्रतिमा है , उसका विस्तार एक तिल के बराबर है । इनकी अर्चना के लिए बाह्य उपादानों की आवश्यकता नहीं , शरीर के भीतर ही अर्चना के लिए जल , सुमन आदि हैं और वहीं मन रुपी पुजारी है –

1:– वही, साखी–2
2:– आदि ग्रंथ , गउड़ी कबीर जी, पृ. 332
3:– आदि ग्रंथ, भैरव, कबीर जी, पृ. 1160
4:– वही, आसा, कबीर जी, पृ. 484

देवल मांहैं देहुरी , तिल जेहै बिसतार ।
मांहैं पाती मांहिं जल , मांहैं पूजणहार ।। 1—

कबीर जी सतगुरु कृपा की ओर ध्यान देते हुए कहते हैं कि जिस भाँति समस्त संसार मूर्ति पूजा कर रहा है, वैसे ही हम करते और रणक्षेत्र में रसद ढोने वाले खच्चरों के समान ही जीवन भार ढोते हुए होते , किन्तु वह तो सद्गुरु की कृपा हो गई कि उसने (ज्ञानचक्षु प्रदान कर) मूर्तियों का भार सिर से उतार दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि सदगुरु के उपदेश ने मुझे मूर्तिपूजा के अन्ध विश्वास से बचा लिया —

हम भी पाँहन पूजते , होते रन के रोझ ।
सतगुरु की कृपा भई , डारया सिर थैं बोझ ।। 2—

* * *

भूली मालिनी है गोब्यंद जागतौ जगदेव तू करै किसकी सेव ।। टेक
भूली मालिनी पाती तोड़ै , पाती पाती जीव ।
जा मूरती कौं पाती तोड़ै , सो मूरति नर जीव ।।
टांचणहारे टांचिया , दे छाती ऊपरि पाव ।
जे तू मूरति सकल है , तौ घड़णहारे कों खाव ।।
लाडू लावण लापसी , पूजा चढ़ै अपार ।
पूजि पुजारा ले गया , दे मूरति कै मुहि छार ।।
थाती ब्रह्मा पुहपे विष्णु , फूल फंल महादेव ।
तीनि देवौं एक मूरति , करैं किसकी सेव ।।

1:— कबीर ग्रंथावली, 5—परचा कौ अंग, साखी—42, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्र. सभा द्वारा प्रकाशित

2:— वही, साखी—4

एक न भूला दोइ न भूला , भूला सब संसारा ।
एक न भूला दास कबीरा , जाके राँम अधारा ।। 1—

संत दादूदयाल भी मूर्तिपूजा को धर्म का मजाक मानते हैं । वे कहते हैं :

ब्रह्मा का बेद बिस्नु की मूरति , पूजै सब संसारा ।
महादेव की सेवा लागै , कहँ है सिरजनहारा ।। 2—

*   *   *

माया का ठाकुर किया , माया की महिमाइ ।
ऐसे देव अनंत करि , सब जग पूजन जाइ ।। 3—

*   *   *

मूरति घड़ी पाषाण की , कीया सिरजनहार ।
दादू साँचं सूझै नहीं , यूँ डूबा संसार ।। 4—

*   *   *

पत्थर पीवैं धोइ करि , पत्थर पूजैं प्राण ।
अन्ति काल पत्थर भये , बहु बूड़े यहि ज्ञान ।। 5—

*   *   *

(दादू) जिन कंकर पत्थर सेविया, सो अपना मूल गंवाइ ।
अलख देव अंतरि बसै, क्या दूजी जागह जाइ ।। 6—

1:— वही, राग राम कली, पद—198

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, माया—141, बे. प्रेस, इलाहाबाद द्वारा प्रका., सन् 1963—74

3:— वही, माया—142

4:— वही, माया—152

5:— वही, साच—140

6:—वही, साच—139

पुरिष विदेस कामिणि किया , उसही के उणहारि * ।
कारज को सीझै नही , दादू माथैं मारि ।। 1 –

*   *   *

कागद का माणस किया, छत्रपति सिर मौर ।
राज पाट साधै नहीं, दादू परिहरि और ।। 2–

*   *   *

कामधेनु के पटतरे, करै काठ की गाइ ।
दादू दूध दूझै नहीं, मूरखि देहि बहाइ ।। 3–

*   *   *

पारस किया पषाण का, कंचन कदे न होइ ।
दादू आतम राम बिन, भूलि पड़या सब कोइ ।। 4–

*   *   *

मूरति घड़ी पषाण की, कीया सिरजनहार ।
दादू साच सूझै नहीं, यूँ डूबा संसार ।। 5–

दादू दयाल ईश्वर का निवास घट में ही बताते हैं –

(दादू) कोई दौड़े द्वारिका, कोई कासी जाहिं ।
कोई मथुरा को चले, साहिब घट ही माहिं ।। 6–

---

* यदि स्त्री परदेश गए हुए पुरुष के सरीखी मुरती बनाकर रखे तो उससे कोई काम निकल नहीं सकता

1:– वही, माया–153

2:– वही, माया–154

3:– वही, माया–148

4:– वही, माया–150

5:– वही, माया–152

6:– वही, साच, –147

वे अन्य स्थान पर कहते हैं कि हिन्दू देवल की पूजा करते हैं और मुसलमान मस्जिद में नमाज पढ़ते हैं लेकिन दादू जी सदा एक अलख ईश्वर की प्रीति में रहते हैं –

(दादू) हिन्दू लागै देहुरैं, मुसलमान मसीति ।
हम लागे इक अलष सौं, सदा निरंतर प्रीति ।। 1–

अन्य स्थान पर वे कहते हैं कि जिस परमात्मा की हमें खोज है, वह हम से कहीं दूर नहीं है। हम में से प्रत्येक के अन्दर है –

पूजणहार पासि है, देही माहैं देव ।
दादू ता कौं छाडि करि, बाहरि माँडी सेव ।। 2–

वे कहते हैं कि अन्तर्मुखी पूजा ही सच्ची पूजा है । परमात्मा के साक्षात्कार करने का यही एकमात्र सार्थक साधन है –

आतम माहैं राम है, पूजा ता की होइ ।
सेवा बंदन आरती, साध करैं सब कोइ ।। 3–

कबीर के समान ही दादू जी स्पष्ट कहते हैं कि काया के अन्दर ही ईश्वर है किन्तु केवल सतगुरु की कृपा से ही हम देख सकते हैं –

काया माहैं बास करि, रहै निरन्तर छाइ ।
दादू पाया आदि घर, सतगुर दिया दिखाइ ।। 4–

1:– वही, मधि–52

2:– वही, चितावनी–13

3:–वही, परचा–262

4:– वही, भाग–2, शब्द–361:44

काया माहैं कुसल है, सो हम देख आइ ।
दादू गुरुमुख पाइये, साध कहैं समझाइ ।। 1—

*   *   *

काया अगम अगाध है, माहै तूर बजाइ ।
दादू परगट पिव मिल्या, गुरमुखि रहै समाइ ।। 2—

*   *   *

सुरति अपूठी फेरि करि, आतम माहैं आण ।
लागि रहै गुरदेव सौं, दादू सोई सयाण ।। 3—

*   *   *

(दादू) यहु मसीत, यहु देहुरा, सतगुर दिया दिखाइ ।
भीतरि सेवा बंदगी, बाहरि काहे जाइ ।। 4—

*   *   *

भाई रे घर ही में घर पाया ।
सहजि समाइ रह्यौ ता माहीं, सतगुर खोज बताया ।।
ता घर काज सबै फिरि आया, आपै आप लखाया ।
खोलि कपाट महल के दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया ।।
भय औ भेद भरम सब भागा, साच सोई मन लाया ।
प्यंड परे जहाँ जिव जावै, ता में सहज समाया ।।
निहचल सदा चलै नहि कबहूँ, देख्या सब में सोई ।
ताही सूँ मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ।।

1:— वही, शब्द—363:77

2:— वही, शब्द—364:88

3:— वही, भाग—1, लय—22

4:—वही, गुरुदेव—75

आदि अन्त सोई घर पाया, दूब मन अनत न जाई ।
दादू एक रंगै रंग लागा, ता में रह्या समाई ।। 1–

अखा जी मूर्तिपूजा पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं –
एक मूरख ने एहेवी टेव, पथ्थर अेटला पूजे देव,
पाणी देखी करे स्नान, तुलसी देखी तोड़े पान ।
ए अखा वडुं उत्पात, घणा परमेश्वर ए क्याहांनी वात ? 2–

अखाजी पिंड में ही ईश्वर का निवास मानते हुए स्पष्ट कहते हैं –
पिंड शोध्य प्राणेश्वर जडे, बीजुं ते द्वैत ने रुपक चढ़े ।
प्रत्यक्ष सिद्ध सेवक बहु स्वाद, परोक्ष उमेद करै बहु वाद ।
गली चोपड़ी सघळी बात, लूखो राम अखा साक्षात । 3–
* * *
जो अखा ओलखे आतमा, तो सर्व वातनी भागे तमा ।
करे लालच लोभ जूठो प्रतिकार, सूर्यघाममां नोहे अंधकार ।
शीखी सांभळी वातो करे, पोते अग्नि क्यम टाढ़े मरै ? 4–

संतों ने ग्रन्थों शास्त्रों के वाचक ज्ञान और वाद–विवाद को कोई महत्व नहीं दिया है । केवल बाहरी पूजा पाठ में लगे रहना तथा चारों वेदों, छह शास्त्रों , नवों व्याकरणों और अठारहों पुराणों को पढ़ना या इनका बौद्धिक

1:– वही, भाग–2, शब्द–69

2:– अखान काव्यकृतिओ, खण्ड–1, 51– फुटकळ अंग, छप्पा–628, सं. डॉ शिवलाल जेसलपुरा, स्वाती प्रेस अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित, 1988 ई,

3:–वही, 48–शोधन अंग, छप्पा–581

4:– वही, –599

विवेचन करना कुकाठ को फाड़ने के समान व्यर्थ का परिश्रम है । वे कहते हैं कि जो कुछ पंडित रात दिन पढ़ने में लगे हुए हैं, उसका कोई लाभ नहीं क्योंकि वे इस पर अमल नहीं करते । उनका सारा पढ़ना–पढ़ाना केवल दिखावा, कपट या छल है । उनकी कथनी और करनी में बहुत अन्तर है ।

कबीर जी कहते हैं कि श्वेत वस्त्र धारी पण्डित पोथी पत्रों के ज्ञान का कथन ही कर रहा है, उस ज्ञान ने उसके अंतस्तल में प्रवेश नहीं किया जिससे वह स्वयं कथित मार्ग का भी अनुसरण कर सकता । यह ढोंगी , बाह्य ज्ञान से लदा पण्डित दूसरों को तो पाप से बचने का उपदेश देता रहा, किन्तु स्वयं घोर पाप करता रहा –

पंडित सेती कहि रह्या, भीतरि भेद्या नांहि ।
औरुं को परमोधतां, गया मुहरकां मांहि ।। 1–

कबीर जी पढ़ाई की व्यर्थता के बारे में कहते हैं कि यह मैं जानता हूँ कि शास्त्रादि का पढ़ना बड़ा अच्छा है, किन्तु उससे भी कहीं अच्छा योग साधना करना है । (जिसके द्वारा प्रभु में चित्त लाया जाता है ।) इसलिए हे साधक ! तू प्रभु भक्ति में प्रवृत्त हो वही काम्य है, चाहे अन्य मनुष्य कितनी ही निन्दा क्यों न करें –

मैं जांन्यूं पढ़िबौ भलौ, पढ़िवा थै भलौ जोग ।
राम नांम सूं प्रीति करि, भल भल नींदौ लोग ।। 2–

अन्य साखी में वे कहते हैं कि हे साधक ! तू पढ़ना छोड़कर इस

1:– कबीर ग्रंथावली, 17–चाणक कौ अंग, साखी–13, सं. बाबू श्यामसुंदर दास, का. ना. प्रे. सभा

2:– वही, 19–कथनी

शास्त्रादि के ढेर को जल में बहा दे । तू इन समस्त ग्रन्थों का सार केवल दो अक्षर 'रा' और 'म' समझकर प्रभु भक्ति में ही अपना हृदय लगा –

कबीर पढ़िवा दूरि करि, पुस्तक देह बहाइ ।
बावन आंथर सोधि करि, ररै ममैं चित लाइ ।। 1–

*　　　*　　　*

कबीर पढ़िवा दूरि करि, आथि पढ्या संसार ।
पढ़ि न उपजी प्रीति सूं, तौ क्यूं करि करै पुकार ।। 2–

*　　　*　　　*

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ ।
एकै आषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ ।। 3–

गुरु नानक साहिब ने भी पुस्तकीय ज्ञान और वाद–विवाद को निरर्थक समझा । वे कहते हैं कि जो कुछ पंडित रात दिन पढ़ने में लगे हुए हैं, उसका कोई लाभ नहीं क्योंकि वे इस पर अमल नहीं करते । उनका सारा पढ़ना–पढ़ाना केवल दिखावा, कपट या छल है। उनकी कथनी और करनी में बहुत अन्तर है –

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ।
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईये पड़ि पड़ि बड़ीअहि खात ।।
पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ।
पड़ीए जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ।।
नानक लेखै इक गल होरु हउमैं झखणा झाख ।। 4–

1:– वही, साखी–2

2:– वही, साखी–3

3:– वही, साखी–4

4:–आदि ग्रंथ, आसा, महल्ला–1, पृ. 467

लिखि लिखि पड़िआ तेता काड़िआ ।
बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ ।
बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ । सहु वे जीआ अपणा कीआ ।।
अनु न खाइआ सादु गवाइआ । बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ।।
बसत्र न पहिरै अहिनिसि कहरै ।।
मोनि विगूता किउ जागै गुर बिनु सूता ।।
पत्र उपेनाणा अपणा कीआ कमाणा ।।
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ।।
मूरखि अंधै पति गवाई । विणु नावै किछु थाई न पाई ।। 1—

दादू दयाल जी का भी कथन है कि पंडित पढ़ पढ़ कर थक गए हैं लेकिन इस संसार को पार कोई नहीं कर पाया है —

पढ़ि पढ़ि थाके पंडिता, किनहूँ न पाया पार ।
कथि कथि थाके मुनि जना, दादू नाँइ अघार ।। 2—
*　　　　*　　　　*
(दादू) सब ही वेद पुरान पढ़ि, मेटि नाँव निरधार ।
सब कुछ इनही माहि है , क्या करिये बिस्तार ।। 3—

दादू जी अन्य स्थान पर कहते हैं कि पुराण आदि के ज्ञान प्राप्ति का क्या अर्थ है ? अगर हृदय प्रेम से खाली है —

1:— आदि ग्रंथ आसा, महल्ला—1, पृ. 467

2:— दादू दयाल की बानी, भाग—1, सुमिरन —87, बे. प्रेस इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, सन् 1963—74

3:— वही सुमिरन—86

दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ ।
वेद पुरान पुस्तक पढ़ैं, प्रेम बिना क्या होइ ।। 1–

दादू जी फिर कहते हैं पढ़ने से कोई संसार'सागर पार नहीं कर सकता–

पढ़े न पावै परम गति , पढ़े न लंघै पार
पढ़े न पहुँचे प्राणियां , दादू पीड़ पुकार ।। 2–

अन्य साखी में वे कहते है कि एक ईश्वर के नाम के बिना पंडित वेद पुरान पढ़कर अपना ही सिर खाली कर रहे है :

दादू निबरे नॉव बिन , झूठा कथै गियान ।
बैठे सिर खाली करें , पंडित बेद पुरान ।। 3–

* * *

काजी कजा न जानही , कागद हाथ कतेब ।
पढ़ताँ पढ़ताँ दिन गये , भीतर नाहीं भेद ।। 4–

* * *

मसि कागद के आसरे , क्यौं छूटै संसार ।
राम बिना छूटै नही दादू भमे बिकार ।। 5–

1:– वही, विरह–119

2:– वही, साच–95

3:– वही, साच–96

4:– वही, साच–100

5:– वही, साच–101

गोस्वामी तुलसी दास जी भी स्पष्ट कहते हैं :–

कीबे कहा , पढ़िबेको कहा फलु , बूझि न बेद को भेदु बिचारैं ।
स्वारथ को परमारथ को कहा फलु , बूझि न बेद को भदु बिचारैं ।
स्वारथ को परमारथ को कलि कागद राम को नामु बिसारैं ।।
बाद–बिबाद बिसादु बढ़ाई कै , छाती पराई औ अपनी जारैं ।
चारिहु को , छहुाको , नवको, दस–आठको पाठु कुकाठु ज्यौं फिरैं ।। 1

* * *

श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अरुझाई ।। 2–

अखा जी निम्न छप्पा में यही कह रहे है :–

खरा वगुता पंडित जाणं, जेणे कर्मे तणां बांध्यां बंधाण;
भण्येगण्ये थइ बेठा पूज्य, पण अळगुं रहयुं आत्मानुं गुझय;
भेद न लह्मयो वांच्यां फांकड़ां , काळमायाए फेख्या मांकडां 3–

* * *

कविता थइ अदंकु शुं कव्युं, जो जाण्युं नहिं ब्रह्म अचव्युं ?
रागद्वेषनी पूंजी करी, कवि 'व्यापार बेठो आदरी;
तेहेमां अखा शो पाम्यो लाभ ? वागे गयो ज्यम स्त्रीनो गाभ । 4–

1:– कवितावली, उत्तर काण्ड, 104

2:– मानस, 7.116 (ख) 3

3:– अखानी काव्यकृतिओ, खण्ड–1, 23–जीव ईश्वर अंग, छप्पा–179, सं. डॉ. शिवलाल जेसलपुरा, स्वाति प्रेस, अहमदाबाद द्वारा प्रका. सन् 1988 ई.

4:– वही, 21–प्रपंच अंग, छप्पा–166